हिंदी–छत्तीसगढ़ी एवं संस्कृत

कक्षा – 4

सत्र 2019–20

DIKSHA एप कैसे डाउनलोड करें?

विकल्प 1 : अपने मोबाइल ब्राउज़र पर diksha.gov.in/app टाइप करें।

विकल्प 2 : Google Play Store में DIKSHA NCTE ढूंढ़े एवं डाउनलोड बटन पर tap करें।

DIKSHA

मोबाइल पर QR कोड का उपयोग कर डिजिटल विषय वस्तु कैसे प्राप्त करें ?

DIKSHA App को लॉच करे → App की समस्त अनुमति को स्वीकार करें → उपयोगकर्ता Profile का चयन करें।

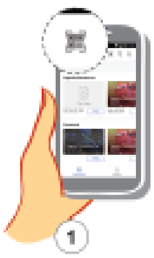

1 पाठ्यपुस्तक में QR Code को Scan करने के लिए मोबाइल में QR Code tap करें।

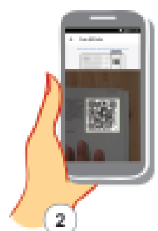

2 मोबाईल को QR Code पर केन्द्रित करें।

3 सफल Scan के पश्चात् QR Code से लिंक की गई सूची उपलब्ध होगी।

डेस्कटॉप पर QR Code का उपयोग कर डिजिटल विषय–वस्तु तक कैसे पहुँचे ?

1 QR Code के नीचे 6 अंक का Alpha Numeric Code दिया गया है।

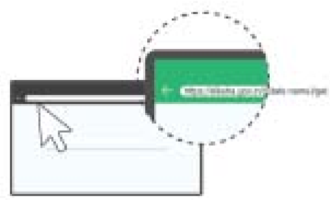

2 ब्राउज़र में diksha. gov.in/cg टाईप करें।

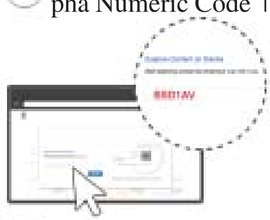

3 सर्च बार पर 6 डिजिट का QR CODE टाईप करें।

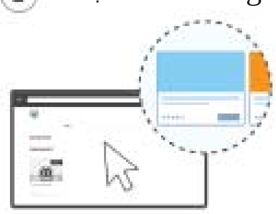

4 प्राप्त विषय–वस्तु की सूची से चाही गई विषय–वस्तु पर क्लिक करें।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

निःशुल्क वितरण हेतु

प्रकाशन वर्ष 2019

© राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

मार्गदर्शन एवं सहयोग

डॉ. हृदयकांत दीवान, विद्या भवन, उदयपुर,

प्रो. रमाकान्त अग्निहोत्री (दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली)

संयोजक

डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

संपादन

डॉ.सी.एल.मिश्रा, विद्या डांगे

582HG5

मेरी अभिलाषा है– द्वारिका प्रसाद महेश्वरी, दीप जले – चन्द्रदत्त 'इन्दु', कुंडलियाँ– कोदूराम दलित, चूड़ीवाला –सेफाली मल्लिक, अमीर खुसरो की पहेलियाँ – अमीर खुसरो,किताबें – श्री सफदर हाशमी, शेष पाठ लेखक मण्डल द्वारा संकलित या लिखित हैं।

लेखक मण्डल

हिंदी	छत्तीसगढ़ी	संस्कृत
डॉ. सी.एल.मिश्र, बी. आर. साहू, डॉ. एस.एस. त्रिपाठी, डॉ. बृजमोहन इष्टवाल, गजानन्द प्रसाद देवांगन, राजेन्द्र पाण्डेय, श्रीमती सीमा अग्रवाल, विनय शरण सिंह, दिनेश गौतम, श्री धीरेन्द्र कुमार, डॉ.(श्रीमती) रचना अजमेरा, श्रीमती उषा पवार, शोभा शंकर नागदा।	डॉ. जीवन यदु, डॉ. पी.सी. लाल यादव, विनय शरण सिंह, डॉ, माघीलाल यादव टी. के. साहू,	डॉ. सुरेश शर्मा, बी.पी. तिवारी, (समन्वयक) डॉ. कल्पना द्विवेदी, ललित कुमार शर्मा, डॉ. संध्यारानी शुक्ला, डॉ. राजकुमार तिवारी

चित्रांकन

समीर श्रीवास्तव, प्रशांत सोनी, रानू सिंह, भूपेन

आवरण पृष्ठ एवं ले–आऊट

रेखराज चौरागड़े

प्रकाशक

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)

मुद्रक

मुद्रित पुस्तकों की संख्या – ....

प्राक्कथन

हिन्दी भाषा–शिक्षण का स्कूली शिक्षा में एक अहम स्थान है। सीखने–सिखाने की प्रक्रिया से सबद्ध सभी लोगों के लिए यह आस–पास के वृहद् जगत के संवाद का माध्यम है। कक्षा एक की ही पुस्तकों से छत्तीसगढ़ राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् का उद्देश्य बच्चों को स्वतंत्र व जिज्ञासु पाठक बनाना है। परिषद् की पुस्तकों ने यह भी रेखांकित किया है कि भाषा सीखने–सिखाने का दायित्व सिर्फ भाषा की पाठ्य–पुस्तक पर ही नहीं है, वरन् इस दिशा में और सभी विषय–विशेष तौर पर पर्यावरण अध्ययन–मदद कर सकते हैं। आस–पास उपलब्ध बच्चों के योग्य अन्य पुस्तकों की भी एक महत्वपूर्ण भूमिका है। अपने स्वाभाविक अनुभवों के बारे में सोचना, उनका गहराई से विश्लेषण करना व इन सबको दूसरों के साथ बाँटना न सिर्फ भाषायी समझ बढ़ाता है, वरन् कई और क्षमताएँ भी प्रदान करता है।

कक्षा 4 में पढ़ने वाले बच्चे अपने आस–पास के जीवन के बारे में सोचना व समझना शुरू कर देते हैं। इस समझ को पैदा करने के लिए आवश्यक शब्दावली, वाक्य–संरचना, तार्किक क्रमबद्धता का बड़ा हिस्सा भाषा की कक्षा से ही उसे मिलेगा। कहानी, कविता, निबंध, नाटक आदि साहित्य की विधाएँ तो हैं ही, साथ–साथ सोचने व समझने के तरीकों को वृहद् भी बनाती हैं। इन सभी में बच्चे को रुचि हो, यही भाषा–शिक्षण का एक प्रमुख लक्ष्य है। भाषा की कक्षा अक्सर पुस्तक में दिए सवालों के उत्तर खोजने तक ही सीमित हो जाती है। यदि भाषा–शिक्षण व साहित्य को बच्चे के विकास व समाज के साथ संबंध को गहरा करने व उसके सोचने व जीवन–दर्शन को वृहद् करने का लक्ष्य पूरा करना है तो यह आवश्यक है कि उसका पुस्तक की सामग्री के साथ सतर्क पाठक का रिश्ता बने। इसके लिए वह सामग्री पर आधारित नये प्रश्न गढ़े, अपने जीवन के आधार पर सामग्री में प्रस्तुत विचारों पर टिप्पणी करे।

सामग्री के बारे में बच्चे सोचें–विचारें, सवाल करें और अपनी राय बनाएँ, यह सब कक्षा 4 में करवाना संभव नहीं है। किन्तु यदि हमें यह स्पष्ट हो कि किस दिशा में बढ़ना है तो हमारे छोटे कदम भी ज्यादा अच्छे लाभकारी हो सकते हैं।

कक्षा 4 में हम यह भी अपेक्षा करते हैं कि बच्चे टोलियों में काम करना सीखें, एक दूसरे की मदद करें, विचारों का आदान–प्रदान करें। हमारी कोशिश है कि उन्हें एक वृहद् व जीवन्त भाषायी अनुभव मिले।

इस पुस्तक को तैयार करने में शिक्षाविदों, शिक्षकों, शिक्षक–प्रशिक्षकों तथा स्कूली शिक्षा से जुड़े साथियों का सक्रिय सहयोग एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। इसके बावजूद भी पुस्तक में सुधार करने और नया जोड़ने की संभावनाएँ तो होंगी ही।

सत्र 2017–18 में लर्निंग आउट कम्स को पूरे देश में कक्षावार, विषयवार लागू किया गया। जिसके कारण किताबों में संशोधन किया जाना आवश्यक हो गया। इस पर शिक्षकों, पालकों, शिक्षाविदों, बच्चों से पर्याप्त चर्चा की गई तथा जो सुझाव हमें प्राप्त हुए उनसे हिन्दी समीति के सदस्यों ने गंभीरता से विचार किया और पुस्तक में तदानुसार विशेषकर प्रश्नों के स्वरूप में बदलाव किया गया। यह पुस्तक राज्य के सभी शासकीय/अशासकीय विद्यालयों के लिए प्रकाशित की जा रही है।

स्कूल शिक्षा विभाग एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छ.ग. द्वारा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में दक्षता संवर्धन हेतु अतिरिक्त पाठ्य संसाधन उपलब्ध कराने की दृष्टि से Energized Text Books एक अभिनव प्रयास है, जिसे ऑन लाईन एवं ऑफ लाईन (डाउनलोड करने के उपरांत) उपयोग किया जा सकता है। ETBs का प्रमुख उद्देश्य पाठ्यवस्तु के अतिरिक्त ऑडियो–वीडियो, एनीमेशन फॉरमेट में अधिगम सामग्री, संबंधित अभ्यास, प्रश्न एवं शिक्षकों के लिए संदर्भ सामग्री प्रदान करना है।

इस पुस्तक को और बेहतर बनाने के लिए अपने अमूल्य सुझाव परिषद् को भेजें। इसी उम्मीद और शुभ कामनाओं के साथ।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

शिक्षकों के लिए

छत्तीसगढ़ राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा तैयार की गई कक्षा चार की पुस्तक तीन वर्षों के प्रायोगिक दौर से गुजरकर अब आपके सामने है। भाषा सीखने–सिखाने के बारे में सोचते समय हमने यह महत्वपूर्ण समझा है कि बच्चे अपने आस–पास की दुनिया को जानना चाहते हैं, समझना चाहते हैं। वे यह सब अपने स्वाभाविक जीवन में करते रहते हैं और अपने आसपास के बारे में कई बातें जानते हैं। उनके अनुभवों को गहरा करने व विश्लेषण करने में भाषाई क्षमताएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। कक्षा चार के स्तर पर बच्चों की भाषाई क्षमताएँ को आगे बढ़ाने हेतु यह पुस्तक एक आधार सामग्री के रूप में है। यहाँ उद्देश्य केवल यह नहीं है कि बच्चे इस पुस्तक को पढ़ें वरन् भाषा–शिक्षण के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु आवश्यक है कि बच्चे अधिकाधिक पुस्तकें पढ़ें। भाषा–शिक्षण का उद्देश्य बच्चों को सक्षम पाठक बनाने के साथ–साथ सोचने–विचारने, चिंतन करने, विचारों को विस्तारित करने, कल्पना करने तथा नई बातें सीखने के लिए तैयार करना है। यह आवश्यक है कि कक्षा 4 के विद्यार्थी सुनी हुई व पढ़ी हुई सामग्री को समझ सकें, उनकी सार्थक विवेचना करने के प्रयास कर सकें और अपने मत व विचार लिखकर समझा सकें। पुस्तक में विविधता इसलिए रखी गई है कि साहित्य पढ़ने में उनकी रुचि पैदा हो व उनमें पढ़ने की आदत का विकास हो सके।

इस पुस्तक में गतिविधियों के माध्यम से अभ्यास के अवसर दिए गए हैं। इनमें कुछ गतिविधियाँ ऐसी हैं जिनमें बच्चों को शिक्षक या अन्य किसी की मदद की भी जरूरत होगी। कुछ गतिविधियाँ ऐसी हैं जिन्हें बच्चों को एक–दूसरे की मदद करते हुए करनी हैं और कुछ गतिविधियाँ ऐसी हैं जिन्हें बच्चों को अकेले अपने आप करना है। कृपया बच्चों को आपस में विचार–विमर्श व संवाद का पर्याप्त मौका दें।

प्रत्येक पाठ के अंत में अपरिचित व कठिन शब्द तथा उनके अर्थ दिए गए हैं। बच्चों के साथ इन शब्दों के अर्थ पर बातचीत करें तथा इनका अलग–अलग संदर्भों में उपयोग करवाएँ। बच्चे जितने अधिक वाक्य व विवरण इन शब्दों का उपयोग करके लिखेंगे, उतना अच्छा है। किसी भी विधा यथा कहानी, कविता, नाटक, वर्णन, जीवनी, पत्र आदि का अध्ययन–अध्यापन व उस पर अभ्यास करने के एक से अधिक तरीके हो सकते हैं। इसी प्रकार के कुछ उदाहरण मौखिक प्रश्नों शीर्षक में दिये गए हैं।

पाठ की विषयवस्तु को समझने, उस पर चिंतन करने, कल्पना करने के लिए पाठ में बोध–प्रश्न दिए गए हैं। बोध–प्रश्न में मौखिक और लिखित दोनों प्रकार के प्रश्न दिए गए हैं। ये प्रश्न सिर्फ उदाहरण स्वरूप हैं। हर पाठ पर कई और प्रश्न बनाए जा सकते हैं। आप बच्चों को नए मौखिक प्रश्न बनाकर एक दूसरे से पूछने के लिए प्रेरित करें। लिखित प्रश्न भी कई प्रकार के हैं। कुछ तो सीधे–सीधे सूचना आधारित प्रश्न हैं, जो सीधे पाठ से खोजे जा सकते हैं; कुछ कार्य–कारण संबंधवाले प्रश्न हैं तथा कुछ कल्पना व सृजनात्मकता का विकास करनेवाले प्रश्न हैं। इन प्रश्नों के उत्तर अगर वे दें तो वे ज्यादा सीखेंगे। यह भी कोशिश करें कि प्रश्नों के उत्तर बच्चे अपनी भाषा में ही लिखें।

इसके बाद भाषा–तत्त्व एवं व्याकरण से संबंधित भी कुछ अभ्यास हैं। इस भाग में शब्दों व वाक्यों का श्रुतिलेखन भी करवाना है। वर्तनी की जाँच के लिए बच्चों को परस्पर एक–दूसरे की अभ्यास–पुस्तिका देखने को कहें, उन्हें अलग–अलग प्रकार के उत्तर समझने और शब्दों के शुद्ध व अशुद्ध रूप को पहचानने में मदद मिलेगी। यह भी अपेक्षा है कि आप बच्चों को सुन्दर लेख लिखने का अभ्यास कराएं।

रचना के अभ्यास के लिए सृजनात्मक एवं योग्यता–विस्तार शीर्षकों के अंतर्गत अभ्यास दिए गए हैं। अपेक्षा यह है कि बच्चे अपने स्तर पर कोई नया सृजन करने का प्रयास करें। इसमें अलग–अलग अभ्यास हैं जैसे कहीं बच्चों को

पूछकर, ढूँढकर, पढ़कर या सोचकर लिखना है अथवा प्रदर्शित करना है। इसमें चित्र संकलित कर एलबम बनाना, किसी पक्षी जानवर आदि का चित्र स्वयं बनाना; कविता बनाना, किसी दृश्य या घटना को देखकर उस पर अपने विचार लिखना आदि सम्मिलित हैं।

रचना और गतिविधिवाले क्रियाकलापों से बच्चों का रचनात्मक और सृजनात्मक विकास होगा। बच्चों में कला संबंधी और लेखन संबंधी जागरुकता आएगी। समय–समय पर कक्षा या बाल–सभा में वाद–विवाद आयोजित करवाना, अन्त्याक्षरी करवाना, चित्र–निर्माण करवाना, पत्र–पत्रिकाओं से सामग्री एकत्रित करवाना, ऐतिहासिक स्थलों पर भ्रमण करवाना तथा उन पर संक्षिप्त लेख लिखवाना आदि क्रियाकलापों से भी बच्चों की क्षमताओं में अभिवृद्धि होगी।

आप सबको अध्यापन करने का लम्बा अनुभव है। आपके इस लम्बे अनुभव से निःसंदेह बच्चे लाभान्वित होंगे। हमारे द्वारा सुझाए कुछ सुझावों पर आप अमल करें, तो हो सकता है कि आपकी शिक्षण–कला में इससे कुछ बढ़ोत्तरी हो। यदि ऐसा हुआ तो हम अपने प्रयास को सार्थक समझेंगे। आपके द्वारा भेजे गए सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे।

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

छत्तीसगढ़, रायपुर

विषय–सूची

क्र.	पाठ का नाम	पृ.क्र.
	हिन्दी	
1.	मेरी अभिलाषा है	1–3
2.	मैनपाट की सैर	4–8
3.	सावन आगे (छत्तीसगढ़ी)	9–12
4.	साहसी रूपा	13–17
5.	मेरा एक सवाल	18–21
6.	औद्योगिक तीर्थ – कोरबा	22–26
7.	घरौंदा	27–31
8.	कोलिहा खोलिस चश्मा दुकान (छत्तीसगढ़ी)	32–37
9.	दीप जले	38–41
10.	संत रविदास	42–47
11.	जीत खेल भावना की	48–53
12.	कूकू और भूरी	54–60
13.	अनदान के परब–छेरछेरा (छत्तीसगढ़ी)	61–64
14.	ऊर्जा की बचत	65–67
15.	चूड़ीवाला	68–72
16.	राजिम मेला (सहेली को पत्र)	73–77
17.	चल रे तुमा बाटे–बाट (छत्तीसगढ़ी)	78–81
18.	पिंजरे का जीवन	82–86
19.	हाय मेरी चारपाई	87–90
20.	अमीर खुसरो की पहेलियाँ	91–93
21.	बगरे हे चंदा अंजोर (छत्तीसगढ़ी)	94–99
22.	किताबें	100–102
23.	डॉ. जगदीश चन्द्र बोस	103–108
24.	इंसाफ	109–118
	पुनरावृत्ति के प्रश्न	119–123
	संस्कृत	124–136

4E2BK3

पाठ 1

मेरी अभिलाषा है

–श्री द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

इस कविता में एक बच्चे ने अपने मन की इच्छा प्रकट की है। वह सूरज, चाँद, तारों, जैसा चमकना चाहता है और फूलों जैसा महकना चाहता है। वह आकाश के समान निर्मल, पृथ्वी के समान सहनशील और पर्वत के समान दृढ़ बनना चाहता है।

सूरज–सा चमकूँ मैं,
चंदा–सा चमकूँ मैं,
जगमग–जगमग उज्ज्वल,
तारों–सा दमकूँ मैं,
मेरी अभिलाषा है।

फूलों–सा महकूँ मैं,
विहगों–सा चहकूँ मैं,
गुंजित–सा वन–उपवन,
कोयल–सा कुहकूँ मैं,
मेरी अभिलाषा है।

नभ से निर्मलता लूँ,
शशि से शीतलता लूँ,
धरती से सहनशक्ति,
पर्वत से दृढ़ता लूँ,
मेरी अभिलाषा है।

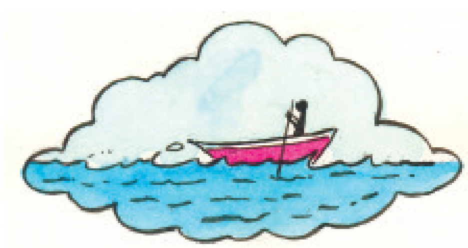

मेघों–सा मिट जाऊँ,
सागर–सा लहराऊँ,
सेवा के पथ पर मैं,
सुमनों–सा बिछ जाऊँ।
मेरी अभिलाषा है।

शिक्षण–संकेत : *कविता का सस्वर वाचन करें। दो–दो पंक्तियों का वाचन करते हुए बच्चों से उनका अनुकरण कराएँ। बाद में कविता को चार भागों में बाँटकर चार समूहों को एक–एक भाग पर चर्चा करने को प्रोत्साहित करें। प्रत्येक समूह से उस भाग का अर्थ तथा भाव स्पष्ट कराएँ। अन्त में शिक्षक कविता का अर्थ स्पष्ट करें।*

शब्दार्थ

अभिलाषा	–	इच्छा	शशि	–	चन्द्रमा
विहग	–	पक्षी	मेघ	–	बादल
उपवन	–	बगीचा	पथ	–	मार्ग
नभ	–	आकाश	सुमन	–	फूल
दमकना	–	तेज़ी से चमकना			

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1. कविता में किनके जैसे चमकने और दमकने की बात कही गई है ?

प्रश्न 2. बच्चा नभ, शशि, धरती और पर्वत से क्या–क्या लेने की अभिलाषा करता है ?

प्रश्न 3. बच्चा किसके पथ पर फूलों के जैसे बिछने की अभिलाषा करते हैं ?

प्रश्न 4. बच्चा सूरज और चंदा के समान चमकना क्यों चाहता है ?

प्रश्न 5. फूलों में क्या गुण होता है ? बच्चा फूलों से किस गुण को लेना चाहता है ?

प्रश्न 6. किस पक्षी का कौन–सा गुण बच्चा अपनाना चाहता है ?

प्रश्न 7. कविता में तुम्हें कौन–सी पंक्तियाँ अच्छी लगीं ? कारण बताते हुए उत्तर लिखो।

प्रश्न 8. ऐसे दो फूलों के नाम लिखो जिन्हे तुम जानते हो ?

प्रश्न 9. तुम दूसरों की भलाई के लिए कौन – कौन से कार्य करना पसंद करोगे ?

प्रश्न 10. तुम्हारी क्या बनने की अभिलाषा है ?

गतिविधि

बच्चो से चर्चा करें–

1 वृक्षों से हमें क्या लाभ हैं ?

2 पशु हमारे लिए कितने उपयोगी हैं ?

3 किताबों का हमारे लिए क्या उपयोग है ?

समूहों में क्या–क्या बातें हुईं? बच्चे कक्षा में समूहवार सुनाएँ।

समझो

तुम जानते हो कि एक चीज़ को कई नामों से जाना जाता है, जैसे मनुष्य को नर और मानव भी कहते हैं; पहाड़ को पर्वत और गिरि भी कहते हैं। 'नर' और 'मानव' मनुष्य शब्द के पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं। इसी प्रकार 'पर्वत' और 'गिरि' पहाड़ शब्द के पर्यायवाची शब्द हैं।

प्रश्न 1 इन शब्दों के दो–दो पर्यायवाची शब्द लिखो।

सूरज, चंदा, फूल, विहग, नभ, धरती, पर्वत, मेघ।

प्रश्न 2 नीचे बने चौखाने में कुछ शब्द और उनके विलोम शब्द दिए गए हैं। इन्हें छाँटकर अलग–अलग लिखो

धरती, शीतल, स्थिर, सहनशील, उष्ण, आकाश, अस्थिर,

रचना

- इस कविता में बालक ने ईश्वर से जो प्रार्थना की है उसे संक्षेप में लिखो।
- बच्चों से चर्चा करें कि वे बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं।
- समूह में बैठकर नीचे लिखी कविता को पढ़ो और लयपूर्वक अपने साथियों को सुनाओ–

ऐसे चमकें जैसे सूरज,
चन्दा चमचम, प्यारे, प्यारे।
ऐसे दमकें जैसे तारे
दमदम, दमदम बाँह पसारे।
ऐसे हँसें फूल से खिलखिल
बन जाएँ हमदार।

– शंकर सुल्तानपुरी

योग्यता–विस्तार

- फूलों का क्या–क्या उपयोग किया जाता है ? सोचकर अपनी कॉपी में लिखो।

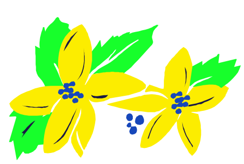

पाठ 2 मैनपाट की सैर

4ETYQ1

गर्मी आई और लोगों को सैर–सपाटा करने की सूझी। अधिकतर लोग शिमला, मसूरी, दार्जिलिंग, उटी, श्रीनगर की ओर आकर्षित होते हैं। ये ही नगर तो गर्मियों में सैर–सपाटे के लिए सबसे उत्तम माने जाते हैं। इन्हें हिल–स्टेशन कहते हैं। ये सभी नगर प्राकृतिक सुषमा से सम्पन्न हैं। वृहद् मध्यप्रदेश में भी एक हिल–स्टेशन है पचमढ़ी। हमारा राज्य भी किसी अन्य राज्य से कम नहीं है। हमारे यहाँ भी एक हिल–स्टेशन है। क्या उस स्टेशन का सैर करना चाहोगे? तो चलो, हम तुम्हें वहाँ ले चलते हैं। वह स्थल है मैनपाट। इसे ही कहते हैं छत्तीसगढ़ का शिमला, मसूरी या पचमढ़ी। आओ, हम तुमको इस नगर के एक–एक स्पाट से परिचित करा दें।

हिल–स्टेशन मैनपाट चारों ओर से प्राकृतिक सौंदर्य, जलप्रपातों से भरा–पूरा है। मैनपाट का कोना–कोना दर्शनीय है। पर्यटक यहाँ आकर अतीव सुख और शांति का अनुभव करते हैं। लोगों के शोरगुल, वाहनों की कानो को खटकने वाली ध्वनियों से मुक्त शांत वातावरण युक्त मैनपाट अम्बिकापुर से लगभग 85 किलोमीटर दूर हरी–भरी पहाड़ियों पर स्थित है। चारों ओर से घने वनों से आच्छादित यह स्थान अनेक छोटी–बड़ी नदियों से घिरा है। ये नदियाँ स्थान–स्थान पर जल प्रपात बनाकर अद्‌भुत मनोरम दृश्य उपस्थित कर देती हैं। समुद्र तल से 1100 मीटर की ऊँचाई पर 28 वर्ग किलोमीटर में आयताकार पहाड़ी पर बसे मैनपाट के आसपास अनेक दर्शनीय स्थल हैं। इनमें टाइगर प्वाइंट, मछली प्वाइंट, मेहता प्वाइंट, दरोगा दरहा जलप्रपात, देव प्रवाह अपनी प्राकृतिक सुषमा के कारण दर्शनीय हैं।

पहले हम मैनपाट के पूर्वी भाग में चलते हैं। यहीं महादेवमुड़ा नदी बहती है। यह नदी वनों के बीच 60 मीटर की ऊँचाई से गिरती हुई एक आकर्षक जलप्रपात बनाती है। इस जल–प्रपात की धारा जब नीचे कुंड में गिरती है तो शान्त वनों के बीच मधुर संगीत–सा उत्पन्न कर देती है। कभी इस प्रपात के आसपास वनराज भ्रमण किया करते थे जिनके कारण इस प्रपात को टाइगर प्वाइंट कहा जाता है। मुख्य मार्ग पर स्थित होने से यहाँ आना सुविधाजनक है। पर्यटकों के ठहरने के लिए यहाँ विश्रामगृह भी है।

अब हम तुम्हें एक अन्य स्थल पर ले चल रहे हैं। यह स्थल मैनपाट से लगभग 15 किलोमीटर दूर है। चारों ओर हरियाली–ही–हरियाली। पहाड़ों पर उतर आए बादल ऐसे लगते

शिक्षण–संकेत : *छत्तीसगढ़ राज्य के विभिन्न ऐतिहासिक, धार्मिक स्थलों के संबंध में विद्यार्थियों से जानकारी लें, पर्यटन–स्थलों के संबंध मे चर्चा करें। देश के हिल–स्टेशनों के संबंध में पूछें और बताएँ। विद्यार्थियों से पूछें कि शिमला, श्रीनगर, नैनीताल, मसूरी आदि स्थानों पर लोग क्यों जाते हैं। फिर कक्षा में बताएँ कि अपने राज्य में भी एक हिल–स्टेशन है जिसे मैनपाट कहते हैं। आज हम इसी हिल–स्टेशन के संबंध में पाठ पढ़ेंगे।*

हैं जैसे आकाश ही पहाड़ों पर उतर आया है। कभी पहले इस जलप्रपात में बड़ी–बड़ी मछलियाँ पाई जाती थीं, इसीलिए इसका नाम मछली प्वाइंट पड़ा है।

इसके सामने की पहाड़ी से एक पतली जलधारा 80 मीटर की ऊँचाई से गिरती हुई ऐसी प्रतीत होती है मानो कोई दूध की धारा पहाड़ी से गिर रही हो। इस कारण इसे मिल्की–वे अर्थात् दूधिया धारा कहते हैं।

प्रकृति के मनोरम दृश्य देखते–देखते हमारी आँखें थकती नहीं। और मैनपाट में ऐसे प्राकृतिक दृश्यों की कोई कमी नहीं। अब हम आपको एक अन्य प्वाइंट की ओर ले चलते हैं। यह प्वाइंट मैनपाट से केवल 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इसे मेहता प्वाइंट कहते हैं। यहाँ के हरेक प्वाइंट का नामकरण किसी विशेष कारण से किया गया है। सरगुजा और रायगढ़ की सीमा निर्धारित करने वाला यह प्वाइंट एक ऐसे जलक्षेत्र का निर्माण करता है जो एक सागर के समान प्रतीत होता है। वन विभाग ने यहाँ भी पर्यटकों की सुविधा के लिए विश्रामगृह की व्यवस्था कर दी है।

यों तो वनविभाग ने पर्यटकों की सुविधा के लिए अनेक दर्शनीय प्वाइंट पर पहुँचने के लिए पक्की सड़कों का निर्माण कराया है लेकिन वनक्षेत्र में सभी स्थानों में सड़क निर्माण कराना दुरूह कार्य है। ऐसे कुछ दर्शनीय स्थलों पर तो लोगों को पैदल ही जाना पड़ता है। दरोगा दरहा जलप्रपात देखनेवालों के पैर मजबूत होने चाहिए। यहाँ गहरी खाइयों में होकर जाना पड़ता है। लेकिन अपने लक्ष्य पर पहुँचकर प्रकृति का नज़ारा देखकर दस किलोमीटर पैदल चलने की सारी थकान छूमंतर हो जाती है। तुम यहाँ आराम से घंटे भर बैठकर प्रकृति की शोभा को निहार सकते हो।

मैनपाट के सभी प्राकृतिक स्थलों को एक दिन में देख पाना असंभव है। जिस स्थल पर भी तुम पहुँचोगे, वहाँ से हटने को जी नहीं चाहेगा। तबियत करेगी कि बैठे–बैठे उस मनोरम दृश्य को देखते रहें। तो फिर एक दिन में सभी स्थल कैसे देखे जा सकते हैं? इसलिए पर्यटक कम–से–कम दो दिनों का समय निकालकर यहाँ आते हैं। तुम पहले दिन इन्हीं स्थलों का भ्रमण कर सकते हो।

दूसरे दिन का भ्रमण तुम देवप्रवाह से कर सकते हो। वनक्षेत्र कमलेश्वरपुर में एक प्राकृतिक झील है जो आगे चलकर एक नाले का रूप धारण कर लेती है। यही नाला 80 मीटर की ऊँचाई से गिरता हुआ एक प्रपात बनाता है। यही देवप्रवाह प्रपात है। यहाँ आसपास का वनक्षेत्र वनौषधियों से भरा हुआ है। हमारे लिए जो साधारण वृक्ष हैं, जानकारों के लिए उनमें से कुछ वृक्ष कल्पवृक्ष भी हो सकते हैं।

मैनपाट में सूर्योदय और सूर्यास्त देखने के कई स्थल हैं। पर्यटक इन स्थानों पर पहुँचकर सूर्योदय और सूर्यास्त का भरपूर आनंद लेते हैं। जलप्रपातों के अतिरिक्त मैनपाट में अनेक प्राकृतिक गुफाएँ भी दर्शनीय हैं। इन गुफाओं के संबंध में हम तुम्हें फिर कभी बताएंगे।

मैनपाट अपनी एक और विशेषता के लिए विख्यात है। तुम जानते हो कि भारत सदा से ही शांतिप्रिय देश रहा है। हमने अपने ऊपर विदेशियों के अनेक आक्रमण झेले हैं लेकिन कभी किसी देश पर आक्रमण नहीं किया। हमारे धर्म–प्रचारकों ने देश–देश

में घूम–घूमकर शान्ति का प्रचार किया है और विश्व की कई विपत्ति में पड़ी जातियों को अपने यहाँ शरण दी है। ऐसे ही विपत्ति–ग्रस्त तिब्बती शरणार्थी जब 1962–63 के चीन–युद्ध के पश्चात् भारत आए तो भारत सरकार ने उन्हें मैनपाट में बसाया। यह स्थान जलवायु की दृष्टि से उनके लिए अनुकूल था। आज मैनपाट भारतीय और तिब्बती दो संस्कृतियों का संगमस्थल है। बौद्ध धर्म अनुयायी इन तिब्बती शरणार्थियों ने भगवान बुद्ध के एक भव्य मंदिर का निर्माण कराया है जो भवन –निर्माण–कला की दृष्टि से अनोखा है। स्वयं बौद्ध गुरु दलाईलामा ने आकर इस मंदिर का उद्घाटन किया था। तिब्बती शरणार्थी यहाँ खेती, पशु–पालन और वस्त्र–निर्माण का धंधा करते हैं। मैनपाट में तिब्बतियों द्वारा निर्मित दरी, गलीचे (कालीन) भारत के बड़े–बड़े नगरों में विक्रय के लिए भेजे जाते हैं।

प्रकृति का लाड़ला, दो संस्कृतियों का संगम–स्थल, जियो और जीने दो का उद्घोष करने वाला मैनपाट, है न अलौकिक! क्या तुम्हारा मन इसे देखने के लिए ललचाएगा नहीं? तो फिर शिमला, मसूरी, श्रीनगर और पचमढ़ी का सैर –सपाटा करने का विचार छोड़ दो और अगली गार्मियों की छुट्टियों में मैनपाट–यात्रा की योजना बना डालो।

शब्दार्थ

हिलस्टेशन	–	पहाड़ पर स्थित मनोरम पर्यटन–स्थल			
कर्णभेदी	–	कानों को भेदनेवाली, तेज आवाज			
आच्छादित	–	ढका हुआ	मनोरम	–	सुंदर
सागर	–	समुद्र	विपत्ति	–	संकट
अलौकिक	–	संसार से परे	दर्शनीय	–	देखने योग्य
वन	–	जंगल	ध्वनि	–	आवाज
अद्भुत	–	आश्चर्यजनक	सुषमा	–	शोभा, सुन्दरता
दुरूह	–	कठिन	विख्यात	–	प्रसिद्ध
अनुयायी	–	माननेवाले	शरणार्थी	–	शरण लेने वाले
पर्यटक	–	मनोरम स्थलों को देखने आने वाले लोग, घुमक्कड़			
वनौषधि	–	जंगलों से प्राप्त होनेवाली दवाई की जड़ी–बूटियाँ			
छूमंतर	–	दूर हो जाना, गायब हो जाना।			

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1. मैनपाट कहाँ बसा है ?
प्रश्न 2. मैनपाट के पूर्वी भाग में कौन –सा दर्शनीय स्थल है ?
प्रश्न 3. मेहता प्वाइंट किन–किन जिलों की सीमा निर्धारित करता है ?
प्रश्न 4. मैनपाट किन दो संस्कृतियों का संगम स्थल है ?
प्रश्न 5. मैनपाट में तिब्बतियों द्वारा निर्मित कौन–सी वस्तु दूर–दूर तक मशहूर है ?
प्रश्न 6. तुम्हारे आस–पास घूमने लायक कोई जगह अवश्य होगी। इसके बारे में लिखो।
प्रश्न 7 यदि तुम्हे घूमने जाने का मौका मिले तो तुम कहाँ जाना चाहोगे ? और क्यों ?
प्रश्न 8 नीचे लिखे वाक्यों से क्या क्या आशय है–
क. मैनपाट का कोना–कोना दर्शनीय है।
ख. यहाँ आसपास का वनक्षेत्र वनौषधियों से भरा हुआ है।

भाषातत्त्व और व्याकरण

इस पाठ में हम सीखेंगे– संयुक्त क्रिया, बारहखड़ी के अनुसार शब्दों को लिखना, कारको का प्रयोग।

- निम्नलिखित वाक्यों को पढ़ो :

जल–प्रपात अद्भुत दृश्य प्रगट करता है।
जल–प्रपात अद्भुत दृश्य प्रगट कर देता है।

पहले वाक्य में क्रिया 'करता है' लिखी गई है, दूसरे वाक्य में क्रिया 'कर देता है' लिखी गई है।

पहले वाक्य की क्रिया साधारण क्रिया है जब कि दूसरे वाक्य की क्रिया संयुक्त क्रिया है। **संयुक्त क्रिया वह होती है जो दो क्रियाओं से मिलकर बनी हो।** 'कर देती है' दो क्रियाओं 'करना' और 'देना' से मिलकर बनी है।

प्रश्न 1 क. इस पाठ से कोई दो वाक्य चुनकर लिखो जिनमें संयुक्त क्रियाओं का प्रयोग हुआ हो। उन क्रियाओं को अलग–अलग तोड़कर लिखो।
ख. समझ लेना, पहुँच जाना, भाग जाना संयुक्त क्रियाओं का प्रयोग करते हुए एक–एक वाक्य बनाओ।
ग. मूल क्रियाओं में 'पड़ना', 'लेना', 'डालना' क्रियाएँ जोड़कर संयुक्त क्रियाएँ बनाओ और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

प्रश्न 2 तुमने वर्णमाला पढ़ी है। बारहखड़ी का क्रम भी तुम जानते हो। अब इन शब्दों को बारहखड़ी के क्रम में लिखो।

मीत, मूक, मंगला, मिलना, मदन, माता, मुरली, मृग, मेला, मैल, मोहन, मौका।

समझो

- तुम पैन से लिख रहे हो।

  हमीदा सोहन के लिए किताब लाई।

  पेड़ से पत्ते गिरते हैं।

  पहले और तीसरे वाक्य में 'से' का प्रयोग हुआ है। पहले वाक्य में लिखने का साधन 'पैन' है। यहाँ 'से' साधन को बताता है।

  तीसरे वाक्य में पेड़ से पत्ते गिरते हैं। यहाँ 'से' अलग होने का भाव बताता है।

  दूसरे वाक्य में 'के लिए' सोहन एवं किताब को जोड़ रहा है। यहाँ हमीदा सोहन के लिए किताब लाने का काम कर रही है। यानि जब हम किसी दूसरे के लिए काम करते हैं तो उस काम एवं उस व्यक्ति को जोड़ने में 'के लिए' का प्रयोग करते हैं जैसे–

  पिताजी काजल के लिए साइकिल खरीदने बाजार गए हैं।

प्रश्न 3 'ने', 'पर', 'से', 'में', 'का' कारक चिन्हों से युक्त अलग–अलग वाक्य बनाओ।

प्रश्न 4 इस शब्द पहेली में मैनपाट तथा कुछ दर्शनीय स्थानों के नाम आए हैं। ऐसे 8 नाम खोजकर लिखो।

नै	नी	ता	ल	ह	टी	म
शि	प	ख	वा	उ	क	सू
म	र्	प्र	मै	श्री	प	री
ला	व	त	न	न	च	भि
दे	ब्ब	श	पा	ग	म	स्थी
ति	ला	मा	ट	र	ढ़ी	वे
टा	इ	ग	र	प्वा	इं	ट

रचना

- सूर्योदय के समय के प्राकृतिक दृश्य का वर्णन अपने शब्दों में करो।

योग्यता–विस्तार

- छत्तीसगढ़ के किसी अन्य दर्शनीय स्थल का वर्णन निम्न बिन्दुओं में करो–

4F3URN

1. स्थान का नाम–
2. कहाँ स्थित है–
3. मुख्यालय से दूरी–
4. उस स्थान तक कैसे जाया जा सकता है–
5. दर्शनीय क्षेत्र–

पाठ 3

सावन आगे

4FCQTB

बरसा के चार महीना म बारो महीना के हाँसी–खुशी ह लुकाय हे। एकरे सेती चउमास के महत्तम जादा हे। चउमास के चार महीना म सावन ह सबले सुग्घर महीना होथे। कविता म सावन के चार ठन दृश्य हे।

बादर ऊपर बादर छागे।
चल भइया, अब सावन आगे।।

अब तरसे–मन हा नइ तरसे,
रिमझिम–रिमझिम पानी बरसे,
अइसे लगथे अब किसान ला,
जइसे दाई थारी परसे।
सब किसान के सुसी बुतागे।

अलकरहा बिजली जब बरथे,
घुडुर –घुडुर तब बादर करथे,
बछरू दँउड़े पुँछी टाँगके,
मनखे ऊपर ठाड़ अभरथे,
इंदर ह जस गोली दागे।

दँउड़े लागिन माढ़े नरवा,
चूहय लागिन छानी–परवा,
कती–कती के काम ल देखे,
हवय जे मनखे ह एकसरुवा,
पल्ला मार के ढोंड़गी भागे।

बादर आँसो नइ हे लबरा,
भरगे भइया खँचवा– डबरा,
देखव डोली भरे लबालब,
भुइँया ह हरियागे जबरा,
नवा–नेवरनिन दुलहिन लागे।

बादर ऊपर बादर छागे।
चल भइया, अब सावन आगे।।

शिक्षण–संकेत : ए पाठ ल पढ़ाऐ के पहिली गुरुजी लइका मन ल चउमास के बारे म थोरकुन जानकारी देवँय। गुरुजी बरसा ऋतु के बारे म कोनो छत्तीसगढ़ी गीत कक्षा म गावँय। एकर तियारी घरे म कर लेवँय। कोनो छत्तीसगढ़ी कविता ल राग लगाके पढ़ के सुनावँय। तहाँ ले पाठ के कविता ल घलो सुर–सुराँवट ले पढ़के बतावँय। लइका मन ल घलो राग लगाके पढ़े बर प्रेरित करँय। अइसन करे ले लइका मन ल मजा आही अउ कविता झपकुन याद हो जाही।

कठिन शब्दों के हिन्दी अर्थ

ठाड़ – सीधे, अभरथे – टकराता है, माढ़े – स्थिर/रखा हुआ, नरवां – नाला, आँसो – इस वर्ष, खँचवा – छोटा गड्ढा, डबरा – बड़ा गड्ढा, डोली – खेत, सुग्घर – सुन्दर, एकसरूवा – अकेला।

प्रश्न अउ अभ्यास

कविता ल पढ़ाय के पाछू गुरुजी ह लइका मन ले कुछु मुँहअखरा प्रश्न पूछँय। लइका मन ल दू दल म बाँट के उहू मन ल कहयँ के उहू मन एक–दूसर ले प्रश्न करँय। प्रश्न मन ह अइसन हो सकत हें–

क. सावन के आगू–पाछू कोन–कोन महीना होथे ?

ख. सावन कोन ऋतु म आथे ?

ग. ये कविता कोन भाषा म लिखे गे हवय ?

घ. सावन म कोन–कोन तिहार मनाय जाथे ?

प्रश्न 1 खाल्हे लिखाय प्रश्न के उत्तर लिखव–

क. पानी के बरसना ल देख के किसान ल कइसे लगथे ?

ख. बादर म बिजली कइसे चमकथे ?

ग. बिजली चमके के पाछू बादर म कइसे अवाज होथे ?

घ. बादर के गरजना ह कवि ल कइसे लगथे ?

ङ. बछरू ह मनखे ऊपर काबर अभरथे ?

च. सावन आथे त माढ़े नरवा का करथे ?

छ. भुइँया हरिया जाथे त काकर सही दिखथे ?

ज "आँसो बादर नइ हे लबरा" – काबर केहे गे हवय ?

प्रश्न 2 खाल्हे लिखाय कविता के अर्थ लिखव–

क अलकरहा बिजली जब बरथे ,
घुडुर –घुडुर तब बादर करथे ,
बछरू दँउड़े पुछी टाँगके,
मनखे ऊपर ठाड़ अभरथे ,

ख बादर आँसो नइ हे लबरा ,
भरगे भइया खँचवा– डबरा ,
देखव डोली लगे लबालब ,
भुइँया ह हरियागे जबरा ,

प्रश्न 3 कविता ल पूरा करव–

क "अब तरसे मन ह.........................
....
....
.... परसे।"

ख "दँउड़े लागिन ....
....
....
.... ढोंड़गी भागे।"

भाषा–तत्व अउ व्याकरण

गुरुजी कविता म आय छत्तीसगढ़ी के कठिन शब्द के अर्थ लइका मन ल हिन्दी म बताँय। फेर उही शब्द के अर्थ ल लइका मन एक–दूसर ले पूछँय। गुरुजी छत्तीसगढ़ी के कठिन शब्द ल बोलके लइका मन ल तख्ता म लिखे बर कहँय। एक लइका के गलती ल दूसर लइका ले सुधरवाँय।

प्रश्न 1 इहाँ तीन जोड़ी शब्द दिये गे हे–

रिमझिम – रिमझिम, घुडुर–घुडुर, कती–कती। अइसनेच जोड़ी वाला पाँच शब्द सोचके लिखव।

प्रश्न 2 क. छत्तीसगढ़ी शब्द के हिन्दी शब्द लिखव–

सुसी, अलकरहा, कती, एकसरुवा, लबरा।

ख. उल्टा अर्थ वाले छत्तीसगढ़ी शब्द लिखव –

नवा, हरियागे, बुतागे, लबरा।

ग. "पल्ला मार के भागना" – के का अर्थ निकलथे ?

रचना

क. बरसा ऋतु के बारे म अइसन पाँच लाइन लिखव, जउन बात ह ये कविता म नइ आय हे।

ख. कविता के लाइन अपन मन से जोड़ो –

- बरसे बादर रदरद–रदरद ।

  .... ।
- भरगे भइया डोली–डाँगर।

  .... ।

योग्यता विस्तार

- खेती–किसानी के बुता करत–करत ददरिया लोक–गीत गाये जाथे। कुछ अइसे ददरिया गीत याद करव जेमा खेती–खार अउ पानी–बादर के गोठ होवय।
- खेती–किसानी के बुता ह एकसरुवा मनखे के नोहे, काबर ? अपन घर म पूछ के लिखव।
- बरसा ऋतु के बारे म दूसर कवि मन के कविता याद करके लइका मन कक्षा म सुनावँय।

4FLLUY

पाठ 4

साहसी रूपा

इस पाठ में एक शर्मीली लड़की की साहस–कथा बताई गई है जो अपनी सहपाठिन की जान बचाती है। उसने यह करतब कैसे किया, इस कहानी में पढ़ेंगे।

पाठशाला में एक नई लड़की ने प्रवेश लिया। अध्यापिका जी ने कक्षा से उसका परिचय कराया– "यह रूपा है। यह इसी कक्षा में पढ़ेगी। " फिर वे रूपा से बोलीं, "रूपा! तुम्हारी सहेलियाँ तुम्हें बता देंगी कि वे कौन–कौन–से पाठ पढ़ चुकीं हैं। कोई कठिनाई होने पर वे तुम्हारी सहायता करेंगी।"

रूपा कम बोलती थी। वह चुप ही रहती थी। उसकी सहेलियाँ उससे बात करना चाहती थीं, परन्तु वह चुप–चुप ही रहती। लड़कियों ने भी दो–तीन दिन तो उससे बात करने की कोशिश की, फिर वे अपनी–अपनी सहेलियों में मस्त हो गईं। उन्हें लगा कि रूपा किसी से बात करना पसंद नहीं करती।

एक दिन पाठशाला में पिकनिक का कार्यक्रम बना। सबने सोचा, रूपा नहीं जाएगी, परन्तु पिकनिक के दिन रूपा ही सबसे पहले विद्यालय के फाटक के पास खड़ी थी।

पिकनिक का स्थान छोटी–सी झील का किनारा था। ऊँचे–ऊँचे वृक्षों से घिरा यह स्थान पिकनिक के लिए बहुत उपयुक्त था। पहाड़ी स्थल होने के कारण ऊँची–नीची भूमि पर खिले रंग–बिरंगे फूल और लताएँ झील की शोभा और भी बढ़ा रही थीं।

लड़कियों के वहाँ पहुँचते ही उनकी हँसी और ठहाकों से वातावरण गूँजने लगा। सभी इधर–उधर दौड़कर अपने लिए अच्छे–से–अच्छा स्थान खोजने लगीं। अध्यापिका जी ने एक सुंदर जगह देखकर दरियाँ बिछवा दीं। कुछ लड़कियाँ वहीं बैठकर हँसी–मजाक करने लगीं। कुछ इधर–उधर घूमकर प्रकृति की शोभा का आनंद लेने लगीं।

शिक्षण–संकेत : *बच्चों से पिकनिक पर जाने के संबंध में चर्चा करें। उसके लिए क्या तैयारियाँ करनी चाहिए, क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए–यह पूछें पिकनिक – स्थान पर यदि कोई दुर्घटना हो जाए तो वे क्या करेंगे/करेंगी ? पाठ के एक अनुच्छेद का आदर्श वाचन करें। कक्षा को छोटे–छोटे समूहों में बाँटकर उन्हें कहानी पढ़ने के लिए दें। प्रत्येक समूह से अनुच्छेद का सार पूछें। बाद में कहानी का सारांश बताएँ। छात्र–छात्राओं के उच्चारण पर विशेष ध्यान दें।*

रूपा आज भी अकेली थी। वह अपनी सहेलियाँ से अलग घूम रही थी। वह सुंदर–सुंदर फूलों को देखती, उनकी ओर हाथ बढ़ाती, पर बढ़ा हुआ हाथ फूलों को सहलाकर पीछे आ जाता। वह फूलों की क्यारियों से होती हुई लताओं के पास जाकर बैठ गई।

रूपा मन–ही–मन उस स्थान के सौंदर्य की प्रशंसा कर रही थी। अचानक 'छपाक' की आवाज़ हुई और एक चीख गूँज गई। रूपा उठकर तेजी से आवाज़ की ओर दौड़ी। झील के एक किनारे पर उसे एक सफेद कपड़ा–सा दिखाई दिया। वह उधर ही दौड़ने लगी। पास पहुँचते ही उसे 'बचाओ ! बचाओ!' की आवाज़ सुनाई पड़ी। उसने देखा कि उसकी सहेली शांति झील में गिर गई है।

वास्तव में झील के उस स्थान पर पानी कम और कीचड़ अधिक था। एक तरह से झील का वह भाग दलदल बना हुआ था और लोग उस तरफ बहुत कम जाते थे। रूपा ने जोर–से आवाज़ लगाई, 'बचाओ–बचाओ'। उसने शांति से कहा, ''तुम धैर्यपूर्वक खड़ी रहो, अभी मैं किसी को बुला लाती हूँ,'' परंतु शांति हाथ–पाँव पटक रही थी। इससे वह कीचड़ में और भी धँसती जा रही थी। रूपा ने एक क्षण कुछ सोचा और वह अपने थैले में से फल काटने का चाकू लेकर पास की लता को जल्दी–जल्दी काटने लगी। जैसे ही लता कटी, उसने उसे जोर–से शांति की ओर फेंका और चिल्लाई,''इसे पकड़ लो, शांति ! इसे दोनों हाथों से कसकर पकड़ लो ! ''

शांति ने लता पकड़ ली और कीचड़ में पाँव मारने लगी। रूपा ने कहा,'' इसे पकड़े रहो, पाँव मत मारो। मैं तुम्हें धीरे–धीरे अपनी तरफ खींचूँगी । ''

रूपा लता को अपनी ओर खींचने लगी। उसके हाथ जगह–जगह से कट रहे थे। उसका कुर्ता भी फट गया था, परंतु उसने किसी बात की परवाह न की। शांति को बाहर लाना कोई आसान काम न था। पर रूपा ने हिम्मत नहीं हारी और धीरे–धीरे उसे खींचती रही। शांति को भी अब अपने बचने की आशा हो गई। वह धैर्य से लता को पकड़े रही और आगे–बढ़ती गई। बीच–बीच में रूपा, 'बचाओ, बचाओ' भी चिल्लाती रही।

लोगों ने 'बचाओ, बचाओ' की आवाज़ सुनी तो वे उधर दौड़े। रूपा बहुत थक चुकी थी। उसके शरीर से पसीना बह रहा था। उसका मुँह लाल हो रहा था, पर भी वह लता को खींचे जा रही थी। उसी समय अध्यापिका तथा झील का एक चौकीदार वहाँ

पहुँच गए। उन्होंने रूपा के हाथों से लता ले ली और शांति को खींचने लगे। शांति कीचड़ से निकल आई और घिसटती हुई सूखी ज़मीन पर आ पड़ी। रूपा बेहोश हो गई थी। इतने में अन्य लड़कियाँ वहाँ पहुँच गईं।

रूपा के मुँह पर पानी के छींटे मारे गए। वह होश में आ गई। शांति का शरीर कीचड़ से लथपथ था। उसे भी कई खरोंचें लगीं थीं, पर वह होश में थी। शांति सबको पूरी बात बता रही थी और सभी लड़कियाँ रूपा को प्रशंसा भरी दृष्टि से देख रही थीं।

अध्यापिका जी ने रूपा की पीठ थपथपाई। शांति ने उसको धन्यवाद देते हुए कहा, ''आज तुम न होती तो मैं अपने प्राणों से हाथ धो बैठती । हम तुम्हें अभिमानी समझती थीं, पर तुम तो सच्ची मित्र निकलीं ।''

रूपा ने शर्माते हुए कहा, '' नहीं–नहीं ऐसा नहीं है। मुझे किसी से भी बात करने में संकोच होता है।'' तभी एक लड़की बोल उठी, ''हाँ, अब हम तुम्हें अभिमानी नहीं, शर्मीली कहा करेंगी।''

सभी लड़कियाँ ठहाका मारकर हँसने लगीं और वातावरण में फिर से प्रसन्नता छा गई।

शब्दार्थ

प्रवेश लेना	–	दाखिला लेना, भर्ती होना	धैर्य	–	....
सहपाठिनें	–	साथ पढ़नेवाली लड़कियाँ	लथपथ	–	....
ठहाका	–	जोर की हँसी	संकोच	–	....
घमंडी	–	अभिमानी	दलदल	–	....
सौंदर्य	–	सुंदरता	प्रशंसा	–	तारीफ, बड़ाई

यहाँ कुछ शब्दों के अर्थ नहीं लिखे हैं। उन्हें चौखाने में से छाँटकर लिखो।

सकुचाहट, गीली कीचड़ से भरी ज़मीन,
धीरज, सना हुआ

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1. कहानी पढ़कर रूपा के बारे में अपने शब्दो में लिखो।

प्रश्न 2. रूपा को साहसी क्यों कहा गया है ?

प्रश्न 3. रूपा का बढ़ा हुआ हाथ फूलों को सहलाकर वापस पीछे क्यों आ जाता था ?

प्रश्न 4. यदि तुम रूपा के स्थान पर होते तो शांति की किस प्रकार मदद करते ?

प्रश्न 5. पिकनिक पर जाते समय हमें क्या विशेष सावधानियाँ बरतनी चाहिए ?

प्रश्न 6. तुम पिकनिक किस मौसम में जाना चाहोगे और क्यों ?

भाषातत्व और व्याकरण

- **आओ पढ़ें, समझें और लिखें।**

कुछ शब्द ऐसे होते हैं जो वाक्यांश के लिए प्रयोग किए जाते हैं – जैसे जो मांस खाता है उसे मांसाहारी कहते हैं।

प्रश्न 1 नीचे दिए वाक्यांशों के लिए एक–एक शब्द लिखो।

क. जो फल खाता हो ख. साथ पढ़नेवाली

ग. जिसको होश न रहे घ. जिसे बहुत अभिमान हो

ङ. जिसका मूल्य आँका न जा सके।

प्रश्न 2 इन शब्दों को वर्णमाला के क्रम में लिखो।

सहपाठिन, कठिनाई, उनसे, लकड़ी, पसंद, अध्यापिका, परन्तु, बचाओ, लता।

प्रश्न 3 'धैर्य,' 'ग्रह', 'राष्ट्र', 'कारण' – इन सभी शब्दों में 'र' का प्रयोग अलग–अलग रूप में किया गया है। नीचे दिए गए शब्दों में 'र' जोड़कर उनके उचित रूप लिखो।

क. गाम	ङ. आय ....
ख. सिफ	च. पथम ....
ग. किया	छ. वष ....
घ. काय	ज. टक ....

प्रश्न 4 पाठ में शब्द आया है 'दलदल'। इसमें दो वर्णों का दो–दो बार प्रयोग हुआ है। ऐसे चार शब्द (पद) लिखो जिनमें दो ही वर्णों का दो बार प्रयोग हुआ हो।

- संज्ञा शब्द के संबंध में तुम पढ़ चुके हो। व्यक्ति विशेष या स्थान विशेष का नाम बताने वाली संज्ञाओं को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं, जैसे– रमेश, शीला, ताजमहल, मुंबई आदि। किसी जाति को बतानेवाली संज्ञा को जातिवाचक संज्ञा कहते हैं, जैसे– झील, पाठशाला, लड़की आदि।

प्रश्न 6 इस पाठ में से व्यक्तिवाचक और जातिवाचक संज्ञाएँ छाँटकर लिखो।

योग्यता–विस्तार

- हमारे चेहरे के भाव बदलते रहते हैं। नीचे बने चेहरों को देखो और उनमें किस प्रकार का भाव प्रकट हो रहा है, उनके सामने लिखो।
  हँसता हुआ, गुस्से में, रोता हुआ, डर का भाव।

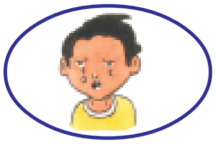

....

....

....

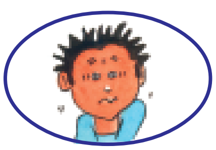

....

पाठ 5

मेरा एक सवाल

इस कविता में भारत माता अपनी उन्नति के लिए विभिन्न प्रकार के प्रश्न उठाती है। किसान, सैनिक, मजदूर, विद्यार्थी और शिक्षक उनके प्रश्नों के उत्तर देकर उन्हें आश्वस्त करते हैं।

पात्र– 1. भारत माता 2. किसान
3. सैनिक 4. मज़दूर
5. विद्यार्थी 6. शिक्षक

(एक चौपाल है। वहाँ पर कुछ लोग बैठे हैं। तभी गीत की आवाज़ उभरती है।)

चूँ–चूँ–चूँ–चूँ चिड़ियाँ चहकीं
मह–मह–मह–मह कलियाँ महकीं।
पूर्व दिशा ने लाली घोली,
भारत माँ बेटों से बोली।

(गीत की समाप्ति के साथ दरवाजा खुलता है। द्वार से भारत माता का प्रवेश।)

भारत माता – कौन करेगा मेरा आँगन,
हरा–भरा खुशहाल ?
कैसे सुलझाओगे बोलो,
मेरा एक सवाल ?

किसान – मैं खेतों में अन्न उगाकर,
कर दूँगा खुशहाल ।
माँ ! मैं हल से हल कर दूँगा,
तेरा एक सवाल।

भारत माता – कौन करेगा मेरी रक्षा,
बोलो मेरे लाल ?
कौन मुझे मज़बूत करेगा,
मेरा एक सवाल ?

शिक्षण–संकेत : *बच्चों से देश–सेवा पर चर्चा करें। उन्हें देश–सेवा का अर्थ बताएँ। अपने–अपने काम को पूरे तन–मन से करना ही देश–सेवा है। विद्यार्थी का मन लगाकर पढ़ना, शिक्षक का मन लगाकर पढ़ाना, किसान का मन लगाकर खेती करना सबसे बड़ी देश–सेवा है। पूर्ण हाव–भाव, आरोह–अवरोहपूर्वक कविता के एक अंश को पढ़िए और अनुकरण वाचन कराइए। छात्रों को छोटे–छोटे समूह में बाँटकर एक–एक पात्र का वाचन उसी हाव–भाव और आरोह–अवरोहपूर्वक करने को प्रोत्साहित करें। उसी अंश का भाव पूछें। बाद में संपूर्ण कविता के एक–एक अंश का अर्थ स्पष्ट करें और बच्चों से उस पर चर्चा करें।*

सैनिक – डटा रहूँगा मैं सीमा पर,
तेरा हूँ मैं लाल।
शत्रुदमन कर हल कर दूँगा,
तेरा एक सवाल।

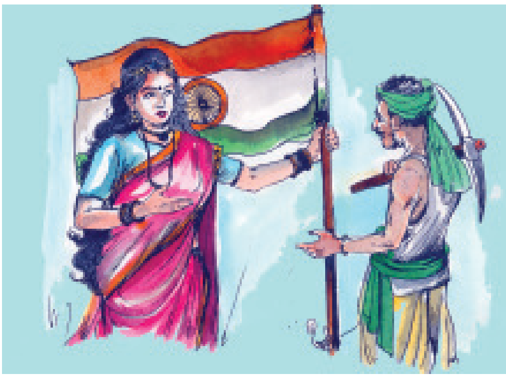

भारत माता – कौन करेगा करके मेहनत,
मुझको मालामाल ?
कौन पसीना बहा सकेगा,
मेरा एक सवाल ?
मजदूर – मैं उत्पादन बढ़ा करूँगा,
तुझको मालामाल।
करके मेहनत हल कर दूँगा,
तेरा एक सवाल।

भारत माता – कौन ज्ञान–विज्ञान सीखकर,
मेटेगा जंजाल ?
कैसे मुझे मिलेगा गौरव,
मेरा एक सवाल ?
विद्यार्थी – मैं पढ़–लिख कर्त्तव्य करूँगा,
मेटूँगा जंजाल।
ज्ञान–दीप से हल कर दूँगा,
तेरा एक सवाल।

भारत माता – कौन करेगा पढ़ा–लिखाकर,
सबको यहाँ निहाल ?
ज्ञान और विज्ञान सिखाकर,
मेरा एक सवाल ?
शिक्षक – ज्ञान और विज्ञान सिखाकर,
सत्य आचरण ढाल।
पढ़ा, लिखाकर हल कर दूँगा,
तेरा एक सवाल।

भारत माता– मिलजुलकर सब काम करोगे,
सब होंगे खुशहाल।
सच बेटो! तुम हल कर दोगे,
मेरे सभी सवाल।

सब मिलकर –हम सब मिलकर काम करेंगे,
तेरे हैं हम लाल ।
सदा करेंगे जग में ऊँचा,
माँ तेरा यह भाल ।
भारत माता की जय,
भारत माता की जय,
(पर्दा गिरता है।)

शब्दार्थ

चौपाल	–	गाँव का वह चबूतरा, जहाँ लोग शाम को बैठते हैं।			
शत्रुदमन	–	शत्रु का नाश	उत्पादन	–	पैदावार
जंजाल	–	परेशानी	आचरण	–	व्यवहार
खुशहाल	–	सुखी, सम्पन्न	मालामाल	–	धन–धान्य से पूर्ण
ज्ञानदीप	–	ज्ञान का दीपक	गौरव	–	महत्व, बड़प्पन, सम्मान, आदर

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1. भारत माता अपने किन–किन पुत्रों से बात करती है ?
प्रश्न 2. मजदूर भारत माता का गौरव किस प्रकार बढ़ाएगा ?
प्रश्न 3. भारत माता देश के नागरिकों से क्या चाहती हैं ?
प्रश्न 4. तुम भारत माता की सेवा किस रूप में करना चाहोगे ?
प्रश्न 5. यदि शिक्षक, किसान, मजदूर, विद्‌यार्थी अपना–अपना कार्य मन लगाकर करें तो देश का क्या रूप हो जाएगा ?
प्रश्न 6. कविता में कौन सा पात्र तुम्हें अच्छा लगा ? उसके बारे में अपने शब्दों में लिखो ?

भाषातत्व और व्याकरण

यहाँ हम सीखेंगे – समानोच्चारित और विलोम शब्द।

- पाठ के अंत में दिए गए शब्दों का शुद्‌ध उच्चारण करते हुए वाचन करें। पुस्तक को बन्द कर दें। एक बच्चा इन शब्दों को बोले, शेष बच्चे लिखें। फिर बच्चे परस्पर कॉपी बदलकर शब्दों की जाँच करें।

प्रश्न 1 दिए गए उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित शब्दों के समानोच्चारित तीन–तीन शब्द लिखो।

घोली, डटा, माता, सब।

उदाहरण–लाली – काली, बाली, डाली।

प्रश्न 2 'ज्ञान' के पहले 'वि' जोड़कर शब्द बना है— 'विज्ञान'। इसी प्रकार नीचे लिखे शब्दों में 'वि' जोड़कर नए शब्द बनाओ और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

नम्र, मल, कल, शेष।

प्रश्न 3 निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखो।

खुशहाल, पूर्व, मेरा, जय, ऊँचा।

प्रश्न 4 'लाली' शब्द के वर्णों को अगर हम उलटकर रखें तो शब्द बनेगा 'लीला'। यह सार्थक शब्द है। ऐसे दो—दो वर्णो के कोई चार शब्द सोचकर लिखो जिनके वर्णों को उलटकर रखने पर सार्थक शब्द बन जायँ।

रचना

- नीचे दी गई कविता की पंक्तियाँ पढ़ो। कविता में चार पंक्तियाँ और बनाकर लिखो।

  मेरा भारत न्यारा है,
  दुनिया भर में प्यारा है।
  साथ—साथ हम सब रहते,
  हम सबका यह प्यारा है।

गतिविधि

- शिक्षक बच्चों से इस कविता को नाटक के रूप में लिखवाएँ। इसके लिए बच्चों को चार—चार, पाँच—पाँच के समूह में बाँटें। उन्हें कविता का एक—एक भाग दें और नाटक के रूप में लिखने को कहें। तैयार नाटक का कक्षा में मंचन करवाएँ।
- हम बड़े होकर देश की सेवा कैसे करेंगे— इस संबंध में विद्यार्थियों से परस्पर चर्चा कराएँ—
- नीचे लिखी कविता को कक्षा के बच्चे समवेत स्वर में गाएँ। यदि विद्यालय में ड्रम हो तो राग के साथ ड्रम बजाएँ।

  वीर तुम बढ़े चलो,धीर तुम बढ़े चलो।
  हाथ में ध्वजा रहे, बालदल सजा रहे।
  ध्वज कभी झुके नहीं,दल कभी रुके नहीं।
  वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो।
  सामने पहाड़ हो, सिंह की दहाड़ हो,
  तुम निडर डरो नहीं, तुम सबल झुको नहीं।
  वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो।

4GX247

पाठ 6

औद्योगिक–तीर्थ–कोरबा

पं. जवाहरलाल नेहरू ने भोपाल स्थित भारी बिजली के कारखाने को मध्यप्रदेश का औद्योगिक तीर्थ बताया था। हमारे राज्य छत्तीसगढ़ का औद्योगिक तीर्थ कोरबा है। कोरबा को औद्योगिक तीर्थ क्यों कहा गया है, इस पाठ में पढ़ेंगे।

मनुष्य हो या मशीन, सभी को कार्य करने के लिए ऊर्जा अर्थात् बल की आवश्यकता होती है। मनुष्य या अन्य जीव–जंतु भोजन से ऊर्जा प्राप्त करते हैं। मशीनों को चलाने के लिए ऊर्जा के कई स्रोतों का उपयोग किया जाता है। खनिज तेल, पेट्रोलियम का शोधन करके पेट्रोल, डीजल आदि बनाया जाता है, जिससे रेलगाड़ियाँ एवं मोटरगाड़ियाँ चलाई जाती हैं। खदानों से प्राप्त होनेवाले पत्थर के कोयले से बड़े–बड़े कल–कारखाने चलाए जाते हैं। आजकल इस कोयले का सबसे अधिक उपयोग विद्युत (बिजली) पैदा करने में किया जाता है, जहाँ कोयले को जलाकर इसकी ताप–शक्ति से बिजली पैदा की जाती है।

बिजली आज मनुष्य की अनिवार्य आवश्यकता बन गई है। हमारे रसोईघर की चटनी पीसने की मशीन से लेकर बड़ी–बड़ी रेलगाड़ियाँ और कारखाने तक आज बिजली की ऊर्जा से ही चल रहे हैं। एक घंटे के लिए भी बिजली बंद हो जाने पर लोग परेशान हो उठते हैं। आज किसी भी देश, राज्य, शहर या गाँव को विकसित एवं खुशहाल होने का आधार बिजली के मिलने पर ही निर्भर करता है।

हमारा छत्तीसगढ़ वर्तमान में मिलनेवाली बिजली के आधार पर एक खुशहाल राज्य है। हमारे राज्य की खुशहाली का प्रमुख आधार है हमारा औद्योगिक तीर्थ 'कोरबा'। कोरबा को छत्तीसगढ़ की ऊर्जा नगरी भी कहते हैं।

छत्तीसगढ़ के उत्तर पूर्व में वन एवं वनवासियों से भरा–पूरा जिला है– कोरबा। इस जिले का मुख्यालय है– कोरबा नगर। कोरबा एक विशाल औद्योगिक नगर है। इस नगर में बिजली बनाने का बहुत बड़ा विद्युतगृह (पावरहाउस) है। यह पावरहाउस देश में सबसे बड़ा है। इसे भारत सरकार के राष्ट्रीय ताप विद्युत निगम द्वारा बनाया गया है।

इसके अतिरिक्त छत्तीसगढ़ विद्युत मंडल का भी अपना पावर हाउस है। दोनों पावर हाउसों में बिजली पैदा करने के लिए कोयले का उपयोग किया जाता है। इनमें कोयले को जलाकर उसके ताप से पानी की भाप बनाई जाती है। भाप से मशीनें चलाकर बिजली बनाई जाती है। इसलिए इन्हें तापविद्युतगृह कहते हैं।

शिक्षण–संकेत : *राज्य की प्राकृतिक सम्पदा– कोयला, लोहा, लकड़ी आदि – की जानकारी छात्रों को दें। इसी सम्पदा का सही उपयोग करते हुए भिलाई स्टील प्लांट बनाया गया है। ऐसा ही उद्योग–केंद्र कोरबा में स्थापित किया गया है। कोरबा के उद्योगों की संक्षिप्त जानकारी दें। बच्चों को छोटे–छोटे समूहों में बाँटकर उन्हें एक–एक अनुच्छेद पढ़ने को दें। बाद में उनसे अनुच्छेद का सारांश पूछें। फिर वाचन कराएँ। और पाठ का सारांश बताएँ।*

पावरहाउस में बिजली पैदा करने के लिए बहुत ज्यादा खनिज कोयले की आवश्यकता होती है। कोयला भी अच्छी किस्म का होना चाहिए। कोरबा एवं इसके आसपास के क्षेत्र में अच्छे कोयले का पर्याप्त भंडार भूमि के अंदर है। भूमि के अंदर से कोयला निकालने का काम करनेवाली कई कोयला खदानें हैं। इनमें कोरबा, कुसमुंडा, गेवरा, दीपिका, बाँकीमोगरा आदि प्रमुख परियोजनाएँ हैं। इन खदानों से भारी मात्रा में कोयला निकाला जाता है। यहाँ से निकाला गया कोयला, मालगाड़ियों एवं ट्रकों से देश के दूसरे भागों में भी भेजा जाता है।

पावरहाउस में कोयले के साथ ही पानी की भी बहुत जरूरत होती है। पानी की कमी न हो, इसके लिए कोरबा–दर्री में हसदो नदी पर एक बाँध बनाया गया है, जिसे दर्री बाँध के नाम से जाना जाता है। इसके अतिरिक्त कोरबा से कुछ ही दूरी पर हसदो नदी पर एक और विशाल बाँध बनाया गया है, जिसे मिनी माता (बाँगो) बाँध कहा जाता है। दर्री बाँध में पानी कम होने पर बाँगो बाँध से पानी दिया जाता है। बाँगो बाँध में जल–विद्युत की भी तीन इकाइयाँ हैं। प्रत्येक इकाई में 40 मेगावाट बिजली पैदा होती है। यहाँ पर बाँध के गिरते हुए पानी की ताकत से मशीन चलाकर बिजली पैदा की जाती है।

कोरबा में एल्यूमिनियम धातु बनाने का भी एक बड़ा कारखाना है। इस कारखाने में बॉक्साइट नामक खनिज का शोधनकर एल्यूमिनियम बनाया जाता है। एल्यूमिनियम से कई तरह के बर्तन, फर्नीचर, बिजली के तार आदि बनाए जाते हैं।

कोरबा में इनके अलावा भी छोटे–छोटे कई कल–कारखाने हैं, जो इन बड़े कारखानों की जरूरतों को पूरा करते हैं। यहाँ की खदानों एवं कारखानों के कारण सामान ढोने अर्थात् ट्रांसपोर्ट का भी काम बहुत ज्यादा है।

इन उद्योगों में बहुत बड़ी संख्या में कामगार काम करते हैं। इस कारण कोरबा का नगरीय क्षेत्र भी बहुत बड़ा हो गया है। सभी की जरूरतों को पूरा करने के लिए व्यापार भी काफी बढ़ा है। काम एवं व्यापार के लिए प्रायः देश के सभी क्षेत्रों के लोग यहाँ निवास करते हैं और आते–जाते रहते हैं।

कोरबा के ताप विद्युतगृह के कारण ही छत्तीसगढ़ में सभी को आवश्यकता के अनुसार बिजली मिल रही है। यही हमारी खुशहाली का कारण है। कोरबा के ताप विद्युतगृह से कई अन्य प्रदेशों को भी बिजली की पूर्ति की जाने की संभावना है। अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण कोरबा आज एक औद्योगिक तीर्थ बन गया है।

हमें आज बिजली पर्याप्त मिल रही है, किंतु इतना ध्यान रखें कि बिजली का दुरुपयोग न हो। जब आवश्यक न हो बिजली के बल्ब, पंखे, अन्य साधनों को बंद कर रखें। दिन में कमरे की खिड़कियाँ खोलकर रखें ताकि कमरे में रोशनी रहे और बिजली की बचत की जा सके।

शब्दार्थ

अनिवार्य – आवश्यक रूप से
अतिरिक्त – अलावा
वनवासी– वन में रहनेवाले
दुरुपयोग – गलत उपयोग
कामगार– काम करनेवाले, श्रमिक

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 कोरबा नगर कहाँ स्थित है ? और क्यों प्रसिध्द है ?
प्रश्न 2 हमें किन वस्तुओं से ऊर्जा मिलती है ?
प्रश्न 3 किस पदार्थ का शोधन करके पेट्रोल–डीजल बनाया जाता है ?
प्रश्न 4 हमारे प्रदेश में जल–विद्युत किस बाँध से पैदा की जाती है ?
प्रश्न 5 कोरबा में सामान ढोने का काम बहुत ज्यादा क्यों है ?
प्रश्न 6 हम अपने घरों में बिजली की बचत कैसे कर सकते हैं ?
प्रश्न 7 जब तुम्हारे घर की बिजली बंद हो जाती है तो तब तुम्हें क्या – क्या परेशानियाँ होती हैं ?
प्रश्न 8 नीचे लिखे शब्दों से तुम क्या समझते हो ? पाठ को पढ़ो और चर्चा करके लिखो ।
ऊर्जा, स्रोत, पेट्रोलियम, विद्युतगृह, ताप–विद्युत, जल–विद्युत।

भाषातत्व और व्याकरण

प्रश्न 1 नीचे दिए गए शब्दों के अर्थ जानकर इनका वाक्यों में प्रयोग करो।
स्रोत, शोधन, अनिवार्य, खुशहाली, अतिरिक्त, पर्याप्त।

समझो

'कमल भिलाई गया है।' 'मनोज भिलाई से आया है।' इन दोनों वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य इस तरह बना सकते हैं– कमल भिलाई गया है और मनोज भिलाई से आया हैं। दोनों वाक्यों को जोड़ने के लिए 'और' शब्द का प्रयोग किया गया है। ''कमल भिलाई गया है। '' सरल वाक्य है। ''कमल भिलाई गया है और मनोज भिलाई से आया है'', संयुक्त वाक्य है।

प्रश्न 2 नीचे दिए गए वाक्यों को इसी तरह जोड़कर नये वाक्य बनाओ।
क. सुशील खेल रहा है। रमेश पढ़ रहा है।
ख. सीमा हँसती है। रचना चिढ़ती है।
ग. वत्सल पढ़ने जाएगा। नमन मंदिर जाएगा।
घ. उषा सो रही है। श्वेता उसके पास बैठी है।

- नीचे दिए गए वाक्यों को पढ़ो।

क. हमें पहले बिजली कम मिलती थी।
ख. हमें आज बिजली पर्याप्त मिलती है।

ग. हमें आगे बिजली पर्याप्त मिलती रहेगी।

वाक्य 'क' बीते समय–भूतकाल– की बात बताता है।

वाक्य 'ख' वर्तमान समय की बात बताता है।

वाक्य 'ग' भविष्य की बात बताता है।

- ''कमल भिलाई गया है ।'' यह वाक्य '' कमल कहाँ गया है ?'' प्रश्न का उत्तर है। इसी तरह हर उत्तर का एक प्रश्न होता है। अब तुम नीचे लिखे उत्तरों के प्रश्न बनाओ ।

क. छत्तीसगढ़ की ऊर्जा नगरी कोरबा को कहते हैं।

ख. मशीन को चलाने के लिए ऊर्जा का उपयोग करते हैं।

ग. कोरबा का ताप विद्युत गृह कोयले से चलता है।

घ. मनुष्य या अन्य जीव – जन्तु भोजन से ऊर्जा प्राप्त करते हैं।

प्रश्न 3 अब नीचे दिए वर्तमान काल के वाक्यों को भूतकाल और भविष्यत् काल में बदलो।

क. इन उद्योगों में सैकड़ों कामगार काम करते हैं।

ख. भाप से मशीनें चलाकर बिजली पैदा की जाती है।

ग. रेलगाड़ियाँ बिजली की ऊर्जा से ही चलती हैं।

घ. इस नगर में बिजली बनाने का कारखाना है।

क्या तुम विद्यालय और अशुद्ध शब्दों की रचना समझते हो ?

- विद्यालय में 'द्या' की रचना 'द्या' के रूप में है। इसमें 'द' (आधा है) और 'या' मिला हैं। इसे विध्यालय लिखना गलत है।

- 'अशुद्ध' मे 'द्' और 'ध' मिले हैं। 'द' आधा है और 'ध' पूरा। इसे 'अशुध्द' लिखना गलत है।

यह भी समझो–'अशुद्धि' को यदि हम तोड़कर लिखेंगे तो उसका रूप होगा– अ+शु+द्+धि इसे अ+शु+दि+ध लिखना गलत है। आधे वर्ण (क,ख,ग आदि) पर मात्रा लगाना गलत है।

प्रश्न 4 'द्य' और 'द्ध' से बने तीन–तीन शब्द खोजकर लिखो।

- 'राम–रावण' यहाँ दोनों शब्दों के बीच में – चिह्न लगाया गया है जिसका अर्थ है 'और'। अतः 'राम–रावण' का अर्थ हुआ राम और रावण। इसी प्रकार 'विद्युत–गृह' एक शब्द है, यहाँ '–' चिह्न का अर्थ है 'का'। अतः इस पूरे शब्द का अर्थ है विद्युत का गृह।

नीचे लिखे शब्द युग्मों के अर्थ लिखो–

क. खेल–खिलाड़ी   ख. विद्युत–मंडल

ग. सुबह–शाम   घ. गुलाबजल

ङ. पशु–पक्षी   च. सुरक्षा–कवच

प्रश्न 5 इन वाक्यों में एक–एक शब्द अशुद्ध लिखा है। इसे खोजो और शुद्ध करके वाक्य फिर से लिखो।

क. इन खादानों से भारी मात्रा में कोयला निकाला जाता है ।

ख. बाँगो बाँध मैं जल–विद्युत की तीन इकाइयाँ हैं।

ग. कोरबा हमारा तीर्थस्थान है।

घ. बाँध से कई नालीयों में पानी निकाला जाता है।

प्रश्न 6 इन शब्दों को सुधारकर लिखो–

इकाइयाँ, बिजलीयाँ, अलमारीयाँ

रचना

- कोरबा को औद्योगिक तीर्थ कहा गया है। अपने शिक्षक से जानकारी लेकर छत्तीसगढ़ के किसी अन्य औद्योगिक नगरी के संबंध में दस वाक्य लिखो।

यह भी जानो

इस पाठ में बिजली बनाने के कुछ प्रकार बताए गए हैं –

जल–विद्युत – बाँध में पानी इकट्ठा करते हैं और फिर गिराते हैं। इस विधि से बिजली पैदा की जाती है।

ताप–विद्युत – कोयला जलाकर ताप पैदा की जाती है, जिससे बिजली बनाई जाती है।

वायु–विद्युत – वायु की सहायता से भी बिजली पैदा की जाती है। पवन चक्की इसका उदाहरण है।

योग्यता विस्तार

4H6X5U

- पुस्तकालय से पुस्तक ढूँढ़कर किसी अन्य औद्योगिक स्थान की जानकारी प्राप्त करो।
- कोरबा में बिजली कोयले से पैदा की जाती है। कोयला धीरे – धीरे खत्म होता जा रहा है। कोयला बनने में कई हजार वर्ष लग जाते हैं। यदि कोयला खत्म हो जाए तो क्या होगा ?

पाठ 7

घरौंदा

बच्चों को पशु–पक्षियों से बड़ा लगाव होता है। वे छोटे–छोटे पिल्लों, मेमनों के साथ खेलते, कूदते हैं। इस कहानी में बच्चों के पशु–प्रेम और उनके प्रति संवेदना का वर्णन है।

झुमरी कहाँ से आई किसी को नहीं मालूम। उसे किसी ने पाला भी नहीं था। वह गली में रहती और गली की डटकर रखवाली करती। गली का हर घर उसका अपना था। झुमरी गली–मुहल्ले के सभी बच्चों को बड़ी प्यारी थी। बच्चे दिन भर उसे घेरे रहते। अपने माँ–बाप के रोकने पर भी न रुकते। छिपा–छिपाकर रोटी का टुकड़ा ले आते और उसे खिलाते।

इस बार झुमरी के पाँच पिल्ले पैदा हुए। बच्चों की खुशी का ठिकाना न रहा। हर बच्चा उन्हें छू–छूकर देखता और खुश होता । बच्चे कभी–कभी उन छोटे पिल्लों को रोटी का टुकड़ा खिलाने का प्रयत्न भी करते, पर छोटे पिल्ले अपनी माँ का दूध पीकर ही मस्त रहते। तब कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी। झुमरी और उसके पिल्ले खुले आसमान के नीचे ही ठंडी रात बिताते थे।

दूसरे दिन सब बच्चों ने देखा, एक पिल्ला मर गया। तीसरे दिन एक पिल्ला और चल बसा। किसी ने कहा, ''बेचारा ठंड के मारे मर गया । इनका घर बनाना चाहिए।''

सबने हाँ–में–हाँ मिलाई–''हाँ, बेचारों का घर बनना चाहिए।'' थोड़ी देर बाद सब अपने–अपने घर चले गए। कौन घर बनाने की जहमत मोल ले ? सब बच्चों के साथ अमिता भी रोज पिल्लों से खेलती। खेलकर घर आती तो माँ डाँटतीं, ''तूने जरूर उन गंदे पिल्लों को हाथ लगाया होगा। कहना नहीं मानती। चल, साबुन से हाथ धो।'' माँ के कहने से अमिता हाथ धोती, लेकिन एक विचार उसके मन में बराबर घुमड़ता रहता–''रश्मि का घर है, दीपक का घर है, मेरा घर है, सबका घर है। झुमरी और उसके पिल्लों का घर क्यो नहीं है ?''

__शिक्षण–संकेत :__ बच्चों से पशु–पक्षियों के संबंध में चर्चा करें। उन्हें बताएँ कि पशु–पक्षी हमारे मित्र और सहायक हैं। वे कई रूपों में हमारी सहायता करते हैं। पालतू पशुओं के संबंध में उनसे प्रश्न पूछें। कुत्ते की वफादारी के संबंध में कोई घटना सुनाएँ। बताएँ कि इस कहानी में भी बच्चों का पशु–प्रेम दर्शाया गया है। पाठ में प्रयोग किए गए मुहावरों को स्पष्ट करें उनका वाक्यों में प्रयोग करके अर्थ स्पष्ट करें और विद्यार्थियों से उनका वाक्यों में प्रयोग कराएँ ।

वह सोचती–''रात में मुझे लिहाफ में भी ठंड लगती है। पिल्लों के पास तो कोई कपड़ा भी नहीं। इन्हें कितनी ठंड लगती होगी ?''

उस रात को अमिता ने डरते–डरते अपनी माँ से कहा, ''माँ, झुमरी और उसके पिल्ले जाड़े में मरते हैं। बाहर वर्षा हो रही है। ठंडी हवा चल रही है। इन्हें अपने घर के बरामदे में बैठा दो न ?''

माँ पर इसका कोई असर नहीं पड़ा। उलटे वे तो आगबबूला होकर अमिता को लगीं डाँटने–''तू तो पागल हो गई है, झुमरी, झुमरी के पिल्ले। हरदम इनकी रट लगाए रहती है। मैं कल ही इनका इलाज कराती हूँ। नौकर से इन्हें दूर जंगल में छुड़वा दूँगी। न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी। चल, चुपचाप बैठकर अपना लिखने का काम पूरा कर।''

माँ की डाँट–फटकार सुनकर अमिता सुबकने लगी। 'कल को झुमरी और उसके पिल्लों को दूर जंगल में छुड़वा दिया जाएगा।' यह सोच–सोचकर वह व्याकुल हो उठी। रोई और खूब रोई। रोते–रोते उसकी आँखें लाल हो गईं।

माँ खाना लाई तो उसने उसकी ओर आँख उठाकर भी नहीं देखा। खाना रखकर माँ रसोई में काम निपटाने चली गईं। एक घंटे बाद लौटीं तो खाना ज्यों–का–त्यों रखा पाया। अमिता सोई पड़ी थी।

माँ ने उसे आवाज दी। अमिता चुप। माँ ने उसे झिंझोड़ा। वह तिल भर भी न हिली। वह तो न जाने कब से बेहोश पड़ी थी। उसका शरीर गरम तवे की तरह तप रहा था। माँ की चीख निकल गई। अमिता के पिता जी पत्नी की चीख सुनकर दूसरे कमरे से दौड़े–दौड़े आए।

डॉक्टर को बुलाया गया। डॉक्टर ने लड़की की जाँच की। तेज बुखार था। उन्होंने एक सुई लगाई। थोड़ी देर बाद लड़की ने आँखें खोल दीं। तब डॉक्टर बोले, ''चिंता की कोई बात नहीं, अब यह ठीक है। इसे आराम करने दें।''

डॉक्टर चले गए। अमिता को शीघ्र ही फिर नींद आ गई। माँ को अभी तक नींद आई भी न थी कि अमिता नींद में बार–बार बड़बड़ाने लगी, ''माँ, पिल्ले 'कूँ–कूँ' बोल रहे हैं। इन्हें ठंड लग रही है। इन्हें मेरे पास लिहाफ में सुला दो, माँ।''

माँ ने बेटी को प्यार से थपथपाते हुए कहा, ''कुछ नहीं है बेटी। चुपचाप सो जाओ।''

कुछ समय बीता। माँ भी बेटी की पीठ थपथपाती हुई सो गईं। मुश्किल से दो घंटे सोईं होंगी, अचानक चौंककर उठ बैठीं। अमिता पलंग से गायब थी। एक जगह ढूँढ़ा। हर जगह ढूँढ़ा। अमिता वहाँ कहीं नहीं थी। खटपट सुनकर अमिता के पिता जी भी उठ बैठे। घर का कोना–कोना छान मारा, पर अमिता का कोई पता नहीं चला।

माता–पिता दोनों परेशान, लड़की कहाँ गई ? सोचा, पड़ोसियों को जगाएँ।

पुलिस को सूचना दें। दोनों पति–पत्नी बाहर गली में आए और उन्होंने पड़ोसी रहमान साहब के मकान की घंटी का बटन दबाया। रहमान साहब अपनी ऊनी चादर कंधे पर डाले हुए दौड़े–दौड़े बाहर आए। रहमान साहब को अमिता के माता–पिता ने अपनी परेशानी सुनाई, ''भाई साहब! अमिता शाम से बीमार थी, अब अचानक घर से गायब हो गई है।''

"यह तो बड़ी परेशानी की बात है। क्या तुम लोगों ने उसे डाँट तो नहीं दिया था ?" रहमान साहब ने पूछा।

पति–पत्नी दोनों में से कोई उत्तर न दे सका। अचानक रहमान साहब ने गली में दूर तक अपनी टार्च की रोशनी फेंकी। ऐसा लगा कि गली के दूसरे छोर पर कुछ है।

वहाँ पहुँचकर सबके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। गली में पड़ी हुई गीली मिट्टी से चिनकर वहाँ एक छोटा–सा घर बनाया गया था। पुराने अखबार फैलाकर छत बनाई गई थी। फर्श की जगह पुराने अखबारों की गड्डी फैलाकर गुदगुदा बिछौना बिछाया गया था। उस पर सुलाए गए थे पिल्ले और इस घर के बाहर ठंड में बैठी थी एक लड़की, जिसके शरीर पर एक भी ऊनी वस्त्र न था। वह इस नन्हे–से घरौंदे के बाहर बैठी पिल्लों को प्यार से निहार रही थी। वह अमिता थी।

शब्दार्थ

प्रयत्न	–	कोशिश
कड़ाके की	–	बहुत जोर की
जहमत मोल लेना	–	परेशानी उठाना
आगबबूला होना	–	बहुत अधिक क्रोधित होना
ज्यों–का–त्यों	–	जैसा था वैसा ही
निहारना	–	प्यार से देखना
घरौंदा	–	छोटा घर
खुशी का ठिकाना न रहना	–	बहुत खुश होना।

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 अमिता के मन में कौन–सा विचार घुमड़ता रहता था ?

प्रश्न 2 अमिता को तेज़ बुखार किस कारण से आ गया ?

प्रश्न 3 घरौंदा से तुम क्या समझते हो ?

प्रश्न 4 झुमरी के प्रति बच्चों का प्रेम जिन पंक्तियों से प्रकट होता हो, वे पंक्तियाँ लिखो।

प्रश्न 5 सोचो, विचारो और प्रश्नों के उत्तर लिखो।

क. अमिता के मन में पिल्लों को ठंड से बचाने का भाव जागा। उसने उनके लिए घरौंदा बनाया। क्या तुम्हारे मन में भी कभी किसी पशु–पक्षी को राहत देने का भाव जागा है ? उस समय तुमने क्या किया ?

ख. अगर तुम अमिता की जगह होते तो पिल्लों की मदद कैसे करते/करती?

ग. झुमरी को खिलाने के लिए बच्चे अपने–अपने घर से रोटी छिपाकर लाते थे। क्या तुम इसे ठीक समझते हो? हाँ, तो क्यों ?

भाषातत्व और व्याकरण

समझो

- इस पाठ में एक वाक्य आया है– 'न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी।' यह एक लोकोक्ति या कहावत है। इसका अर्थ है यदि कारण नहीं होगा तो कार्य भी नहीं होगा।

प्रश्न 1 क. इस लोकोक्ति का प्रयोग किसी अन्य प्रसंग में करो।

ख. एक अन्य लोकोक्ति सोचकर लिखो और इसका अपने वाक्य में प्रयोग करो।

प्रश्न 2 नीचे दिए गए मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग करो।

क. ज्यों–का–त्यों ख. ठिकाना न रहना

ग. आगबबूला होना घ. कोना–कोना छान मारना।

- इस वाक्य को पढ़ो।

'बेचारा ठंड के मारे मर गया।' 'मारे' का अर्थ है 'कारण'। इस वाक्य का अर्थ है– 'बेचारा ठंड के कारण मर गया।'

प्रश्न 3 इसी प्रकार के दो नए वाक्य बनाओ, जिनमें 'मारे' शब्द का प्रयोग हुआ हो।

- गीता ने रमीला को साईकिल सिखाई।

बानो ने शबनम को किताब दी।

इन दोनों वाक्यों में 'ने' दो नामों को जोड़ने का काम कर रहा है– पहले वाक्य में 'ने' गीता और रमीला को तथा दूसरे वाक्य में बानो और शबनम को।

इसी तरह इन वाक्यों में 'को' दो शब्दों को जोड़ने का काम कर रहा है– पहले वाक्य में रमीला और साईकिल को, दूसरे वाक्य में शबनम और किताब को।

प्रश्न 4 उपर्युक्त उदाहरणों के आधार पर 'ने' और 'को' का प्रयोग करते हुए दो–दो वाक्य लिखो। 'ने' और 'को' का प्रयोग एक ही वाक्य में हो ।

- इस पाठ में एक वाक्य – 'डॉक्टर को बुलाया गया।'– आया है। इस वाक्य में कर्ता छुपा है। हम कह सकते हैं – माता–पिता के द्वारा डॉक्टर को बुलाया गया। इसको सीधे रूप में लिख सकते हैं – पिता जी ने डॉक्टर को बुलाया।

प्रश्न 5 नीचे लिखे वाक्यों को किताब में दिये गये घटना क्रम में लिखो–

क. लड़की ने घरौंदा बनाया।	ख. पुराने अख़बार फैलाकर छत बनाई।
ग. डॉक्टर ने लड़की की जाँच की।	घ. रहमान साहब से पूछा।

रचना

- इस कहानी को अपनी भाषा में संक्षेप में लिखो।

गतिविधि

- फलालेन का मुलायम कपड़ा लो। उस पर पिल्ले की आकृति खींचो; मोटे गत्ते पर चिपकाओ और काटो; फिर उसके आँख, मुँह आदि बनाओ।

योग्यता–विस्तार

- छत्तीसगढ़ी बोली की कोई पाँच लोकोक्तियाँ खोजो और कक्षा में सुनाओ। उनका वाक्यों में प्रयोग करके अपने शिक्षक को सुनाओ।

4HPP95

4HYKAS

पाठ 8

कोलिहा खोलिस चश्मा दुकान

चश्मा बड़ काम के चीज आय। जब कोनो मनखे के आँखी कमजोर हो जाथे, तब ओला चश्मा लगाय बर परथे। कई झन घाम ले अपन आँखी ल बचाय बर घलो चश्मा लगाथें। सोंचव, कभू जंगल के जानवर मन अपन आँखी म चश्मा लगाहीं त का होही? आवव, ये कहानी म पढ़न।

जंगल म एक कोलिहा रहय। कोलिहा बड़ चतुरा रहय। एक दिन वो अपन माड़ा म बइठे–बइठे सोचिस, जंगल म चश्मा के दुकान खोले जाय। जंगल के चिरइ–चुरगुन अउ छोटे–बड़े जानवर चश्मा बिसाहीं त बड़ कमइ होही।

दूसर दिन वो शहर जाके रकम–रकम के चश्मा ले आनिस अउ बीच जंगल म मउहा तरी खोल डारिस चश्मा के दुकान।

जंगल के चिरई–चुरगुन अउ जानवर चश्मा बिसाय बर दुकान म आय लागिन। कोलिहा के दुकान म भीड़ लगगे। बेंदरा ल करिया रंग के चश्मा पसंद आइस। भालू ल सफेद चश्मा पसंद आइस अउ हइरना ल लाल।

खरगोस के पसंद सबले निराला राहय। ओला कोनो चश्मा पसंद नइ आवत रहय, कभू एला पहिर के देखय कभू ओला पहिर के देखय। कोलिहा कहिथे "तोर सफेद रंग म हरियर चश्मा खुलही, पहिर के देख।"

खरगोस ल कोलिहा के बात जमगे। वो ह हरियर चश्मा ल पसंद कर लिस।

शिक्षण संकेतः लइका मन ल चश्मा के उपयोग बतावत पाठ ले जोड़ँय। कहानी ल पढ़ के सुनावँय। फेर पारी–पारी ले लइका मन ले एक–एक अनुच्छेद पढ़वावँय। लइका मन के उच्चारण उपर ध्यान देवँय।

हाथी ल ओखर नाप के चश्मा नइ मिलत रहय। जेने चश्मा ल लगाय तेने छोटे पड़ जाय। ओहा कोलिहा ले कहिस, ''कोलिहा भाई, तैं मोर नाप के चश्मा बनवा के ला देबे। पिंवरा रंग के चश्मा लानबे''।

कउँवा अउ मिट्ठू घलो चश्मा बिसाय बर आइन। कउँवा ह करिया रंग के चश्मा ल पसंद करिस अउ मिट्ठू ह हरियर। कोलिहा कहिथे, '' ये ठीक हे, जइसन रंग तइसन चश्मा।''

फेर एक ठन मुस्कुल खड़े होगे। कउँवा अउ मिट्ठू के कान तो बाहिर कोती निकले नइ रहय। चश्मा के डंडी ल अटकाँय कामें? कोलिहा कहिस–''चश्मा के डंडी म नान–नान सुतरी बाँध लेवव। मुड़ी म अरझात बन जाही।''

कउँवा अउ मिट्ठू हा वइसने करिन अउ चश्मा लगा के खुशी–खुशी बिदा होइन।

सब के जाय के बाद संझउती–संझउती चश्मा दुकान म घुघुवा पहुँचिस। घुघुवा ह कोलिहा ले कहिथे, ''मोर आँखी दिन म चकचकाथे। मोला अइसन चश्मा देखा जेला पहिर के मैं दिन म देख सकँव।''

कोलिहा कहिस, ''तैं पहिली गरुड़ डॉक्टर ले अपन आँखी के जाँच करवा के आ। तब तोला चश्मा देहूँ।''

अब जंगल के चिरइ–चुरगुन अउ जानवर मन अपन आँखी म चश्मा चढ़ाय जंगल म गिंजरँय।

एक दिन बेंदरा ह करिया चश्मा लगाके जात रहिय। रद्दा म ओला एक ठन चिरइजाम के रूख दिखिस। ओमा झोत्था–झोत्था करिया–करिया चिरइजाम फरे दिखत राहय। बेंदरा बड़ खुश होगे। ओ ह झटकुन पेड़ म चढ़िस अउ चिरइजाम टोर–टोर के खाय लगिस। फेर ओला जाम के स्वाद ह कच्चा चिरइजाम सही लागे।

ओ ह अपन आँखी के चश्मा ल उतार के देखिस। चिरइजाम ह कच्चा रहिस, हरियर–हरियर।

ओ डहर हइरना ह लाल चश्मा पा के बड़ खुस रहय। ओ ह चश्मा लगाय कूदत–नाचत जात रहय तभे ओला पियास लगिस। ओ ह पानी पिये बर नंदिया तीर पहुँचिस। नंदिया के पानी ओला लाल दिखिस। हइरना डर्रागे, ओ ह पानी पिये बिना लहुटत रहय। तभे ओला सुरता अइस के ओखर आँखी म लाल चश्मा लगे हे। ओ ह चश्मा तुरते उतार के देखिस। नंदिया के पानी बिल्कुल साफ रहय।

खरगोस राजा के तो साने निराला राहय। वो ह हरियर चश्मा लगाके दरपन म अपन मुख ल देखे अउ खुस होवय। ओला चारों–मुड़ा हरियर–हरियर दिखय। सुक्खा काँदी ह घलो ओला हरियर–हरियर दिखय।

खरगोस ल सुक्खा काँदी ल खावत देखँय त जंगल के दूसर जानवर मन हाँसँय। खरगोश समझ नइ पाय के ये मन काबर हाँसत हवँय ?

धीरे–धीरे जंगल के सबो जानवर समझगें के चश्मा पहिरना उँखर हित म ठीक नइ हे। देखा–देखी म कोनो काम नइ करना चाही। सब अपन–अपन चश्मा ल निकाल के फेंक दिन। कोलिहा के चश्मा दुकान बंद होगे।

छत्तीसगढ़ी शब्द के हिन्दी अर्थ

माड़ा = गुफा या माँद	बिसाना = खरीदना
तरी = नीचे	अरझाना = टाँगना
झोत्था = गुच्छा	चिरइजाम = छोटा जामुन
सुक्खाकाँदी = सूखी घास	चारों–मुड़ा = चारों दिशा

प्रश्न अउ अभ्यास

कक्षा ल दू दल म बाँटके लइका मन ल एक–दूसर ले मुँहअँखरा प्रश्न–उत्तर करवावँय। लइका मन के प्रश्न–उत्तर के पाछू गुरुजी दूनो दल ले खुद कुछ मुँहअँखरा प्रश्न पूछँय। कुछु प्रश्न अइसन हो सकत हे–

क. कोलिहा ह चश्मा दुकान कहाँ खोलिस ?

ख. चश्मा दुकान म संझउती–संझउती कोन पहुँचिस ?

प्रश्न 1 खाल्हे लिखाय प्रश्न के उत्तर लिखव–

क. भालू ल कोन रंग के चश्मा पसंद अइस ?

ख. खरगोश कोन रंग के चश्मा ल पसंद करिस ?

ग. कोलिहा ह घुघुवा ले का कहिस ?

घ. बेंदरा ल जाम करिया–करिया काबर दिखत राहय ?

ङ. हइरना ह बिना पानी पिये काबर जावत राहय ?

च. खरगोस ल देख के दूसर जानवर मन काबर हाँसँय ?

छ. कोलिहा के चश्मा दुकान काबर बंद होगे?

प्रश्न 2 सोंचव अउ लिखव–

क. हाथी ल ओखर नाप के चश्मा काबर नइ मिलिस?

ख. मनखे अपन आँखी म चश्मा काबर लगाथे?

प्रश्न 3 कोन काकर ले कहिस ?

क. "तोर सफेद रंग म हरियर चश्मा खुलही।"

ख. "ये ठीक हे, जइसन रंग, तइसन चश्मा।"

ग. "मोला अइसन चश्मा देखा, जेला पहिर के मैं दिन म देख सकँव।"

भाषा–तत्व अउ व्याकरण

इहाँ हम सीखबो–उल्टा अर्थ वाला शब्द, काल बदलना, बहुवचन रूप बनाना, शब्द ल वाक्य म प्रयोग करना।

प्रश्न 1 खाल्हे लिखाय शब्द मन ल पढ़व अउ लिखव –

हइरना, जानवर, मुस्कुल, सँझउती, झोत्था–झोत्था, डर्रागे, कउँवा, सुक्खा।

प्रश्न 2 'तरी' के उल्टा अर्थ वाला शब्द 'ऊपर' आय। अइसने नीचे लिखाय शब्द मन के उल्टा अर्थ वाला शब्द लिखव –

बिसाना , मुस्कुल, बाहिर, सुक्खा, छोटे।

समझव

क. बेंदरा ह करिया चश्मा लगाय जावत हे।

ख. बेंदरा ह करिया चश्मा लगाय जावत रहिस।

ग. बेंदरा ह करिया चश्मा लगाके जाही।

'क' वाक्य वर्तमान काल के बात बतावत हे।

'ख' वाक्य भूतकाल के बात बतावत हे।

'ग' वाक्य भविष्य काल के बात बतावत हे।

प्रश्न 3 क. खाल्हे लिखाय वाक्य ल भूतकाल म बदलव –

(1) कोलिहा बड़ चतुरा हे।

(2) जाम कच्चा हे।

ख. खाल्हे लिखाय वाक्य ल भविष्यकाल म बदलव –

(1) कोलिहा के दुकान म भीड़ लगे हे।

(2) तोर सफेद रंग म हरियर चश्मा खुलत हे।

समझव

- "ओमा झोत्था–झोत्था करिया–करिया जाम फरे हे।"

ऊपर लिखाय वाक्य म 'झोत्था' अउ 'करिया' शब्द ह दू बेर आय हवय।

प्रश्न 4 खाल्हे लिखाय शब्द के जोड़ी ल अपन वाक्य म प्रयोग करव–

गुरतुर–गुरतुर, बिहनिया–बिहनिया, आगू–आगू, कच्चा–कच्चा।

समझव

खाल्हे लिखाय वाक्य ल पढ़व–

- जानवर मन अपन आँखी म चश्मा चढ़ाय जंगल म गिंजरँय।

  ये वाक्य म 'जानवर' शब्द म 'मन' जोड़के बहुवचन रूप बनाय गे हवय।

प्रश्न 5 खाल्हे लिखाय शब्द म 'मन' जोड़के बहुवचन रूप बनावव अउ अपन वाक्य म प्रयोग करव –

लइका, चिरइ, गुरुजी, हाथी, बइला।

रचना

- हाथी अपन आँखी म चश्मा लगाही त कइसन दिखही, सोंचव अउ ओखर चित्र बनावव।

योग्यता विस्तार

1. जंगल के चिरइ–चिरगुन अउ जानवर के कोनों किस्सा अपन कक्षा म सुनावव।
2. पशु–पक्षी मन के मुखौटा बनावव।
3. पशु–पक्षी के मुखौटा लगा के उँखर नकल उतारव।

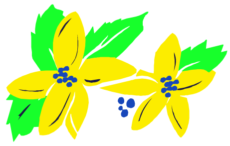

4I8GCF

4IHCE3

पाठ 9 दीप जले

हर त्यौहार समाज में प्रेम और सहयोग की भावना का प्रसार करता है। दीपावली प्रकाश का त्यौहार है। यह बुराई पर अच्छाई की जीत का त्यौहार है। यह परस्पर प्रेम और सहयोग का संदेश देता हैं। ज्योति पर्व दीवाली के महत्व को इस कविता में पढ़ेंगे।

दीप जले, दीप जले

द्वार–द्वार दीप जले,
दीप जले गाँव–गाँव,
बगिया की छाँव–छाँव,
द्वारे पै, आँगन में,
धूम मची ठाँव–ठाँव,
आओ रे ! गाओ रे !
ढोलक पै नीम–तले,
दीप जले–दीप जले।
द्वार–द्वार दीप जले।।

नन्हे से दीप ये,
नेह के उजारे हैं।
मावस के चंदा हैं
राह के सहारे हैं।
रात के समुंदर में,
तारों की नाव चले,
दीप जले, दीप जले,
द्वार–द्वार दीप जले,

शिक्षण–संकेत : *यह कविता दीपावली के अवसर पर पढ़ाई जाए। दीपावली के आयोजन की कहानी सुनाइए। बच्चों को बताइए कि हजारों वर्षों की उसी परम्परा का पालन हमारा देश करता आ रहा है। यह पर्व आपसी प्रेम–भाव को बढ़ाने का है। हमें आपस के भेदभाव भुलाकर एक दूसरे से गले मिलना चाहिए। देश को सच्चा सुख तभी मिलेगा जब हर घर में उजियाला बिखरेगा। एक कविता की ये पंक्तियाँ सुनाइए और उन्हें याद कराइए–*

हम उजाला जगमगाना चाहते हैं,
हम अँधेरे को मिटाना चाहते हैं।।

दानव की हार का,
मानव की जीत का।
दीपों का पर्व है,
जन–जन की प्रीति का।
भेदभाव भूलो रे !
आपस में मिलो गले,
दीप जले, दीप जले।
द्वार–द्वार दीप जले।।

शब्दार्थ

नेह	–	प्रेम	समुंदर	–	समुद्र
छाँव	–	छाया	ठाँव	–	जगह
पर्व	–	त्यौहार	मावस	–	अमावस्या
राह	–	रास्ता	नीम तले	–	नीम के पेड़ के नीचे
दानव	–	राक्षस	प्रीति	–	प्यार
उजारे	–	उजियारे, प्रकाश			

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 तुम दिवाली में क्या – क्या करते हो ?

प्रश्न 2 दीवाली पर प्रकाश करने के लिए कौन–कौन–से साधन अपनाए जाते हैं?

प्रश्न 3 दीपक को कविता में 'मावस का चन्दा' क्यों कहा गया है?

प्रश्न 4 कविता में से वह पंक्ति लिखो जिसमें–

क. दीप को मार्ग दिखाने वाला बताया गया है।

ख. भेदभाव भूलकर परस्पर प्रेम से रहने का बोध कराया गया है।

ग. लोगों को मिलकर गाने–बजाने के लिए आमंत्रित किया गया है।

प्रश्न 5 नीचे दिए सकेतों के आधार पर इन खानों को भरो।

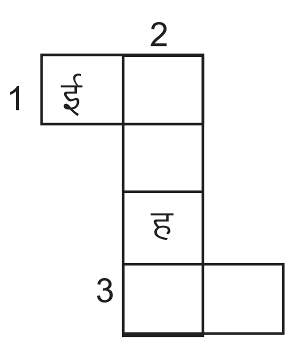

1. गले मिलने और सेवई खाने का त्यौहार ।

2. रावण दहन का त्यौहार ।

3. बहन अपने भाई की कलाई पर बाँधती है ।

प्रश्न 6 तुम और कौन – कौन से त्यौहार मनाते हो। उनके बारे में तालिका में लिखो ।

क्र.	त्यौहार का नाम	त्यौहार में कया – क्या करते हो ?
1.	....	....
2.	....	....
3.	....	....
4.	....	....
5.	....	....

भाषातत्व और व्याकरण

प्रश्न 1 निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी एक–एक अन्य शब्द लिखो।

दानव, मानव, राह, दीप, पर्व।

प्रश्न 2 'मानव' का विलोम शब्द है 'दानव'। इसी प्रकार नीचे दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखो–

रात, मावस, जलना, हार, प्रीति।

प्रश्न 3 नीचे कोष्ठक में कुछ शब्द दिए गए हैं। समान उच्चारण वाले शब्दों को अलग–अलग लिखो और उसके समान एक–एक शब्द याद करके लिखो।

(जीत, दीप, आज, तारा, नेह, सारा, सीप, काज, मीत, गेह, शीत, जीप, नाज, कारा, मेह)

रचना

- रोशनी करने के लिए तुम कौन – कौन सी चीजों का उपयोग करते हो ? उनके चित्र बनाओ।

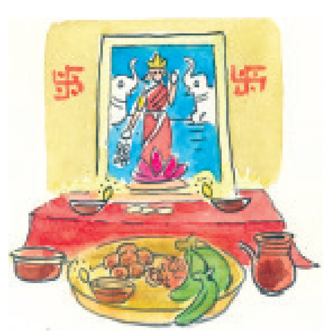

गतिविधि

- दीवाली पर दीप जलाए जाते हैं। सुबह ये दीप बेकार हो जाते हैं। कुछ दीपों को पानी में डाल दो। कुछ देर बाद इन्हें निकालो। किसी नुकीली वस्तु से इनमें छेद करके धागा डालो और तराजू बनाओ।
- रंग–बिरंगे, कई तरह के दीपावली के बधाई कार्ड बनाओ और अपने परिवारवालों और मित्रों को भेंट करो।

योग्यता–विस्तार

- अपने पसंद के त्यौहार के बारे में लिखो और उससे जुड़े चित्र बनाकर कक्षा की दीवार में लगाओ।

4IR8FQ

4J14HD

पाठ 10 संत रविदास

भारतीयों ने वर्ण–भेद को नकारते हुए संत–महात्माओं को सदा सम्मान दिया है। संत रविदास, जिन्हें आम जनता रैदास के नाम से पुकारती है, ऐसे ही संत थे। गुरु रामानन्द ने उन्हें शिष्य बनाया और रविदास ने कृष्ण के प्रेम में दीवानी राजघराने की महिला मीरा को अपनी शिष्या बनाया। उन्हीं संत रविदास का संक्षिप्त जीवन–परिचय इस पाठ में पढ़ें।

भारत के इतिहास में एक समय ऐसा था जब धर्म के नाम पर भारतवासियों पर बहुत अत्याचार हुए। उस समय के शासक निर्दोष जनता को लूटने और सताने को ही अपना कर्त्तव्य समझते थे। उच्च जाति माननेवाले लोग अपने से छोटी जाति को माननेवाले लोगों पर अत्याचार करते थे। दुखी लोगों की पुकार सुननेवाला कोई नहीं था। ऐसे समय में भारत में कई संतों और महात्माओं ने जन्म लिया। उनमें से एक थे– संत रविदास, जिन्हें संत रैदास भी कहते हैं।

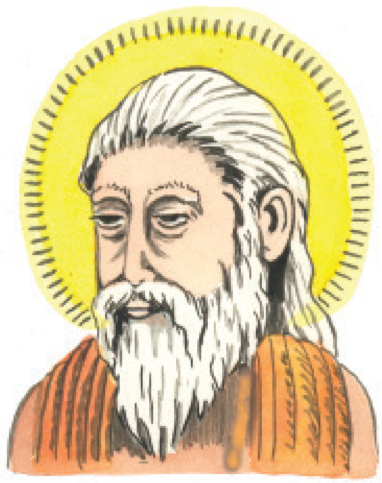

संत रविदास का जन्म माघ पूर्णिमा संवत् 1433 को बनारस के समीप मँडवाडीह गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम मानदास और माता का करमा देवी था। इनके पूर्वज चमड़े का काम करते थे।

बचपन से ही बालक रविदास की रुचि साधु–महात्माओं के सत्संग में थी। जहाँ भी पूजा–पाठ अथवा हरिकीर्तन होता, वे वहीं पहुँच जाते। ऐसे समय वे प्रायः घर का काम–धाम भूल जाते। उनके ऐसे स्वभाव को देखकर उनके माता–पिता को चिंता हुई कि उनका बेटा कहीं बैरागी न हो जाए। इसलिए उन्होंने रविदास का विवाह कर दिया और यह कहकर– ''बेटा, कमाओ और खाओ,'' उन्हें घर से अलग कर दिया।

पत्नी लूणादेवी के साथ रविदास घास–फूस की झोपड़ी बनाकर रहने लगे। वे चमड़े का काम करते और उसी आय पर अपना जीवन निर्वाह करते। कुछ वर्षों के पश्चात् उनके यहाँ एक पुत्र–रत्न भी पैदा हुआ।

शिक्षण–संकेत : *कक्षा में कबीर, नानक, दादू, गुरु घासीदास आदि संतों की चर्चा कीजिए और संत रविदास के संबंध में संक्षेप में बताइए। एक अनुच्छेद का आदर्श वाचन कीजिए और बच्चों से अनुकरण वाचन कराइए। संत रविदास के संबंध में अतिरिक्त जानकारी लेकर कक्षा में बताइए। समाज में सब बराबर हैं, यह भी बताएँ। पाठ का एक–एक अनुच्छेद एक–एक समूह को देकर परस्पर चर्चा कराएँ। अन्त में पूरे पाठ पर चर्चा करें।*

विवाह–बंधन रविदास को ईश्वर–भक्ति से विमुख नहीं रख सका। साधु–सेवा, सत्संग तथा पूजा–पाठ निरंतर चलता रहा।

उन दिनों स्वामी रामानंद जी की भक्ति, ज्ञान तथा विद्वता की प्रसिद्धि पूरे भारत में फैली हुई थी। वे बनारस के ही रहनेवाले थे। प्रभु–भक्ति के प्यासे रविदास स्वामी जी के चरणों में पहुँच गए। शिष्य की अथाह भक्ति ने स्वामी जी का हृदय जीत लिया। रविदास स्वामी रामानंद के शिष्य बन गए। अब रविदास को अपना लक्ष्य प्राप्त करने का मार्ग मिल गया।

संत रविदास संत कबीर के गुरु भाई भी हो गए। दोनों जात–पात तथा ऊँच–नीच में विश्वास नहीं रखते थे। दोनों ने समाज के झूठे आडंबरों का विरोध किया। रविदास विनम्र और मधुर भाषी थे। यही कारण है कि समाज के बहुत–से लोगों ने उनके विचारों को बहुत ध्यान से सुना और उन्हें ग्रहण किया।

गुरु रविदास के शिष्यों तथा भक्तों की संख्या दिनों–दिन बढ़ने लगी। उनकी इस प्रसिद्धि को ऊँची जाति के लोग सह नहीं सके। वे काशी नरेश वीरदेव सिंह के दरबार में पहुँचे। उन्होंने रविदास की शिकायत की – ''महाराज, आपके राज्य में रविदास नाम का एक व्यक्ति है। वह अपने आपको बड़ा भक्त समझता है। वह लोगों को गुमराह कर रहा है। वह कहता है कि सभी लोग बराबर हैं। यदि ऐसे धर्म विरोधी व्यक्ति के कामों को न रोका गया तो समाज छिन्न–भिन्न हो जाएगा।''

राजा ने उन लोगों की बात शांतिपूर्वक सुनी और कहा – ''एक पक्ष की बात सुनकर ही निर्णय दे देना राजा का धर्म नहीं। मैं स्वयं संत जी से मिलूँगा और तभी कोई निर्णय करूँगा।''

दूसरे दिन काशी नरेश संत रविदास की कुटिया पर पहुँच गये। संत जी उन्हें देखकर चकित रह गए । उन्होंने आदरपूर्वक राजा से उनके आने का प्रयोजन पूछा।

राजा बोले – संत जी, मैं आपसे कुछ पूछने आया हूँ। क्या आप लोगों को यह शिक्षा दे रहे हैं कि समाज में कोई छोटा–बड़ा नहीं होता? क्या समाज में सभी बराबर हैं?

संत रविदास मुस्कराए और निर्भय होकर बोले –

''रविदास जन्म के कारणै, होत न कोऊ नीच।
नर कूँ नीच करति है, ओछे करम की कीच।।

जात–पात के फेर महिं, उरझि रहइ सब लोग।
मानवता कूँ खात है, रविदास जात का रोग।।''

काशी नरेश ध्यानमग्न होकर संत जी की वाणी सुन रहे थे।

संत जी ने बात जारी रखी – ''राजन्, जन्म और जाति से कर्म बड़ा है। जो कर्म से ऊँचा है, वही वास्तव में ऊँचा है। राजा भी वही महान है जो न्यायकारी है। अन्यायी राजा, यदि ऊँचे कुल का भी होगा, तो भी उसे हीन ही समझा जाएगा।''

काशी नरेश ने संत जी के चरण पकड़ लिए और विनय की– ''गुरु जी, इस प्राणी को भी स्वीकार कीजिए। मेरा भी उद्धार कीजिए।''

संत रविदास ने काशी नरेश का कल्याण तो किया ही, भारत के असंख्य लोगों को मानव–प्रेम और ईश्वर–भक्ति का पाठ भी पढ़ाया। उनकी प्रसिद्धि देश के कोने–कोने में फैल गई। चित्तौड़ के महाराणा साँगा सहित कई राजाओं ने उनकी शिक्षा को ग्रहण किया। कृष्ण–भक्ति की दीवानी मीराबाई ने तो उनसे दीक्षा भी ली थी। गुरु नानकदेव जी तो बात–बात में संत रविदास जी की वाणी का उल्लेख करते थे।

संत रविदास के जीवन की एक घटना का कई जगह उल्लेख हुआ है। कहते हैं कि कोई सिद्‌ध पुरुष उनकी कुटिया पर पहुँचे। संत जी का जीवन बहुत ही साधारण था। उन सिद्‌ध पुरुष को संत जी की आर्थिक स्थिति देखकर बहुत दुख हुआ। उन्होंने संत जी के अभावमय जीवन में परिवर्तन लाने के लिए उन्हें एक मणि देनी चाही। उसकी विशेषता बताते हुए सिद्ध पुरुष ने बताया, ''यह मणि अपने स्पर्श से लोहे की वस्तु को सोने की बना देगी। इससे आपकी दरिद्रता दूर हो जाएगी।''

संत रविदास ने कहा– ''महाराज! मुझे धन की कोई इच्छा नहीं। आप यह मणि अपने पास ही रखिए।''

सिद्‌ध पुरुष ने जब बहुत अधिक ज़ोर दिया तो संत रविदास ने कहा, ''महाराज! आप इतना आग्रह कर रहे हैं तो आप ही इसे झोपड़ी में कहीं रख दीजिए।''

सिद्‌ध पुरुष उस मणि को झोंपड़ी में, घास–फूस के बीच में, रखकर चले गए। एक वर्ष बाद वे फिर से संत रविदास से मिलने आए। उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि रविदास की आर्थिक स्थिति में कोई बदलाव नहीं आया। उन्होंने संत जी से पूछा– ''संत जी, मैं आपको मणि देकर गया था। उसका आपने क्या किया?''

संत रविदास बोले– ''महाराज! वह, जहाँ आप रख गए थे, वहीं देख लीजिए। वह वहीं होगी।''

सिद्‌ध पुरुष ने तलाश किया तो वह मणि उन्हें उसी जगह पर रखी मिली। उन्हें लगा कि यह व्यक्ति निर्लोभी है। इसे धन की कोई कामना नहीं।

संत रविदास उच्च कोटि के भक्त होने के साथ ही कबीर के समान एक उच्च कोटि के समाज–सुधारक भी थे। वे जाति–प्रथा के विरोधी थे। समाज में कोई छोटा, कोई बड़ा नहीं। सब समान हैं। वे हिंदू–मुसलमानों की एकता में विश्वास करते थे। उन्होंने लिखा है –

मंदिर मसजिद दोउ एक हैं, उन महँ अंतर नाहिं।
रविदास राम रहमान का, झगड़ा कोऊ नाहिं।।

उन्होंने हिंदू –मुसलमानों के बीच फैले द्वेष को मिटाने का प्रयत्न किया। हम उनकी महानता इसी बात से आँक सकते हैं कि मीराबाई जैसी कृष्ण–भक्ति में डूबी राजघराने की महिला ने उनका शिष्यत्व ग्रहण किया। युगों–युगों तक गुरु रविदास की वाणी भूले–भटके लोगों को मानव–प्रेम का पाठ पढ़ाती रहेगी।

शब्दार्थ

शताब्दी	–	सौ वर्ष का समय	हीन	–	छोटा, नीच
निर्दोष	–	बिना दोष के	समीप	–	पास
पूर्वज	–	पुरखे	निर्वाह करना	–	निभाना, व्यतीत करना
सत्संग	–	अच्छे लोगों की संगति			
निरंतर	–	लगातार	उरझि	–	उलझना
आडंबर	–	दिखावा	वाणी	–	बोली
निर्भय	–	बिना डर के	पक्ष	–	गुट
डारि है	–	डालेगी	गुमराह करना	–	भटकाना
प्रयोजन	–	कारण	चकित होना	–	आश्चर्य में पड़ना
सभ	–	सब	ओछे	–	बुरे, नीच, छोटे
अत्याचार	–	बहुत बुरा व्यवहार करना			
अथाह	–	जिसकी थाह न ली जा सके।			
सर्वप्रियता	–	सबको समान मानकर प्यार करना			
छिन्न–भिन्न होना	–	अलग–थलग हो जाना, टुकड़े–टुकड़े हो जाना			

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 संत रविदास का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?

प्रश्न 2 संत रविदास के विचारों से सहमत अन्य संत–महात्माओं के नाम लिखो।

प्रश्न 3 काशी के लोग संत रविदास से क्यों नाराज थे ?

प्रश्न 4 संत रविदास ने जनता को क्या उपदेश दिए ?

प्रश्न 5 किस घटना से प्रभावित होकर काशी नरेश संत रविदास की शरण में गए ?

प्रश्न 6 किस घटना के कारण हम यह कह सकते हैं कि संत रविदास के मन में धन के प्रति कोई आकर्षण नहीं था?

प्रश्न 7 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर के चार–चार विकल्पों में से सबसे सही विकल्प चुनकर लिखो।

अ. रविदास के माता–पिता चिंतित रहते थे –

(क) क्योंकि वे पढ़ते–लिखते नहीं थे।

(ख) क्योंकि वे साधु–संतों के पीछे लगे रहते थे।

(ग) क्योंकि वे बड़े हो गए थे, उन्हें उनका विवाह करना था।

(घ) क्योंकि वे हरिकीर्तन में घर का काम–धाम भूल जाते थे।

ब. एक न्यायप्रिय राजा को किसी शिकायत पर निर्णय लेते समय –

(क) शिकायतकर्त्ता के पक्ष पर निर्णय देना चाहिए।

(ख) अपने मंत्रियों से जानकारी लेकर निर्णय देना चाहिए।

(ग) दोनों पक्षों की बात सुनकर निर्णय देना चाहिए।

(घ) मन की बात मानकर निर्णय देना चाहिए।

स. संत रविदास ने मणि का कोई उपयोग नहीं किया –

(क) क्योंकि वे मणि में विश्वास नहीं करते थे।

(ख) क्योंकि वे सिद्ध पुरुष में विश्वास नहीं करते थे।

(ग) क्योंकि धन के प्रति उनकी कोई कामना नहीं थी।

(घ) क्योंकि उनके गुरु ने ऐसा करने से मना किया था।

द. निम्नलिखित में से कौन–से दो कवि एक ही गुरु के शिष्य थे?

(क) रविदास और कबीर

(ख) रविदास और नानकदेव

(ग) रविदास और धर्मदास

(घ) रविदास और सूरदास

भाषातत्व और व्याकरण

- शिक्षक श्रुतलेख के रूप में निम्नलिखित शब्द बोलें और बच्चों को लिखने को कहें।

  हरि–कीर्तन, घास–फूस, जात–पात, ऊँच–नीच, दिनों–दिन, मानव–प्रेम, समाज–सुधारक, भूले–भटके, आकर्षण, विश्वास, निर्लोभी, विश्वास।

प्रश्न 1 इन शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करके लिखो–

जात–पात, ऊँच–नीच, मानव–प्रेम, साधु–संत, भूले–भटके।

प्रश्न 2 निर् + दोष या निः+दोष मिलकर बना है 'निर्दोष'।

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों को तोड़कर लिखो –

निर्गुण, निर्भय, निर्मल, निर्दय।

प्रश्न 3 निम्नलिखित शब्दों के जोड़ों में से सही शब्द चुनकर लिखो–

सत्संग/सत्संघ, निर्वाह/निव्राह, रवीदास/रविदास, चरन/चरण, गुरु/गुरू, रवि/रवी

प्रश्न 4 कोष्ठक में से उचित शब्द चुनकर खाली स्थान भरो।

क. भगवन्! इस पापी का .... कीजिए। (उद्धार/उदार)

ख. संत रविदास की .... पूरे भारत में फैली है। (प्रसिद्धि/प्रसिद्ध)

ग. लोग रविदास को बहुत बड़ा .... समझते थे। (भक्त/भक्ति)

घ. राजा ने उन लोगों की बातें बड़ी .... से सुनीं। (शांत/शांति)

प्रश्न 5 'व्यापार' शब्द में 'ई' की मात्रा (ी) लगने से बना है 'व्यापारी'। नीचे दिए गए शब्दों से इसी प्रकार नए शब्द बनाकर लिखो और वाक्यों में प्रयोग करो।

व्यवसाय, मेहनत, मजदूर, कारीगर।

प्रश्न 6 निम्नलिखित वाक्यों में से संज्ञा पहचानों और उनके प्रकार लिखो–

क. गुरू रविदास के शिष्यों और भक्तो की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ने लगी।

ख. चित्तौड़ के महाराणा साँगा तथा कई राजाओं ने उनकी शिक्षा को ग्रहण किया।

रचना

- संत रविदास की तरह ही किसी अन्य संत के बारे में पता लगाकर निम्न बिन्दुओं में लिखो–

1. पूरा नाम।
2. जन्म स्थान एवं तिथि।
3. अभिभावक का नाम।
4. उनके द्वारा किये गये उल्लेखनीय कार्य।

योग्यता–विस्तार

- संत रविदास एक कवि भी थे। उनकी लिखी कविताएँ खोजो और उनका कक्षा में सस्वर वाचन करो।
- मीराबाई एवं कबीर दास की कविताओं को खोजकर उन्हें कक्षा में सुनाओ।
- कबीर, दादू, नानक आदि संत कवियों के चित्र संग्रह कर अपनी चित्रों की पुस्तिका में लगाओ।
- कैलेण्डर देखकर अन्य महापुरूषों की जयंतियों की सूची बनाओ।

4J9ZJ1

4S9RD6

पाठ 11

जीत खेल भावना की

खेल में हार–जीत लगी रहती है। जीतने –हारने की दृष्टि से खेल नहीं खेलने चाहिए। खेल में अच्छा खेल खेलने की, मिल–जुलकर खेलने की भावना प्रमुख रहनी चाहिए। हारने पर न तो जीतनेवाली टीम से ईर्ष्या करने की भावना होनी चाहिए, न जीतने पर हारनेवाली टीम को नीचा दिखाने की भावना होनी चाहिए।

प्रधान अध्यापक जी के ऑफिस के आगे भीड़ लगी हुई थी। कुछ लड़कों ने सुरेश को इतना मारा था कि उसका सिर फूट गया था। सब इस बात को जानते थे कि यह काम महेश और उसके साथियों का है। सुरेश और महेश की दुश्मनी पूरे स्कूल में जाहिर थी। मगर बात इतनी बढ़ जाएगी, इसकी किसी को भी उम्मीद न थी। प्रधान अध्यापक जी के बहुत पूछने पर भी सुरेश ने महेश का नाम नहीं बताया।

प्रधान अध्यापक जी ने एक बार फिर पूछा, ''बताओ सुरेश, यह किसका काम है... उसे जरूर सजा दी जायगी।''

''नहीं सर, मेरा पैर सीढ़ियों से फिसल गया था। इसलिए चोट लग गई।''

मगर प्रधान अध्यापक जी को भनक लग गई थी कि वार्षिकोत्सव की तैयारी करते समय सुरेश और महेश में कुछ कहासुनी हो गई थी। हर बार सभी खेलों में सुरेश अव्वल आता, इस कारण महेश उससे ईर्ष्या करने लगा था। उसके कुछ साथियों ने उसके इतने कान भरे कि वह सुरेश को अपना दुश्मन समझने लगा था।

उसका नतीजा आज सबके सामने था। सुरेश को अस्पताल ले जाकर पट्‌टी करवा दी गई। साथ ही, सिर में कुछ टाँके भी लगे। फिर उसे घर भेज दिया गया।

दूसरे दिन हाल खचाखच भरा हुआ था क्योंकि प्रधान अध्यापक जी ने विशेष मीटिंग बुलाई थी। वातावरण एकदम शांत था।

प्रधान अध्यापक जी बोले, ''कल हमारे स्कूल में जो घटना हुई है, उससे मुझे गहरा आघात पहुँचा है। मुझे दुख है कि हमारे स्कूल की शिक्षा को कुछ छात्रों ने सही ढंग से ग्रहण नहीं किया।''

महेश और उसके साथियों के चेहरे पीले पड़ गए। उन्हें ऐसा महसूस हो रहा था

शिक्षण–संकेत : *बच्चों से खेल के संबंध में चर्चा करें। उन्हें बताएँ कि खेल में हारना और जीतना लगा ही रहता है। खेल में खेल–भावना का महत्व है। इस कहानी का मुख्य उद्‌देश्य यही है। पहले एक अनुच्छेद का आदर्श वाचन करें और अनुकरण वाचन कराऐँ। एक–एक विद्यार्थी से थोड़ा–थोड़ा अंश पढ़वाएँ। उच्चारण पर विशेष बल दें। कठिन शब्दों के अर्थ बताते जाएँ और उनका वाक्य प्रयोग विद्यार्थियों से कराएँ। कहानी का सारांश बच्चों से पूछें।*

मानो उनकी धमनियों में रक्त जम गया हो। महेश सोच रहा था कि कहीं ऐसा तो नहीं कि सुरेश ने उसका नाम प्रधान अध्यापक जी को बता दिया हो।

'हाय, अब क्या होगा ?' महेश सोच में पड़ गया। सुरेश को मारते वक्त वह इतना हिंसक हो गया, मानो उस पर शैतान सवार हो गया हो। उसने आगा देखा न पीछा, स्टिक से सुरेश के सिर पर कई वार किए। सुरेश जब लहूलुहान हो गया तो डरकर महेश व उसके दोस्त भाग गए।

तभी प्रधान अध्यापक जी की आवाज़ सुनकर महेश की तन्द्रा भंग हुई। वे कह रहे थे, ''मगर सुरेश ने मेरे बहुत पूछने पर भी उस छात्र का नाम नहीं बताया, जो उसे इस हालत में पहुँचाने का जिम्मेदार है। यदि वह छात्र अपनी गलती स्वीकार कर लेता है तो उसे कोई सजा नहीं दी जाएगी अन्यथा पता चलने पर उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।''

''हाँ, एक बात और,''प्रधान अध्यापक जी थोड़ा रुककर आगे बोले। ''इस बार वार्षिकोत्सव खेल रद्द किया जाता है। खेल अगर आपस में सहयोग, प्यार की भावना का संचार करने में असफल रहता है तो कोई फ़ायदा नहीं ऐसे आयोजनों का, जो आपस में ईर्ष्या और द्वेष की भावना को जन्म दें। खेल अगर खेल की भावना से खेला जाए तभी अच्छा है। अच्छा, अब आप सब जा सकते हैं।''

सभी छात्रों का उत्साह ठंडा पड़ गया।

उधर महेश के मन में उथल–पुथल मची हुई थी। वह ग्लानि के कारण स्वयं से भी नज़रें नहीं मिला पा रहा था। वह सोच रहा था कि सुरेश चाहता तो उसे सज़ा दिला सकता था। फिर उसने मन–ही–मन अपनी गलती स्वीकार की और प्रधान अध्यापक जी के पास जा पहुँचा।

''सर, मुझे माफ कर दीजिए। मैं ही सुरेश की इस हालत का जिम्मेदार हूँ ,'' कहते हुए महेश की आँखों से आँसू निकल पड़े।

''मैं जानता था कि तुम जरूर आओगे। तुम्हें गलती का अहसास हो गया, यही मैं चाहता था। तुम सुरेश से माफी माँगो, तुमने उसे गहरा आघात पहुँचाया है,'' प्रधान अध्यापक जी बोले।

''सर, एक विनती है आपसे,'' महेश आँसू पोंछते हुए बोला। ''आप वार्षिकोत्सव खेल रद्द न कीजिए। मैं वायदा करता हूँ कि हम खेल को खेल की भावना से ही खेलेंगे। उसे ईर्ष्या का कारण नहीं बनने देंगे।''

''ठीक है,'' प्रधान अध्यापक जी बोले।

नियत समय पर खेलोत्सव शुरू हुए। जैसा हमेशा होता आया था, सुरेश इस बार भी सभी प्रतियोगिताओं में विजयी रहा। सभी शिक्षकों के मन में आशंका थी कि कहीं फिर कोई हादसा न हो, मगर सबकी आशंका के विपरीत महेश आगे बढ़ा और सुरेश से बोला, ''बधाई हो सुरेश, वास्तव में मेहनत ही सफलता की हकदार होती है।''

"तुम ऐसा क्यों सोचते हो," सुरेश बोला। अगली बार तुम्हें भी सफलता जरूर मिलेगी। मैं तुम्हें प्रैक्टिस कराऊँगा। बोलो स्वीकार है।"

महेश की आँखों में आँसू आ गए। बोला, "क्या तुम मेरे दोस्त बनोगे ?"

"क्यों नहीं ?"

सुरेश और महेश दोनों प्रधान अध्यापक जी के पास पहुँचे। प्रधान अध्यापक जी खुश थे कि उनका प्रयास बेकार नहीं गया।

शब्दार्थ

जाहिर	–	प्रकट	लहूलुहान	–	खून से लथपथ
उम्मीद	–	आशा करना	तन्द्रा	–	ध्यान
अव्वल	–	प्रथम, पहला	ईर्ष्या	–	जलन
ख़िलाफ	–	विरोधी, उल्टा, प्रतिकूल	आशंका	–	संदेह, शंका
आघात	–	चोट, मार	हकदार	–	अधिकारी होना, वारिस
ग्रहण	–	लेना, स्वीकार करना	प्रयास	–	प्रयत्न, कोशिश
स्टिक	–	हॉकी खेलने की छड़ी	हादसा	–	दुर्घटना
हिंसक	–	मारनेवाला, हिंसा करनेवाला	खचाखच	–	बिल्कुल जगह न होना
आयोजन	–	किसी कार्य का होना/करना			

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 सुरेश ने महेश की शिकायत प्रधान अध्यापक जी से क्यों नहीं की ?

प्रश्न 2 प्रधान अध्यापक जी ने वार्षिकोत्सव रद्द करने की बात क्यों की ?

प्रश्न 3 महेश सुरेश से ईर्ष्या क्यों करता था ?

प्रश्न 4 प्रधान अध्यापक जी ने विशेष मीटिंग क्यों बुलाई थी ?

प्रश्न 5 महेश को आत्मग्लानि क्यों हुई ?

प्रश्न 6 क्या महेश ने सुरेश के साथ ठीक किया ? अगर तुम महेश की जगह होते तो क्या करते ?

प्रश्न 7 महेश और सुरेश में से तुमको कौन अच्छा लगा और क्यों ?

भाषातत्व और व्याकरण

- शिक्षक श्रुतलेख के लिए एक कहानी बोलें और बच्चे सुनकर लिखें। उसके बाद शिक्षक बारी – बारी से लिखी हुई कहानी पढ़कर सुनाने को कहें।

प्रश्न 1 निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखो और वाक्यों में प्रयोग करो।

क. भनक लग जाना ख. कहासुनी हो जाना ग. आगा देखा न पीछा

घ. चेहरा पीला पड़ जाना ङ. कान भरना च. शैतान सवार होना

पढ़ो और समझो

महेश के मन में उथल–पुथल मची हुई थी।

महेश ग्लानि के कारण महेश से भी नजरें नहीं मिला रहा था।

महेश सोच रहा था कि सुरेश चाहता तो महेश को सजा दिला सकता था।

फिर महेश ने मन–ही–मन महेश की गलती स्वीकार की।

और महेश प्रधान अध्यापक जी के पास जा पहुँचा।

इस अनुच्छेद में 'महेश' शब्द का प्रयोग कई बार हुआ है जो पढ़ने में खटकता है। इसे निम्नलिखित प्रकार से भी लिखा जा सकता है:

महेश के मन में उथल–पुथल मची हुई थी।

वह ग्लानि के कारण स्वयं से भी नजरें नहीं मिला रहा था।

वह सोच रहा था कि सुरेश चाहता तो उसे सजा दिला सकता था।

फिर उसने मन ही मन अपनी गलती स्वीकार की।

और वह प्रधान अध्यापक जी के पास जा पहुँचा ।

इन पंक्तियों में 'महेश' के स्थान पर 'वह', 'स्वयं', 'उसे', 'उसने', 'अपनी', 'वह' शब्दों का प्रयोग हुआ है। **संज्ञा के स्थान पर जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें सर्वनाम कहते हैं। 'वह', 'स्वयं', 'उसे', 'उसने', 'अपनी' सर्वनाम शब्द हैं।**

लोभी काका एक बार बीमार हो गया। खर्च के डर से लोभी काका वैद्य से औषधि भी नहीं खरीदना चाहता था। बैगा के पास जाने पर लोभी काका को एक नारियल लाने का हुकुम हुआ। नारियल खरीदने लोभी काका को लोभी काका के गाँव के दुकानदार के यहाँ जाना पड़ा।

प्रश्न 1 उपर्युक्त अवतरण को पढ़ो और रेखांकित के स्थानों पर उचित सर्वनामों का प्रयोग करते हुए अनुच्छेद को पुनः लिखो।

- एक वचन से बहुवचन बनाना–

क. यह आदमी गन्ना लाया था।

ख. यह आदमी गन्ने लाया था। या ये आदमी गन्ने लाए थे।

''क'' वाक्य को बहुवचन में परिवर्तित करके ''ख'' वाक्य बना है।

प्रश्न 2 नीचे लिखे वाक्यों को बहुवचन में परिवर्तित करके पुनः लिखो।

क. बकरी चना खा गई। ख. चरवाहा भैंस चराने गया।

ग. छात्र का उत्साह ठंडा पड़ गया। घ. लेखक ने कहानी लिखी।

- विशेषण–

क. महेश ताजे फल लाया।

ख. सुरेश पाँचवीं कक्षा में पढ़ता है।

ग. रेणु सुंदर लड़की है।

घ. रेखा ने थोड़ा पानी पिया।

ङ सलमा ने एक लीटर दूध माँगा।

इन वाक्यों में 'ताजे', 'पाँचवीं', 'सुंदर', 'थोड़ा', 'एक' क्रमशः फल, कक्षा, लड़की, पानी और दूध' की विशेषता बता रहे हैं। **संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, संख्या, मात्रा आदि बतानेवाले शब्दों को 'विशेषण' कहते हैं।**

प्रश्न 3 अब निम्नलिखित विशेषण शब्दों का प्रयोग करते हुए खाली जगह भरो–

(दस, भारतीय, मीठे, छोटे)

क. रमेश................मीटर कपड़ा लाया।

ख. राजेश के पास.............फल हैं।

ग. रवि .... नागरिक है।

घ. राहुल .... बच्चों को पढ़ाता है।

किसी को सम्मान देने के लिए हम उसके नाम के बाद 'जी' जोड़ देते हैं–जैसे गुरु जी, पिता जी। यह 'जी' शब्द–मूल शब्द से हटकर लिखा जाता है।

रचना

- खेल के आयोजन के साथ किन बातों का ध्यान रखना चाहिए, उनकी सूची बनाओ।

गतिविधि

- कहानी को नाटक के रूप में तैयार करो और कक्षा में प्रस्तुत करो।

- क्लब बनाएँ –

  - तुम्हें अपने स्कूल में एक क्लब बनाना है, जो स्कूल में खेल – कूद के कार्यक्रमों की तैयारी करेगा।

- इस क्लब में शामिल होने वालों की सूची बनाओ।
- इसे चलाने के बारे में नियम सोचकर लिखो।
- क्या इसे चलाने के लिए नियम जरूरी है या नहीं ? कारण भी बताओ।

योग्यता–विस्तार

- अपने प्रदेश में प्रचलित विभिन्न प्रसिद्ध खेलों और उनके खिलाड़ियों के बारे में जानकारी एकत्रित करो।
- समाचार पत्र में छपे किसी खेल समाचार की कटिंग कक्षा की दीवार पर चिपकाओ।

यह भी समझो

- विशेषण जिसकी विशेषता बताता है, उसे विशेष्य कहते हैं, जैसे–

  क. प्रधान अध्यक्ष पंत जी ने विशेष बैठक बुलाई थी।
  ख. नियत समय पर खेलोत्सव शुरू हुए।

- ऊपर के वाक्यों में –'विशेष बैठक' और 'नियत समय' शब्दों पर ध्यान दो। 'बैठक' की विशेषता 'विशेष' शब्द और 'समय' की विशेषता 'नियत समय' बना रहा है। –'बैठक' और 'समय' विशेष्य कहलाएँगे और 'विशेष' तथा 'नियत' विशेषण।

प्रश्न 5 इस पाठ में से विशेषण और विशेष्य के कोई चार जोड़े चुनकर लिखो।

पाठ 12

कूकू और भूरी

जहाँ पर चार बर्तन होते हैं, वे टकराते ही हैं। यही बात हम सब पर भी लागू होती है। आपस में तकरार होना, मनमुटाव होना स्वाभाविक है। लेकिन इससे यह नहीं होना चाहिए कि हमारे मनमुटाव का लाभ तीसरा उठाए। अगर हमारे मनमुटाव का लाभ कोई अन्य उठाना चाहे तो हम उसका मुँहतोड़ ज़वाब दें। कूकू और भूरी ने यही किया।

दो मुर्गियाँ थीं– कूकू और भूरी। दोनों एक पुराने दड़बे में रहती थीं। दोनों को डींग मारने और शान बघारने का बहुत शौक था। आप सोचते होंगे कि कूकू और भूरी ज़्यादातर समय साथ–साथ बिताती थीं इसलिए शायद उनमें अच्छी दोस्ती होगी। परन्तु ऐसा बिल्कुल भी नहीं था। दोनों आपस में बहुत ही कम बातचीत करती थीं।

एक दिन कूकू ने डींग मारी, ''मेरे नए अंडे तो दुनिया में सबसे सुंदर हैं, एकदम रेशम की तरह चिकने हैं।''

भूरी भला कहाँ चुप रहनेवाली थी, ''नहीं, ऐसा नहीं है। मेरे अंडे सबसे ज्यादा खूबसूरत हैं। देखो न, वे मोतियों की तरह चमक रहे हैं।''

''मेरे अंडे कोरे कागज़ की तरह सफेद हैं,'' कूकू बोली।

शिक्षण–संकेत : *रोटी के टुकड़े के लिए झगड़ती हुई दो बिल्लियों के झगड़े का लाभ एक बन्दर ने उठाया। यह कहानी सुनाते हुए बच्चों को बताइए कि आपस में झगड़ा हो तो उसे आपस में ही सुलझा लें। अगर कोई तीसरा उससे लाभ उठाना चाहे तो उसे मुँहतोड़ जवाब दें। इतना बताकर अनुच्छेद का आदर्श वाचन करें और अनुकरण वाचन कराएँ। बच्चों को छोटे–छोटे समूह में बाँटकर उन्हें एक–एक अनुच्छेद को पढ़ने के लिए दें और उनसे उस अनुच्छेद पर चर्चा करें। अन्त में पूरे पाठ पर बच्चों से चर्चा करें।*

"मेरे अंडे एकदम दूध की तरह उजले हैं," भूरी ने जवाब दिया।

दोनों मुर्गियों के बीच नोंक–झोंक चलती रही।

"देखना, जब मेरे अंडों में से चूजे निकलेंगे तो वे भी मेरी तरह खूबसूरत होंगे," यह कहकर कूकू दड़बे के फर्श पर कूदी और धूप में इतराकर चलने लगी।

भूरी भला कहाँ चुप रहनेवाली थी। वह भी सूखी घास पर अपने पंख फैलाकर थिरकने लगी, "मेरे चूजे कितने खूबसूरत होंगे!"

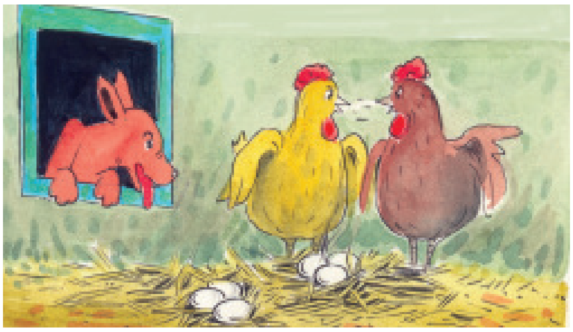

दोनों मुर्गियाँ अपनी खूबसूरती का बखान और गुणगान करने में इतनी व्यस्त थीं कि उनका दड़बे की खिड़की की ओर ध्यान ही नहीं गया।

खिड़की की दूसरी तरफ एक कुत्ता बैठा था। उसने दोनों मुर्गियों को शेखी मारते हुए सुना। वह वहीं रुक गया और मौके की तलाश करने लगा।

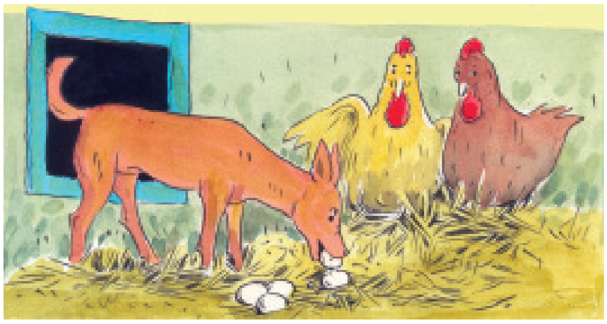

कुत्ते को जैसे ही मौका मिला वह मुर्गियों के दड़बे में कूद पड़ा। एक जोर का धमाका हुआ! दोनों मुर्गियों के घोंसले तहस–नहस हो गए और चारों तरफ सूखी घास उड़ने लगी।

जिस रास्ते कुत्ता आया था वह उसी रास्ते से चुपचाप हवा में गायब हो गया।

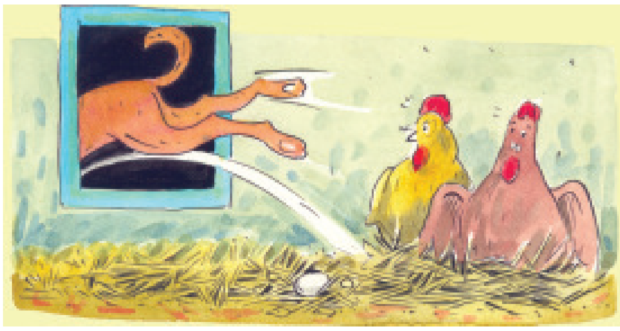

काफी देर बाद कूकू और भूरी को होश आया। सब कुछ पहले जैसा ही था। परंतु अपने घोसलों में पहुँचते ही मुर्गियाँ घबरा गईं।

"यह सब तुम्हारी गलती के कारण ही हुआ," दोनों मुर्गियाँ एक–दूसरे को दोष देने लगीं।

तभी उन मुर्गियों को पीछे से किसी चीज़ के लुढ़कने की आवाज़ सुनाई दी। कूकू और भूरी ने तुरंत मुड़कर देखा। उन्हें वहाँ एक अंडा पड़ा मिला।

कूकू और भूरी दोनों ज़ोर से चीखीं, "यह अंडा मेरा है!"

उसके बाद दोनों में जमकर लड़ाई हुई। कूकू को कोई शक नहीं था। वह सोचती थी कि अंडा उसी का है। दूसरी ओर भूरी को भी पक्का विश्वास था कि वह अंडा उसी का है।

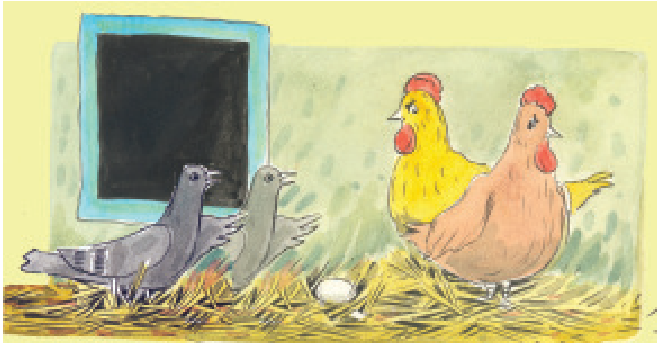

अंत में कूँकूँ करते दो कबूतरों ने उन्हें टोका।

''अगर तुम दोनों ऐसा करोगी, तो यह इकलौता अंडा भी धीरे–धीरे ठंडा हो जाएगा। अगर तुम दोनों जल्दी नहीं करोगी तो यह अंडा भी बाहर पड़े–पड़े मर जाएगा और फिर झगड़ने के लिए कोई चूजा ही नहीं बचेगा। तुम दोनों चाहो तो इस चूजे को आपस में मिलकर पाल सकती हो।''

कूकू और भूरी दोनों ने एक–दूसरे को शक की निगाहों से देखा। ''एक साथ मिलकर पालना! असंभव! यह कभी नहीं हो सकता।''

''चलो, मैं अंडे पर पहले बैठती हूँ,'' कूकू ने निर्णय लेते हुए कहा, ''तुम अंडे को बाद में सेना।''

''नहीं, पहले मैं,'' भूरी ने कहा। ''उसके बाद तुम बैठना।''

एक–दूसरे से सहयोग करना तो कूकू और भूरी ने कभी सीखा ही नहीं था। बस आपस में झगड़ा ही करती रहती थीं।

दोनों मुर्गियाँ दिन–रात एक–दूसरे से इस तरह लड़ते–लड़ते तंग आ गईं। उन्हें पता था कि वे एक–दूसरे के विचारों को बिल्कुल नहीं बदल पाएँगी। अंत में दोनों चुप होकर बैठ गईं।

दिन बीतते गए।

कभी–कभी कबूतर मुर्गियों के दड़बे के पास आकर रुकते और अंडे की प्रगति का हालचाल पूछते।

इधर कूकू और भूरी बिना हिले–डुले बैठी रहतीं। वे एक–दूसरे की पड़ोसी हैं, इसे भी मानने से इंकार करतीं।

इतने दिनों तक कुत्ता केवल एक चीज के बारे में सोचता रहा कि वह दड़बे में उस आखिरी अंडे को क्यों छोड़ आया। उसे बार–बार अंडे की याद सता रही थी। वह दड़बे में वापस जाकर उस अंडे को खाना चाहता था।

"दड़बे में पहुँचकर मैं उस अंडे के साथ–साथ उन दोनों मुर्गियों को भी हज़म करूँगा।" इस मंशा के साथ कुत्ता दड़बे की ओर बढ़ा।

इस बीच दोनों मुर्गियों के बीच में अनबन और बढ़ गई। अगर वे एक–दूसरे से बात करतीं तो उसका कारण होता शिकायत करना।

''गुनगुनाना बंद करो।''

''अपने पंजे हिलाना बंद करो।''

''थोड़ी दूर खिसको।''

दोनों गुस्से से तमतमा रही थीं।

तभी कहीं से एक मक्खी भिनभिनाती हुई दड़बे में घुस आई। मक्खी भिन–भिन करती और चारों ओर उड़ती। कभी वह कूकू की नाक पर बैठती और कभी भूरी की पीठ को गुदगुदाती। अंत में मक्खी से दोनों मुर्गियाँ परेशान हो गईं।

तभी मक्खी कूकू की चोंच के पास उड़ती हुई आई।

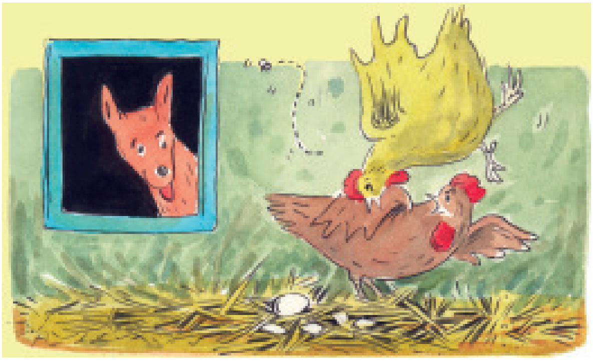

भूरी मक्खी को पकड़ने के लिए उड़ी, परंतु वह मक्खी को पकड़ नहीं पाई।

भूरी, कूकू से जाकर धड़ाम से टकराई।

''देखो, इसने फिर से लड़ाई शुरू कर दी,'' कूकू चिल्लाई। कूकू तब ज़मीन पर कूदी और भूरी को पकड़कर खदेड़ने लगी।

कुत्ते को हमला बोलने का यही सही समय लगा।

ध–ड़ा–म करके कुत्ता खिड़की से कूदा।

पहले तो कूकू और भूरी एकदम सहम गईं। फिर वे दोनों हिम्मत बटोरकर कुत्ते का सामना करने के लिए आगे बढ़ीं।

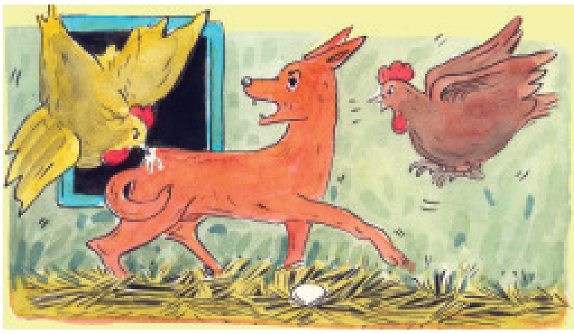

''कुत्ते को रोको,'' कूकू चिल्लाई।

''उसे अंडे के पास मत जाने दो,'' भूरी गुर्राई।

फिर क्या था। कूकू कुत्ते की पीठ पर कूदी और भूरी सिर पर कूदी। दोनों लड़ाकू मुर्गियों ने कुत्ते को अपनी पैनी चोंचों से गोदा और अपने नुकीले पंजों से नोंचा। कुत्ता बहुत चीखा–चिल्लाया परंतु मुर्गियों ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। अंत में कुत्ता किसी तरह खिड़की से कूदकर अपनी जान बचाकर भागा।

लड़ते–लड़ते दोनों मुर्गियाँ थककर एकदम पस्त हो गईं थीं। वे भी सुस्ताने के लिए दड़बे में लेट गईं।

''हमारी जीत हुई,'' कूकू ने कहा, ''हमने कुत्ते की जमकर पिटाई की।''

भूरी ने कहा, ''क्या कोई कभी सोच भी सकता था कि हम दोनों इतनी बहादुर निकलेंगी?''

'यह लड़ाई एक मुर्गी के बस की नहीं थी,'' भूरी ने कहा।

जीवन में पहली बार कूकू ने भूरी की बात मानी, ''हम कितने भाग्यशाली हैं कि हम दोनों एक साथ थे,'' कूकू ने कहा।

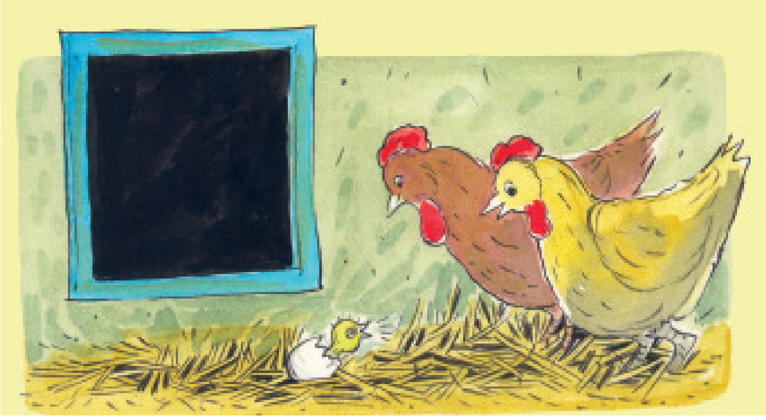

"चुप! ज़रा सुनो, भूरी ने कहा।

नीचे अंडे में से हल्की–सी आवाज आ रही थी।

"हमारा अंडा!" दोनों पहली बार मिलकर चिल्लाईं।

कूकू और भूरी दोनों घोंसले के पास आ गईं और उत्सुकता से अंडे को ताकने लगीं। पहले तो अंडे पर एक हल्की–सी दरार पड़ी। परंतु फिर बहुत देर तक कुछ भी नहीं हुआ। समय बीत ही नहीं रहा था। घंटे, दिनों जैसे लगने लगे। पर अंत में अंडा फूटा और उसके खोल में से एक नन्हा–सा, गीला–सा, एक हड्डीवाला चूजा बाहर निकला।

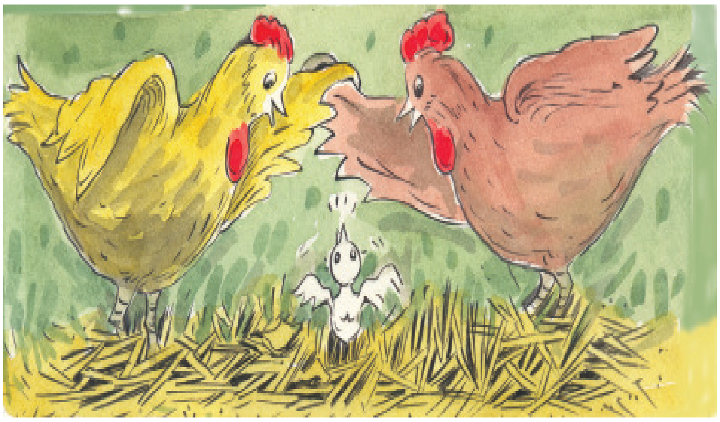

"कितना सुंदर है!" कूकू के मन में चूजे को देखकर लड्डू फूटने लगे।

"सच में कितना खूबसूरत है!" भूरी ने हामी भरते हुए कहा।

कूकू ने चूजे के पास से मुआयना करते हुए कहा, "देखो भूरी, इस चूजे की चोंच तो बिल्कुल तुमसे मिलती है।"

"परंतु इसके पैर तो बिल्कुल तुम्हारे पैरों जैसे हैं, कूकू" भूरी ने कहा। छोटे–से चूजे ने दोनों मुर्गियों की आँखों में प्यार से झाँककर देखा।

"हमारा चूजा दुनिया में सबसे प्यारा है," कूकू और भूरी दोनों गाने लगीं।

दुनिया में शायद ही कोई ऐसा चूजा हो जिसे इतना प्यार और दुलार मिला हो।

"ऐसा चूजा जिसकी एक नहीं बल्कि दो माँ हों।"

इसका मतलब यह नहीं कि कूकू और भूरी की बाद में कभी लड़ाई नहीं हुई।

वे खूब लड़ती भी थीं परन्तु उनमें गहरी दोस्ती भी थी।

शब्दार्थ

खूबसूरत	–	सुन्दर	उजले	–	साफ,सफेद
थिरकना	–	नाचना	तहस–नहस करना	–	बर्बाद कर देना
नोक–झोंक	–	परस्पर की छेड़छाड़			
दड़बा	–	मुर्गी के रहने का स्थान			
डींग मारना	–	घमंड में आकर अपनी तारीफ करना			
शान बघारना	–	स्वयं की विशेषताओं को बताना			

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 इस पाठ में एक कुत्ते का भी उल्लेख है। तुम उसको क्या नाम देना चाहोगे ?

प्रश्न 2 दोनों मुर्गियाँ किस प्रकार अपनी–अपनी प्रशंसा कर रही थीं ?

प्रश्न 3 कुत्ते को दड़बे पर आक्रमण करने का कब मौका मिला ?

प्रश्न 4 कबूतर ने मुर्गियों को क्या सलाह दी और क्यों दी ?

प्रश्न 5 दोनों मुर्गियों में अंत में कैसे दोस्ती हो गई ?

प्रश्न 6 कुत्ता यदि सभी अंडों को नष्ट कर देता तो क्या होता ?

प्रश्न 7 कूकू या भूरी यदि कुत्ते से अकेले मुकाबला करती तो क्या होता ?

भाषातत्त्व और व्याकरण

- श्रुतिलेख और शब्दार्थ की गतिविधि कराएँ।

प्रश्न 1 नीचे लिखे मुहावरों के अर्थ लिखो एवं वाक्यों में प्रयोग करो।

डींग मारना, शान बघारना, तहस–नहस कर देना, मन में लड्डू फूटना।

प्रश्न 2 ऐसे दो शब्द छाँटकर लिखो जिनकी मात्रा बदलने पर अर्थ बदल जाता है जैसे 'दिन' तथा 'दीन'।

प्रश्न 3 'ई' की मात्रा वाले पाँच स्त्रीलिंग शब्द लिखो।

प्रश्न 4 इस तालिका में चार–चार वर्णों से बने चार शब्द लिखे गए हैं। ये वर्ण एक निश्चित नियम से लिखे गए हैं। इनमें पशु है, एक पक्षी है, एक सब्जी है और एक फल है। सोचकर इनके नाम लिखो।

ख	क	क	सी	र	बू	ट	ता	गो	त	ह	फ	श	र	ल	ल

रचना

- इस चित्रकथा को पढ़कर इस पर एक एकांकी तैयार करो।

गतिविधि

- मुर्गियों के रहने का गत्ते का एक दड़बा तैयार करो।
- अंडे के छिलकों से जोकर का मुँह बनाओ।

योग्यता–विस्तार

- अलग–अलग जानवरों की आवाज स्वयं बोलो।
- भूरी और कूकू की तरह तुम और चित्रकथा ढूँढ़ो और अपने सहपाठियों के साथ बैठकर पढ़ो।

4T2EI4

पाठ 13 अनदान के परब–छेरछेरा

4TBAJR

छत्तीसगढ़ म कतको परब–तिहार हवय। छेरछेरा हमर कृषि–संस्कृति के परब आय। ये पाठ म छेरछेरा परब के बरनन हवय।

छत्तीसगढ़ म छेरछेरा ल पूस महिना के अँजोरी पाख म पुन्नी के दिन परब बरोबर मनाय जाथे। किसान अपन फसल ल मींज–कूट के कोठी–ढाबा म धर लेथें । इन्द्रदेव के किरपा ले जब खूब बरसा होथे त अच्छा फसल घलो होथे, तहाँ उँखर हिरदे झूम उठथे। छत्तीसगढ़ म ये दिन जम्मो लइका–सियान छेरछेरा माँगे बर जाथें अउ गीत गाथें–''छेरिक छेरा, छेर मरकनिन छेर छेरा, माई कोठी के धान ल हेरहेरा।''

दफड़ा, गुदुम अउ मोहरी के धुन म मगन हो के सब नाचथें। जब बिदागरी म देरी होवत देखथें त फेर दूसर गीत गाथें –

'' तारा रे तारा, अंगरेजी तारा, जल्दी–जल्दी बिदा करहू, जाबो दूसर पारा।''

''अरन–बरन कोदो दरन, जभे देबे तभे टरन।''

हमर छत्तीसगढ़ म एक ठन ये रिवाज घलो हवय। किसान मन अपन कोठार–बियारा म धान के मिंजई के आखरी दिन, उहाँ जतका मनखे रहिथें, सब झन ल धान निछावर करथें।

जब किसान के धान के मिंजई छेवर हो जाथे, तभे ये समिलहा छेवर ह ''छेरछेरा पुन्नी'' के परब के रूप म मनाय जाथे।

छेरछेरा परब के एक ठन लोककथा हवय। बहुत समे पहिली बड़हर मन अपन धान–कोदो ल मींज–कूट के कोठी–ढोली म भर लेवँय, अउ बनिहार मन अन्न के दाना बर तरसँय। पोट–पोट भूख मरँय।

अपन कमइया बेटा मन ल भूखे मरत धरती दाई देखे नइ सकिस। वो ह घोर अंकाल पार दिस। धरती बंजर होगे। एक ठन हरियर काँदी नइ जामिस। अन अउ पानी बर हाहाकार मचगे। ये बिपत ले बाँचे बर बड़हर मन धरती दाई के पूजा–पाठ करे लागिन।

सात दिन ले पूजा–पाठ करिन। पूजा–पाठ होइस, तेखर पाछू धरती दाई परगट होगे। सब झन जय–जयकार करिन। त धरती दाई ह बड़हर मन ल कहिस–''सब झन अपन–अपन उपज के

शिक्षण संकेत : लइका मन ले छत्तीसगढ़ के परब–तिहार के संबंध म चर्चा करँय। ओ मन ल बतावँय के जम्मो परब–तिहार बेरा बखत म आथें। परब अउ तिहार के संबंध म लइकामन ले प्रश्न पूछँय अउ उँकर मन से आने परब–तिहार के बारे म सुनय।

ठोमा–खोंची हिस्सा बनिहार ल दान करहू। कोनो ल छोटे अउ कोनो ल बड़े झन समझहू। कोनो गरीब होय, चाहे बड़हर, धान–कोदो के दान लेहू–देहू तभे अंकाल सिराही।''

देबी के बात ल सब झन हाँसी–खुशी ले मान लेइन। तब धरती दाई ह अन, पानी, साग–भाजी कंद–मूल, फल–फूल अउ जरी–बूटी के बरसा कर दिस। लोगन के मन म खुसियाली

छागे। आदिशक्ति माता ह शाकंभरी देवी के रूप म परगट होइस। ये दिन ल शाकंभरी जयंती के रूप म घलो मनाय जाथे।

छेरछेरा के दिन जम्मो मनखे जात–धरम, ऊँच–नीच अउ छोटे–बड़े के भेदभाव ल भुला के अन के दान माँगे बर जाथें। धान–कोदो के दान ल कोनो बर्तन म नइ करे जाय, टुकना, चरिहा नइ त सुपा–टोपली म देथें।

छत्तीसगढ़ म छेरछेरा के दिन हाँसी–खुशी के नंदिया–नरवा बोहाथे। कोनो बड़े न कोनो छोटे। सब झन बरोबर हवँय। आज ले सबो धान–कोदो के दान लेवत हवँय अउ देवत हवँय।

छेरछेरा परब हम सब झन ल जुरमिल के रहना सिखाथे। मिल–बाँट के खाये बर कहिथे। ये ह हमर छत्तीसगढ़ के जम्मो लइका–सियान बर बरोबरी के तिहार आय।

छेरछेरा के दिन धान या रूपया–पैसा के दान करे जाथे।

छत्तीसगढ़ी शब्द के हिन्दी अर्थ

परब	–	पर्व
अंजोरी पाख	–	शुक्ल पक्ष
पुन्नी	–	पूर्णिमा
हिरदे	–	हृदय
मोहरी	–	शहनाई
बिधुन होना	–	मग्न होना
कोठार	–	खलिहान
निछावर	–	न्यौछावर
छेवर	–	आखिरी/कार्य पूरा होना/कार्य समाप्त या पूर्ण होना
समिलहा	–	सम्मिलित/साँझा
काँदी	–	घास
सिराना	–	खत्म होना/अंत होना
जम्मो	–	सभी
बड़हर	–	धनी

प्रश्न अउ अभ्यास

गुरुजी कक्षा के लइकामन के दू दल बनाके मुँहअँखरा प्रश्न–उत्तर करावँय। कुछु प्रश्न अइसे हो सकत हें–

अ. छेरछेरा परब कोन महिना म मनाय जाथे ?

ब. काखर किरपा ले खूब बरसा होथे ?

प्रश्न 1 खाल्हे लिखाय प्रश्न के उत्तर लिखव।

क. छेरछेरा म कोन–कोन गीत गाय–जाथे ?

ख. काखर धुन म सब बिधुन हो के नाचथें ?

ग. अपन कमइया बेटा मन ल भूख मरत कोन देखे नइ सकिस ?

घ. बड़हर मन फसल ल मींज–कूट के कहाँ धर देवँय?

गतिविधि

गुरुजी लइकामन ल तीन दल म बाँटँय। खाल्हे दे बिन्दु ऊपर दल म चर्चा करावँय।

1. पाँच ठन अन के नाँव बतावव ?
2. खेती हमर बर कतका उपयोगी हवय ?
3. धान के खेती कतका किसम ले करे जाथे ?
4. लइकामन अलग–अलग समूह बना के छेरछेरा नाचे के अभ्यास करँय अउ छेरछेरा के गीत गा के कक्षा म सुनावँय।

भाषा–तत्व अउ व्याकरण

इहाँ हम सीखबो– पर्यायवाची शब्द अउ उल्टा अर्थ वाले शब्द।

प्रश्न 1. ये शब्द मन के पर्यायवाची हिन्दी शब्द लिखव–

महिना, दिन, धरती, बेटा, पानी

प्रश्न 2. खाल्हे लिखाय शब्द मन के उल्टा अर्थ वाले हिन्दी शब्द लिखव–

पुन्नी, जल्दी, जयंती

रचना

एक ठन सुआगीत लिख के ओकर हिन्दी म अर्थ लिखव।

गतिविधि

छत्तीसगढ़ के परब–तिहार के सूची बनावव अउ ऊँखर बारे म अपन गुरुजी ले जानकारी लेवव।

4TK6LE

पाठ 14

ऊर्जा की बचत

4TU2N2

लकड़ी, तेल, कोयला, पेट्रोल आदि ऊर्जा के स्रोत हैं। धीरे–धीरे इनके भंडार कम हो रहे हैं। बिजली भी ऊर्जा का स्रोत है। इसकी माँग बढ़ रही है, उत्पादन उतना नहीं हो रहा। इसलिए वैज्ञानिक ऊर्जा के नए स्रोत खोज रहे हैं और उसकी बचत के उपाय बता रहे हैं।

जाड़े के दिन थे। मीनू अपने आँगन में रस्सी कूद रही थी– एक, दो, तीन, चार .. पच्चीस तक आते–आते थककर हाँफने लगी। उसकी माँ सोलर कुकर में दाल, चावल, आलू रख रही थीं। इतने में मीनू की सहेली रजिया आई और बोली, ''मौसी, ये क्या कर रही हो ? इस बक्से में आप क्या रख रही हैं ?

मौसी कुछ जवाब देतीं इसी बीच मीनू ने हँसते हुए कहा, ''अरी मूर्ख, यह बक्सा नहीं है, सोलर कुकर है।''

''सोलर कुकर! मौसी यह क्या होता है ? यह किस काम आता है?'' अब मौसी बोलीं–''बेटी! इसे सोलर कुकर कहते हैं। सोलर का अर्थ है सूर्य का और कुकर का अर्थ है खाना बनाने का यंत्र। सोलर कुकर का अर्थ हुआ– वह यंत्र जिसमें सूर्य की ऊर्जा से खाना पकता है।''

''मौसी, हमें सोलर कुकर की आवश्यकता क्यों पड़ी ? खाना तो हम चूल्हे पर, स्टोव पर और गैस पर ही बनाते हैं।''

मौसी बोलीं, ''यह तो तू जानती है हमारे देश की जनसंख्या दिन दूनी, रात चौगुनी बढ़ती जा रही है। ऊर्जा के जो स्रोत हैं– लकड़ी, तेल, गैस आदि –वे धीरे–धीरे कम होते जा रहे हैं। इसलिए नए स्रोतों को खोजा जा रहा है। सूर्य से हमें बहुत ऊर्जा मिल सकती है। इसलिए वैज्ञानिकों ने यह नया यंत्र बनाया है– सोलर कुकर। इसमें खाना पकाया जाता है। इसमें खाना बहुत स्वादिष्ट पकता है।''

''मौसी, इसमें काले–काले डिब्बे रखे हैं, भीतर आइना लगा है। यह किसलिए?''

''हाँ, देख इसके ढक्कन में अंदर की तरफ बड़ा–सा आइना लगा है। उसके बाद यह एक पारदर्शी काँच की पट्टी है। बक्से के अंदर खाना रखने के लिए काले–काले डिब्बे हैं। बक्से के ढक्कन को खोलकर धूप की तरफ रखते हैं। सूरज की किरणें आइने से टकराकर अंदर वाले काँच पर सीधी पड़ती हैं। इसकी गर्मी से ही डिब्बों में रखा खाना पकता है।''

''मौसी, खाना तो गैस चूल्हे पर भी पक जाता है– फिर सोलर कुकर पर क्यों पकाया जाए।''

शिक्षण–संकेत : *पाठ प्रारंभ करने के पूर्व ऊर्जा पर चर्चा कीजिए। ऊर्जा के स्रोत पूछिए और बताइए। इनका महत्व भी बताइए। यह भी बताइए कि ऊर्जा के भंडार समाप्त होते जा रहे हैं। उनकी बचत करने के उपायों पर भी चर्चा करें। कक्षा को छोटे–छोटे समूहों में बाँट दें और उन्हें एक–एक अनुच्छेद पढ़ने और चर्चा करने को दें। फिर आदर्श वाचन करें और बच्चों से पढ़वाएँ। पढ़ने के साथ–साथ कठिन शब्दों का अर्थ बताते जाएँ और बच्चों से वाक्य प्रयोग कराते जाएँ।*

मौसी ने बताया, ''तू ठीक कहती है। खाना तो चूल्हे पर लकड़ी जलाकर, मिट्टी के तेल से जलनेवाले स्टोव पर या गैस के चूल्हे पर भी बनता है। लेकिन इन साधनों से खाना बनाने में जितनी ऊर्जा खर्च होती है, उससे बहुत कम ऊर्जा इस सोलर कुकर में लगती है। इससे सबसे बड़ा लाभ यह है कि हमें लकड़ी जलाने या मिट्टी का तेल जलाने या गैस जलाने पर जो खर्च होता है, सोलर कुकर पर ऐसा कोई धन खर्च करना नहीं पड़ता।''

''मौसी, लकड़ी या मिट्टी के तेल को बचाने का सवाल नहीं है। कभी बिजली की कमी हो जाती है, कभी पेट्रोल की कमी हो जाती है। इनको बचाने के भी उपाय होने चाहिए।''

''तू ठीक कहती है, बेटी! वैज्ञानिक दिन–रात इनको अधिक–से–अधिक बचाने के उपाय सोच रहे हैं। तूने वायु–ऊर्जा के संबंध में सुना होगा। वायु से बिजली पैदा की जा रही है। पवन–चक्कियाँ बनाई जा रही हैं, जो हवा की ऊर्जा से चलती हैं। पहाड़ों पर पानी की धार से बिजली पैदा की जाती है और उससे आटा–चक्कियाँ चलती हैं। अपने राज्य के गाँवों में गोबर गैस से बहुत ऊर्जा पैदा की जाती है, जो तरह–तरह से हमारे काम आती है।''

''मौसी, वैज्ञानिक तो ऊर्जा के नए–नए स्रोत खोज रहे हैं। हम लोगों को भी कुछ काम करना चाहिए।''

''बेटी! तूने बहुत अच्छी बात कही। अगर हर आदमी ऐसा सोचे तो हमारी सारी समस्याएँ दूर हो जाएँ। बिजली की बचत के लिए हम आसानी से यह कर सकते हैं कि जब प्रकाश या हवा की जरूरत न हो तो बिजली के बल्ब, ट्यूबलाइट, पंखे न चलाए जाएँ। बल्ब जलाने में अधिक मात्रा में बिजली खर्च होती है। उनके स्थान पर ऐसी ट्यूब लाइट या बल्ब जलाएँ जिनमें बिजली कम खर्च हो। विवाह–शादी, जन्म–दिन आदि अवसरों पर अधिक तड़क–भड़क न करें। इसी प्रकार नल से जितना पानी जरूरी हो, उतना ही लें। फालतू पानी न बहने दें। मोटर साइकिल, स्कूटर, कार का कम–से–कम उपयोग करें। हर चीज़ की बचत करना हमारी आदत बन जाए तो हमारी सारी समस्याएँ दूर हो जाएँ।''

''मौसी! मैं तो मीनू के साथ बैठकर होमवर्क करने आई थी। आपने इतनी अच्छी बातें बताईं। मैं भी ये बातें अपनी सहेलियों को बताऊँगी। मीनू, अब चल, थोड़ा पर्यावरण अध्ययन पढ़ लें।''

शब्दार्थ

ऊर्जा	–	शक्ति	स्वादिष्ट	–	अच्छा स्वाद देनेवाला
यंत्र	–	मशीन	आइना	–	दर्पण

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 सोलर कुकर का वर्णन करो।

प्रश्न 2 सोलर कुकर से क्या–क्या लाभ हैं ?

प्रश्न 3 पेट्रोल की बचत हम कैसे कर सकते हैं ?

प्रश्न 4 बिजली की बचत किस प्रकार की जा सकती है ?

भाषा–तत्त्व और व्याकरण

- शिक्षक बच्चों से किसी एक अनुच्छेद का श्रुतिलेख लिखवाएँ।

प्रश्न 1 नीचे दिए गए शब्दों/वाक्यांशों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

अधिक–से–अधिक, नए–नए, तरह–तरह।

प्रश्न 2 निम्नलिखित वाक्यों को अलग–अलग प्रश्नवाचक शब्दों का प्रयोग कर बदलो।

क. हम लोगों को भी कुछ काम करना चाहिए।

ख. वैज्ञानिक ऊर्जा के नए स्रोत खोज रहे हैं।

ग. ऊर्जा की बचत के लिए उपाय होने चाहिए।

प्रश्न 3 'इक' लगाकर नए शब्द बनाओ, जैसे–

समाज + इक – सामाजिक

धर्म + इक – ———————— , परिवार + इक – ————————

साहित्य + इक – ———————— , अर्थ + इक – ————————

समझो

- आवश्यक में 'ता' जोड़कर बना है 'आवश्यकता'।

प्रश्न 4 स्वच्छ, नम्र, पवित्र शब्दों में 'ता' जोड़ो और नए शब्द बनाकर उनका वाक्यों में प्रयोग करो।

प्रश्न 5 इन शब्दों के विलोम शब्द लिखो।

अधिक, ठीक, सीधी, उपयोग, बनाना, अर्थ ।

रचना

- पानी को बचाने के कोई दस उपाय लिखो।

योग्यता–विस्तार

- यदि तुम्हारे आसपास गोबर गैस से चलनेवाला कोई यंत्र हो तो उसके संबंध में विस्तार से जानकारी लो।
- अपने घर में या आसपास के घरों में जाकर पता करो कि लकड़ी के चूल्हे में खाना बनाने में किन परेशानियों का सामना करना पड़ता है।
- शिक्षक की मदद से आसपास की चीजों से सोलर कुकर का मॉडल बनाओ।

4U3XPP

4UCTRC

पाठ 15 चूड़ीवाला

यह सोचना बिल्कुल गलत है कि छोटे लोगों का ईमान मूल्यवान वस्तुओं पर डिग जाता है। इस कहानी में एक छोटी बालिका ने अपने पिता के चोरी करने के कारनामे को बताकर यह सिद्ध कर दिया है कि छोटे लोग भी बहुत ईमानदार होते हैं।

मैं अपनी गुड़िया से खेल रही थी कि बाहर से किसी ने लंबी हाँक लगाई, 'चूड़ियाँ ले लो, चूड़ियाँ। फिर किसी ने कहा, ''अरे नन्हीं, बाहर आकर देखो तो। तुम्हारे लिए चूड़ियाँ लाया हूँ।''

मैं भागी–भागी बाहर गई तो देखा कि चूड़ीवाला सिर पर चूड़ियों की टोकरी रखे खड़ा है। उसने मुझे देखकर कहा, ''आओ नन्हीं, कुछ चूड़ियाँ खरीद लो।''

मैं बोली, ''मुझे चूड़ियाँ खरीदनी तो थीं, मगर खरीद नहीं सकती क्योंकि माँ बाहर गई हैं। पैसे कौन देगा ?''

''कोई बात नहीं। आओ, आकर चुन तो लो। मैं पैसे किसी और दिन आकर ले जाऊँगा।''

मैं थोड़ी देर सोचती रही। चूड़ीवाले ने मुस्कराकर पूछा, ''बिटिया, तुम्हें कौन–से रंग की चूड़ियाँ सबसे ज्यादा पसंद हैं ?''

'' नारंगी,'' मैंने उत्तर दिया और चूड़ियाँ भी चुन लीं। चूड़ीवाले ने वे छह चूड़ियाँ मुझे पहना दीं। तब तक माँ भी आ गईं और उन्होंने चूड़ीवाले को पैसे दे दिए।

कुछ दिनों बाद चाचा मेरे लिए एक सुन्दर–सी, बोलनेवाली गुड़िया ले आए। उसे पाकर मैं तो पुलकित हो उठी।

मैंने माँ से कहा, ''अम्मा, मैं अपनी गुड़िया के लिए भी चूड़ियाँ खरीदूँगी।''

माँ ने कहा, ''बेटी, जरूर लेना। चूड़ीवाले को आने दो।''

एक दिन गली में ''चूड़ियाँ ले लो, आओ लड़कियो, चूड़ियाँ ले लो,'' की आवाज़ सुनाई पड़ी। मैं अपनी गुड़िया को साथ लेकर, लपककर नीचे उतरी। मैंने चूड़ीवाले को बुलाया। वह चूड़ियों की टोकरी के साथ बरामदे में आकर बैठ गया।

उसने पूछा, ''अब कौन–सी चूड़ियाँ चाहिए ?''

मैंने उसे अपनी गुड़िया दिखाकर कहा, ''मेरी गुड़िया के लिए अच्छी–सी चूड़ियाँ दे दो।''

शिक्षण–संकेत : *बच्चों से फेरीवालों के संबंध में चर्चा करें। इनसे तुमको क्या लाभ होता है– पूछें और बताएँ। चूड़ियों के संबंध में भी चर्चा करें। पाठ का सारांश बता दें और छोटे–छोटे समूह में पाठ बाँट दें। बच्चे समूह में अनुच्छेद पढ़कर चर्चा करें। अपने–अपने समूह का सारांश कहलवाएँ। बाद में पाठ का वाचन करें और अनुकरण वाचन कराएँ। विद्यार्थियों के उच्चारण पर विशेष ध्यान दें। ड और ड़ के उच्चारण को स्पष्ट करें।*

चूड़ीवाले ने हँसकर कहा, ''हाँ, हाँ! क्या यह तुम्हारी बिटिया है ?''

''हाँ!''

उसने मेरी गुड़िया के लिए लाल चूड़ियाँ चुनकर निकालीं। फिर मेरी गुड़िया को देखकर बोला, ''बड़ी सुन्दर है गुड़िया तुम्हारी; बहुत महँगी होगी।''

''हाँ, बहुत कीमती है।''

''मेरी बेटी को भी ऐसी गुड़िया पसंद आएगी।''

''तुम्हारी बेटी भी है क्या ?''

''हाँ, तुम्हारी ही उम्र की होगी।''

''क्या उसके पास गुड़िया नहीं है ?''

''नहीं, हम गरीब आदमी हैं। ऐसी गुड़िया कहाँ से खरीदेंगे ?''

''चिंता मत करो। मैं चाचा से कहकर एक गुड़िया और मँगवा दूँगी। चूड़ियों के कितने पैसे देने हैं ?''

''पचास पैसे।''

''जरा मेरी गुड़िया का ध्यान रखना, मैं पैसे लाती हूँ।''

मैं लपककर ऊपर माँ के पास पैसे लेने गई लेकिन जब वापस नीचे पहुँची तो चूड़ीवाला जा चुका था और मेरी गुड़िया भी गायब थी।

''मेरी गुड़िया, मेरी गुड़िया.....'' मैं रोती हुई माँ के पास पहुँची।

''माँ, चूड़ीवाला मेरी गुड़िया ले गया। मेरी नई गुड़िया।''

''चूड़ीवाला! तुमने उसे गुड़िया क्यों दी ?'' माँ ने कहा और वे भागकर चूड़ीवाले को देखने बाहर निकलीं।

मैं रो रही थी।

मेरी माँ ने मुझे चुप किया और पड़ोसियों को भी सतर्क रहने के लिए कहा।

उस रात मैं रोती–रोती सोई। अगली सुबह मैं जल्दी ही उठ खड़ी हुई और खिड़की के पास बैठ गई। तभी मैंने देखा कि एक आदमी चादर ओढ़े हमारे घर की ओर आ रहा है। उसके साथ एक छोटी लड़की भी थी। मैं उस आदमी का चेहरा नहीं देख पा रही थी।

हमारे घर के सामने आकर वह आदमी रुक गया। उस आदमी ने लड़की को एक पैकेट दिया और कुछ कहा।वह लड़की पैकेट पकड़े हुए हमारे फाटक के निकट आई। उसकी फ्राक गन्दी और फटी हुई थी।

मैं उसे फाटक के पास खड़े देख नीचे उतरी। मैंने लड़की से पूछा, ''तुम कौन हो ? क्या चाहिए ?'' वह कुछ देर देखती रही, फिर उसने पूछा ''तुम्हारी अम्मा कहाँ हैं ?''

''ऊपर हैं।''

लड़की ने सावधानी से पैकेट खोला। उसमें मेरी गुड़िया थी।

''अरे , यह तो मेरी गुड़िया है। तुम्हें कहाँ मिली ?''

वह ऐसे बोली, जैसे उसने मेरा प्रश्न सुना ही न हो। ''तुम अपनी गुड़िया ले लो। ये जो फाटक के पास खड़े हैं, मेरे पिता जी हैं। वे चूड़ियाँ बेचते हैं। जब वे मेरे लिए यह गुड़िया ले गए तो मुझे आश्चर्य हुआ कि वे इतनी कीमती गुड़िया कहाँ से लाए।'' कुछ देर रुककर उसने फिर कहना शुरू किया, ''हम गरीब हैं। ऐसी गुड़िया के बारे में मैं सपने में भी नहीं सोच सकती थी।''

मैं कुछ बोल न सकी। तभी चूड़ीवाला भी आगे आ गया। उसने चेहरे से चादर हटाई और धीमे स्वर में कहा, ''नन्हीं, अपनी गुड़िया ले लो। मैं इसे अपनी बेटी के लिए ले गया था। जब इसने सुना कि मैंने गुड़िया चोरी की है तो इसने इसे लेने से इंकार कर दिया।''

मैंने अपनी गुड़िया उठाई और गले से लगा ली और कहा –

''मुन्नी! धन्यवाद। मैं तुम्हें सदा याद रखूँगी।''

इतने में मेरी अम्मा फुर्ती से नीचे उतर आईं। जब उन्होंने पूरी कहानी सुनी तो वे बोलीं, ''चूड़ीवाले, ये पैसे लो। जाकर अपनी बेटी को गुड़िया खरीद देना।''

जैसे ही वे फाटक से बाहर निकले, मुन्नी मुड़कर मुस्कराई। मैंने हाथ हिलाया और उसने भी इसका उत्तर हाथ हिलाकर दिया।

शब्दार्थ

परिचित	–	जाना–पहचाना	सँभलकर	–	सावधानीपूर्वक
फाटक	–	बड़ा दरवाजा	सतर्क	–	सावधान
आश्चर्य	–	हैरानी, अचंभा			

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 नन्हीं की गुड़िया कौन ले गया और क्यों ?

प्रश्न 2 नन्हीं की माँ ने पड़ोसियों को चूड़ीवाले से सावधान रहने के लिए क्यों कहा ?

प्रश्न 3 चूड़ीवाले की बच्ची ने नन्हीं की गुड़िया क्यों लौटा दी ?

प्रश्न 4 तुम्हारी कोई प्रिय चीज खो जाने या नष्ट हो जाने पर तुम्हें कैसा लगता है ?

प्रश्न 5 चूड़ियाँ किस–किस पदार्थ से बनती हैं ?

प्रश्न 6 चूड़ीवाला अपना मुँह ढँककर क्यों आया था ?

प्रश्न 7 नन्हीं और मुन्नी दोनों में से तुम्हें किसका चरित्र अच्छा लगा? उसके चरित्र की विशेषताएँ लिखो।

प्रश्न 8 'दुकान' शब्द में 'दार' शब्द लगाने से शब्द बना 'दुकानदार'। इसी तरह तुम भी 'दार' लगाकर पाँच शब्द बनाओ और उन्हें अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

प्रश्न 9 जैसे 'चूड़ी बेचनेवाले को चूड़ीवाला कहते हैं, वैसे ही इन्हें क्या कहेंगे ?'

क. दूध बेचनेवाले को   ख. सब्जी बेचनेवाले को।

ग. रिक्शा चलानेवाले को।   घ. चाट बेचनेवाले को।

ङ. ताँगा चलानेवाले को ।

प्रश्न 10 चूड़ीवाले ने मुस्कराकर पूछा। इस वाक्य का अर्थ है – चूड़ीवाला मुस्कराया फिर उसने पूछा। अब इन वाक्यों को इसी प्रकार तोड़कर लिखो।

क. चूड़ीवाला गुड़िया लेकर चला गया ।

ख. पुलिस ने चोर से डाँटकर पूछा।

ग. मैंने उसे अपनी गुड़िया दिखाकर कहा।

प्रश्न 11 नीचे लिखे सभी शब्द स्त्रीलिंग शब्द हैं। इनमें बाईं ओर के सभी शब्द आ की मात्रा (ा) से अन्त होने वाले हैं और दाईं ओर के शब्द 'ई' की मात्रा (ी) से अंत होनेवाले हैं। इनके बहुवचन बनाने के नियम समझो।

एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
गुड़िया	गुड़ियाँ	चूड़ी	चूड़ियाँ
चुटिया	चुटियाँ	खिड़की	खिड़कियाँ
खटिया	....	लड़की	....
डिबिया	....	बिजली	....
पटिया	....	चींटी	....
बछिया	....	सीटी	....
चिड़िया	....	सीढ़ी	....

रचना

- किसी फेरीवाले पर आठ वाक्य लिखो।

योग्यता विस्तार

- तुम्हारे आसपास इसी तरह की घटना घटी हो या तुम्हारी जानकारी में ऐसी घटना हो तो उसे कक्षा में सुनाओ।
- ऐसी कौन – कौन सी चीजें हैं जो तुम्हारे घर के पास ही बिकने आती है।
- जब ये अपना सामान बेचने आते हैं तो बताओ कैसी आवाजें निकालते हैं।

  सब्जीवाला – ....

  दूधवाला – ....

  कबाड़ी वाला – ....

पाठ 16

राजिम मेला (सहेली को पत्र)

4UVKUH

पत्र लिखने की आवश्यकता सभी को पड़ती है। सभी परिवारों के कुछ लोग, संबंधी, मित्र देश–विदेश में दूर–दूर तक रहते हैं। धनवान लोग उनसे दूरभाष पर बात करते रहते हैं, पर सभी लोगों के यहाँ तो दूरभाष नहीं हैं। वे पत्र–व्यवहार के द्वारा एक–दूसरे का कुशल–क्षेम पूछते हैं और आवश्यक जानकारी देते हैं। इस पाठ में एक सहेली ने एक मेला देखने के बाद इस पत्र में उसका वर्णन किया है। पत्र पढ़कर पत्र लिखने का तरीका जानो।

शंकर नगर, रायपुर
(छत्तीसगढ)
22 दिसम्बर, 2010

प्यारी सहेली श्वेता,

मैं यहाँ पर अच्छी हूँ। तुम कैसी हो? तुम्हारी पढ़ाई कैसी चल रही है। हमारे स्कूल में अभी खेल प्रतियोगिताएँ चल रही हैं। मैं भी खो–खो और लम्बी दौड़ में भाग ले रही हूँ। तुम्हारे यहाँ खेल प्रतियोगिताएँ कब हैं? अरे हाँ, एक बात मैं तुम्हें बताना चाह रही थी। कुछ दिन पहले मैं राजिम अपने मामा के यहाँ गई थी, माँ और पिता जी के साथ। पिता जी के लिए मामा का पत्र आया था कि आप लोग सत्तो को लेकर आ जाइए; यहाँ माघ का मेला लगा है। बस, हम लोग चल पड़े। मामा–मामी से मिलना और मेला देखना– एक पंथ दो काज। जिस बस में हम लोग राजिम जा रहे थे, उसमें बहुत ज्यादा भीड़ थी। थोड़ी देर तो हमें बस में सीट ही नहीं मिली; हमें खड़े–खड़े ही जाना पड़ा। लेकिन फिर बैठने के लिए सीट मिल गई। बस में मैं बैठी रास्ते भर मेले के बारे में ही सोचती रही। वहाँ तरह–तरह के झूले होंगे, अच्छे–अच्छे खिलौने मिलेंगे। यह सोचते–सोचते हम कब राजिम पहुँचे, पता ही नहीं चला।

घर पर मामा हम लोगों का इंतजार कर रहे थे। मुझे देखकर उन्होंने मुझे गले से चिपका लिया। वे बोले, ''सत्तो, तू आ गई। सब लोगों के साथ मेला देखने में आनंद आएगा। शाम को सब मेला देखने चलेंगे।''

मैंने मामा से पूछा, ''मामा, इस मेले के बारे में कुछ बताइए।''

वे बोले, ''यह मेला हर वर्ष माघ माह में लगता है। पूरे महीने यहाँ खूब रौनक रहती है। माघी पूर्णिमा को इस मेले की शुरुआत होती है और महाशिवरात्रि को समापन। यहाँ भगवान राम का राजीवलोचन मंदिर और कुलेश्वर महादेव मंदिर हैं। यहाँ तीन नदियों–सोंढूर, पैरी और

शिक्षण–संकेत : *पत्र के संबंध में उसकी आवश्यकता और महत्त्व पर चर्चा कीजिए। पोस्टकार्ड, अन्तर्देशीय और लिफाफा, जिन पर पत्र भेजे जाते हैं, दिखाइए। इस पत्र के स्वरूप पर चर्चा कीजिए। किसने लिखा है, किसे लिखा है, कब लिखा है, क्या लिखा है, चर्चा के बिंदु हों।*

महानदी– का संगम होता है। इसलिए इसे त्रिवेणी संगम भी कहते हैं। राजिम को छत्तीसगढ़ का प्रयाग भी कहते हैं। मेले में बहुत सारे खेल–तमाशे आए हैं। तू देखेगी तो नाच उठेगी।''

हम लोग जल्दी–जल्दी नहाए, हमने खाना खाया और फिर हम मेला जाने के लिए तैयार हो गए। मामा जी के घर से मेले का स्थान थोड़ी ही दूर पर था। मेले से लाउडस्पीकर की आवाजें दूर–दूर तक सुनाई पड़ रही थीं। गाने भी हो रहे थे। बातें करते हुए हम लोग चल रहे थे। मामा जी पिता जी को राजिम के मंदिरों के बारे में बता रहे थे। मुझे तो उन बातों में कुछ मजा नहीं आ रहा था। मेरे मन में तो ऊँचे–ऊँचे, गोल–गोल झूले घूम रहे थे। खिलौनों की दुकानें, चाट दिमाग पर छा रही थीं। पन्द्रह–बीस मिनट में हम मेले में पहुँच गए।

मेले में खूब भीड़ थी। तरह–तरह की दुकानें सजी थीं। छोटे–बड़े कई तरह के झूले थे। कोई बहुत ऊँचे–ऊँचे थे तो कोई चक्कर में चलनेवाले थे। खिलौनों की दुकानें तरह–तरह के खिलौनों से सजी थीं। जगह–जगह गुब्बारेवाले खड़े थे। खाने–पीने की छोटी–छोटी दुकानें लगी हुई थीं। मामा ने पहले तो मुझे गोलवाले झूले में झुलवाया, फिर ऊँचेवाले झूले में वे खुद भी मेरे साथ बैठकर झूले। ऊँचेवाले झूले में बैठकर बहुत मजा आया। इसके बाद मैंने एक बड़ा–सा गुब्बारा खरीदा। तभी माँ ने एक दुकान की तरफ मेरा ध्यान दिलाया जहाँ पर एक बहुत ही सुंदर गुड़िया रखी थी। वह गुड़िया मुझे बहुत पसंद आई। मैंने उस गुड़िया के लिए माँ से कहा तो माँ ने मुझे गुड़िया दिला दी। पिता जी ने मुझे एक बड़ा–सा खिलौना दिलाया। एक दुकान पर बहुत सुंदर चूड़ियाँ थीं। मैंने खुद अपने लिए चूड़ियाँ खरीदीं। मेले से निकलते हुए एक दुकान के कोने से लगकर मेरा गुब्बारा फूट गया। मामा हम

सबको चाट की एक दुकान पर ले गए। सबने चाट खाई। रात होते–होते हम मामा के घर पहुँच गये।

मेले के बारे में बताने लायक बहुत सारी बातें हैं लेकिन अब नींद आने लगी है। जब मिलूँगी तब और बातें बताऊँगी।

तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा में

तुम्हारी सहेली
सरिता

शब्दार्थ

पूर्णिमा	–	वह रात जिसमें पूरा चाँद निकलता है ।
त्रिवेणी	–	जहाँ तीन नदियाँ आपस में मिलती हैं।
प्रतिवर्ष	–	हर साल
प्रयाग	–	इलाहाबाद (प्रयाग प्राचीन नाम हैं)
समापन	–	समाप्त होना/खत्म होना

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 यह पत्र कहाँ से लिखा गया है ?

प्रश्न 2 इस पत्र का मुख्य विषय क्या है ?

प्रश्न 3 यह पत्र किसने किसको लिखा ?

प्रश्न 4 राजिम का मेला किस माह में भरता है ?

प्रश्न 5 राजिम किन नदियों के संगम पर बसा है ?

प्रश्न 6 किसी भी मेले में बच्चों के आकर्षण की कौन–सी चीज़ें होती हैं ?

प्रश्न 7 त्रिवेणी से क्या तात्पर्य है ?

प्रश्न 8 राजिम को छत्तीसगढ़ का प्रयाग क्यों कहा जाता है ?

प्रश्न 9 तुमने किसी मेले में झूला अवश्य झूला होगा। अपने अनुभव लिखो।

भाषातत्त्व और व्याकरण

- पाठ के अंत में दिए शब्दों एवं शब्दार्थों को शुद्ध उच्चारण सहित पढ़ो और समझो। पुस्तक को बंद कर लो। एक बच्चा इन शब्दों को बोले, शेष बच्चे लिखें। लिखने के बाद बच्चे अभ्यास पुस्तिकाओं को एक दूसरे से अदल–बदलकर उनकी जाँच करें।

समझो

- कभी–कभी एक ही शब्द का एक साथ दो बार प्रयोग होता है। ऐसे शब्दों को 'पुनरुक्त शब्द' कहते हैं; जैसे –

  "सड़क के किनारे–किनारे वृक्ष लगे हैं।"

प्रश्न 1 इसी तरह के चार पुनरुक्त शब्द बनाओ और उनका वाक्यों में प्रयोग करो।

प्रश्न 2 नीचे चौखटे में कुछ शब्द और उनके विपरीत अर्थवाले शब्द दिए गए हैं। इनकी जोड़ी बनाकर लिखो।

सुख, प्रसन्न, असफल, अप्रसन्न, ऊँचा, दुख, बुद्धिमान,
सफल, पसन्द, थोड़ा, नीचा, बुद्धिहीन, नापसंद, बहुत।

प्रश्न 3 दिए गए शब्दों के अंत में 'इक' लगाकर नए शब्द बनाओ। जैसे,

उदाहरण–	सप्ताह	–	साप्ताहिक	वर्ष	–	वार्षिक
	परिवार	–	....	दिन	–	————————
	मास	–	....	संसार	–	————————
	व्यवहार	–	....	शरीर	–	————————
	समाज	–	....	देह	–	————————

प्रश्न 4 इस पत्र में एक लड़की ने दूसरी लड़की को 'प्रिय सहेली' लिखा है। तुम बताओ कि इनको पत्र लिखने पर क्या लिखकर संबोधित करोगे/करोगी–

– मित्र/सहेली को
– बड़े भाई/पिता जी/माँ को
– छोटे भाई को/छोटी बहिन को।

रचना

- अपनी किसी यात्रा या विद्यालय के किसी कार्यक्रम का वर्णन करते हुए अपने/मित्र अपनी सहेली को पत्र लिखो।

पढ़ो और जानो

क. अपने से बड़ों को पत्र लिखते समय संबोधन में आदरणीय, पूजनीय, पूजनीया, पूज्य लिखते हैं।

ख. अपने से छोटों को पत्र लिखते समय संबोधन में आयुष्मान, चिरंजीव तथा बराबर उम्रवालों को प्रिय, बंधुवर, मित्रवर, प्रिय सहेली आदि लिखते हैं।

ग. पत्र के ऊपर दाहिनी ओर पत्र पर भेजनेवाले का पता और उसके नीचे दिनाँक लिखा जाता है।

यह भी जानो

- जनश्रुतियों के अनुसार राजिम नाम की तेली समाज की एक महिला इस स्थान पर रहती थी। एक दिन वह रास्ते में पत्थर से टकराकर गिर गई । उसके सिर पर रखा तेल का पात्र भी गिर गया। वह डर गई कि घर पर उसे डाँट पड़ेगी। वह पत्थर पर बैठकर रोने लगी। अंत में पात्र उठाकर जब वह घर जाने लगी तो उसने देखा कि पात्र में तेल भरा हुआ है। वह रोज उस पत्थर पर अपना पात्र रखकर तेल भरने लगी। एक दिन वह उस पत्थर को ही उठाकर घर ले आई। वहाँ के राजा जगतपाल को स्वप्न में मंदिर बनाने का आदेश मिला लेकिन स्वप्न में जो शिलाखंड दिखाई दिया था, वह राजिम तेलिन के पास था। राजा ने वह शिलाखंड उससे लेकर मंदिर में स्थापित किया। इसी से इस जगह का नाम राजिम पड़ा।
- राजिम से पंचकोसी की यात्रा जुड़ी है। छत्तीसगढ़ में पाँच ज्योतिर्लिंग हैं। वे सभी परस्पर आठ से दस किलोमीटर की दूरी पर ही हैं। बीच में कुलेश्वर महादेव हैं। इसी की चारों दिशाओं में श्री चम्पेश्वर नाथ (चंपारण्य), श्री ब्रझनेश्वर (ब्रझणी), श्री फणेश्वरनाथ (फिंगेश्वर) और श्री कोपेश्वर नाथ (कोपरा) स्थित हैं। इनसे ही पंचकोसी यात्रा जुड़ी है जो कार्तिक–अगहन से प्रारम्भ होकर पूस–माघ तक पूरी होती है।
- राजिम में श्री खंडोवा–तुलजा भवानी का मंदिर भी है। यह मराठा समाज की तीर्थस्थली के रूप में प्रसिद्ध है। इसका मूल मंदिर पुणे शहर में है।
- दानेश्वरदास मंदिर को गुफावाले महादेव का मंदिर भी कहा जाता है।

योग्यता विस्तार

- छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध तीर्थ–स्थलों की जानकारी एकत्रित करो।
- शाला वार्षिकोत्सव के अवसर पर अपने शिक्षकों की सहायता से शाला प्रांगण में मेले का आयोजन करो।

4V5GWA

4VECXX

पाठ 17 चल रे तुमा बाटे–बाट

तुमन अपन घर म ककादाई, ममादाई अउ बबा मन ले कतको किसम के कहानी सुने होहू। ये कहानी मन म मनोरंजन के संगे–संग गियान के गोठ घलो रहिथे। अइसन कहानी ल लोककथा कहिथें। आवव, ये पाठ म अइसने एक ठन छत्तीसगढ़ी लोककथा पढ़न। ये लोककथा म एक डोकरी अउ ओकर बेटी के कहानी हवय। बेटी ह अपन दाई ल बघवा, भलुवा ले बँचाये बर का उपाय करथे, उही ल ये पाठ म पढ़बो।

तइहा के बात आय। एक गाँव म एक झन डोकरी राहय। ओकर राहय एक झन बेटी, तेन ह अपन ससुराल चल दे राहय।

डोकरी के बेटी के गाँव ह अब्बड़ दुरिहा म राहय। डोकरी ल अपन बेटी के खूबेच सुरता आवय। फेर का करय, बेटी के ससुराल के रद्दा म जंगल अउ पहाड़, तिंहाँ बघवा, भलुवा अउ चितवा के माड़ा। डर के मारे रद्दा रेंगना घलो मुस्कुल होवय।

एक दिन डोकरी ह अपन बेटी घर जाय बर सोंचिस। बने–बने रोटी–पीठा बना लिस अउ मोटरी म बाँध के चलते बनिस।

जंगल भीतरी डोकरी बिचारी रेंगत राहय। थोकिन दुरिहा म डोकरी ह बघवा ल देखके, काँपे लगिस। बघवा ह तीर म आथे अउ गुर्रा के कहिथे– ''अवो डोकरी, मोला गजब भूख लागत हे। मैं तोला खाहूँ।''

तब डोकरी कहिथे–''बेटा, देख तो मैं ह जर–बुखार मैं दुबरागे हवँव। अपन बेटी घर जावत हँव। उँहा ले बने मोटा के आहूँ तब तैं मोला खा लेबे।''

बघवा खुश हो के कहिथे–''हव,हव बने काहत हस डोकरी दाई। जा, झटकुन लहुट आबे।'' डोकरी लकर–धकर रेंगिस, तहाँ थकगे। थोकिन सुरतइस, फेर रेंगिस। रेंगते–रेंगत उही रद्दा म डोकरी ल फेर एक ठन भलुवा ह छेंक लिस। भलुवा अपन चूँदी ल हला के

शिक्षण–संकेतः– पाठ ल शुरू करे के पहिली कोनो अउ दूसर लोककथा ल सुनावँय। फेर पाठ के आदर्श वाचन करँय। तेकर पाछू अनुकरण वाचन करावँय। लइका मन के उच्चारण ऊपर ध्यान जरूर देवँय।

कहिथे–'' ये ओ डोकरी दाई, मोला अब्बड़ भूख लागे हे। मैं तोला नइ छोड़ँव। तोला खाहूँ।'' तब डोकरी ह कहिथे–''सुन बेटा भलुवा, मैं अपन बेटी घर मोटाय बर जावत हँव। उहाँ ले आहूँ त मोला खा लेबे।'' भलुवा ह डोकरी के बात ल मान के ओला छोड़ दिस। डोकरी बिचारी आगू डाहर रेंगिस। थोकिन दुरिहा म चितवा संग भेंट होगे। चितवा घलो खाहूँ किहिस, त डोकरी ह वोहू ल समझाइस। चितवा घलो मानगे।

रेंगत, बइठत, सुरतावत डोकरी अपन बेटी घर पहुँचगे। डोकरी ल देख के ओकर बेटी अब्बड़ खुश होगे। महतारी–बेटी दूनो झन दुख–सुख गोठियाइन। बने–बने खाइन। डोकरी गजब दिन रहिगे अपन बेटी घर। जब ओकर मन भरगे, त अपन बेटी ल कहिथे–''तोर घर राहत गजब दिन होगे बेटी। अब मैं अपन घर जाहूँ।'' त बेटी कहिथे,''आज भर अउ रहि जा दाई, काली जुवार खा–पी के बने चल देबे।''

डोकरी कहिस–''का होही बेटी, एक दिन अउ रहि जहुँ। फेर मोला जाये बर हिम्मत नइ होवत हे। मैं ह संसो–फिकर म परगे हँव।''

''का संसो–फिकर म परे हस दाई? थोकिन महुँ ल बता ना।'' डोकरी के बेटी ह पूछिस।

''कुछु उपाय बताबे त काम बन जाही बेटी,'' डोकरी कहिस।

''हव दाई, मँय ह तोला बनेच उपाय बताहूँ।'' बेटी ह कहिस।

तब डोकरी ह ऊपरसँस्सी ले के कहिथे–''सुन बेटी, मँय ह जब तोर घर आवत रहेंव त रद्दा म बघवा, भलुवा अउ चितवा मन मोला खाय बर छेंके रहिन। त ओ मन ल मैं ह भुलवारे हँव। बेटी घर ले मोटा के आहूँ, त मोला खा लेहू। वो तीनों झन मोर अगोरा म रद्दा देखत बइठे होहीं। अब मैं का करँव।''

अपन दाई के बात ल सुन के बेटी कहिस–''तैं थोरको संसो–फिकर झन कर दाई।''

थोकिन म डोकरी के बेटी ह एक ठन लम्बा अउ बने चाकर तुमा लाइस । ओला बने खोल दिस। तीन ठन छेदा कर दिस, नाक अउ आँखी बर। उही तुमा म डोकरी घुसरगे। फेर रद्दा म ढुला के डोकरी के बेटी कहिस–''चल रे तुमा बाटे–बाट।''

अब तुमा ह रद्दा म ढुलत–ढुलत जावत राहय।

रद्दा म चितवा ह आगू मिलिस। चितवा ह तुमा ल पूछिस ''कस रे तुमा, डोकरी ल तैं देखे हस का? तुमा भीतरी ले डोकरी कहिस–''डोकरी देखेन न फोकली, चल रे तुमा बाटे–बाट।

तुमा ढुलगत–ढुलगत भालू डहर चल दिस।

भलुवा डोकरी के अगोरा म राहय। तुमा ल देखिस त पूछिस–''ये जी तुमा, तैं डोकरी ल देखे हस का?''डोकरी फेर कहिस– ''डोकरी देखेन न फोकली, चल रे तुमा बाटे–बाट।''

आखिर म बधवा घलो मिलिस। तुमा ल उहू पूछिस, त डोकरी ह फेर ओइसने कहिस–''डोकरी देखे न फोकली, चल रे तुमा बाटे–बाट।''

तुमा संग ढुलगत–ढुलगत डोकरी अपन गाँव पहुँचगे। तहाँ तुमा ल फट ले फोर के।

डोकरी राहय तेन मुस्कावत उठगे।

छत्तीसगढ़ी शब्द के हिन्दी अर्थ

छेंकना	–	रोकना	चूँदी	–	बाल
तुमा	–	गोल लौकी	मोटरी	–	गठरी
बाट	–	रद्दा, रास्ता	झटकुन	–	जल्दी
तइहा	–	बहुत पुरानी	लहुटना	–	लौटना
डोकरी	–	बुढ़िया	लकर–धकर	–	जल्दी–जल्दी
सुरता	–	याद	महतारी	–	दाई, माँ
रद्दा	–	रस्ता	अगोरना	–	प्रतीक्षा करना
माड़ा	–	माँद, गुफा	संसो फिकर	–	चिंता, फिक्र
रेंगना	–	चलना	चाकर	–	चौड़ा
ऊपर सँस्सी	–	गहरी साँस			

प्रश्न अउ अभ्यास

- कक्षा ल दू दल म बाँट के एक–दूसर ले प्रश्न–उत्तर करावँय। कुछ प्रश्न मन अइसे हो सकत हे–

क. ये पाठ म काकर कहानी हवय ?

ख. ये पाठ म कोन–कोन जानवर के नाँव आय हे, तुमन ऊँकर नाँव बताव ?

प्रश्न 1 खाल्हे लिखाय प्रश्न के उत्तर लिखव–

अ. डोकरी कै झन बेटी राहय ?

ब. जंगल म कोन–कोन जानवर के माड़ा राहय ?

स. डोकरी ल देख के कोन अब्बड़ खुश होगे ?

द. अपन दाई के बात ल सुनके बेटी का कहिथे ?

प्रश्न 2 कहानी ल धियान लगाके पढ़व, अउ लिखव, ये बात ल कोन ह, काकर ले केहे हे–

क. "कुछु उपाय बताबे त काम बन जाही बेटी।"

ख. "चल रे तुमा बाटे–बाट।"

ग. "डोकरी देखेन न फोकली चल रे तुमा बाटे–बाट।"

घ. "अवो डोकरी, मोला गजब भूख लागत हे। मैं तोला खाहूँ।"

प्रश्न 3 कारन बता के उत्तर लिखव।

अ. डोकरी अपन बेटी घर काबर गइस ?

ब. बघवा ह डोकरी ल काबर छेंक लिस ?

भाषा–तत्व अउ व्याकरण

इहाँ हम सीखबो– स्त्रीलिंग शब्द बनाना अउ पर्यायवाची शब्द लिखना।

प्रश्न 1 'ई' के मात्रा ले अंत होवइया पाँच ठन स्त्रीलिंग शब्द लिखव। जइसे–"डोकरी"।

प्रश्न 2 खाल्हे लिखाय शब्द ले वाक्य बना के लिखव–

मुस्कुल, रोटी–पीठा, उपाय, डोकरी, बाटे–बाट।

प्रश्न 3 खाल्हे लिखाय शब्द के हिन्दी पर्यायवाची शब्द लिखव –

महतारी, रद्दा, जंगल, आँखी, चूँदी, संसो

रचना

- जंगल–पहार के चित्र बनाके रंग भरव।

गतिविधि

- ये कहानी ल पढ़के एक ठन नाटक तियार करव अउ ओला कक्षा म प्रस्तुत करव।

योग्यता विस्तार

- अलग–अलग जानवर के आवाज निकालव।
- "चल रे तुमा बाटे–बाट" जइसन अउ लोककथा खोजव अउ कक्षा म सुनावव।

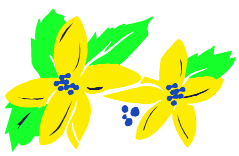

4VN8ZK

4VX528

पाठ 18

पिंजरे का जीवन

मनुष्य हो या पशु–पक्षी, बंधन किसी को पसंद नहीं। मनुष्य अपने स्वार्थ–साधन, सेवा और मनोरंजन के लिए पशु–पक्षियों को पालता है। वे विवशता में बंधन में बँधते हैं, जबकि वे मन से स्वच्छन्द जीवन जीना चाहते हैं। इस कविता में बंदी तोते को सुखी जानकर एक मैना स्वयं उसके स्थान पर बंदी बन जाती है और तोते को स्वतंत्र कर देती है लेकिन बाद में वह पिंजड़े के जीवन से दुखी होती है।

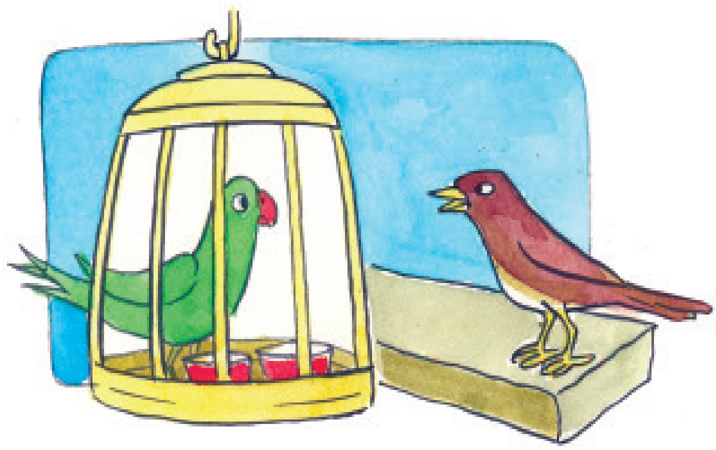

पिंजरे के तोते से बोली
छत पर बैठी मैना।
''बड़े मजे से तुम रहते हो
बोलो ये सच है ना ?

बैठे–बैठे मिल जाते हैं
भाँति–भाँति के व्यंजन।
काश! मुझे भी मिल पाता
जो इस पिंजरे का जीवन।

भोजन औ जल की तलाश में
हम दिन–रात भटकते।
तब जाकर दो–चार अन्नकण
अपने पल्ले पड़ते ।।

शिक्षण–संकेत : *पालतू पशुओं और पक्षियों के संबंध में कक्षा में चर्चा कीजिए। छात्रों पूछिए कि यदि उन्हें बहुत अच्छा खाना दिया जाए, रहने के लिए सब आराम दिए जाएँ और उन्हें एक कमरे में बंद रखा जाए तो कैसा लगेगा? यही बात पक्षियों के संबंध में है। हम अपने मनोरंजन के लिए उन्हें पिंजरों में बंद रखते हैं– यह बहुत अनुचित है। कविता में मैना तोते के सुखमय जीवन के लालच में स्वयं पिंजड़े में बंद हो जाती है। और फिर वही स्वतंत्रता पाने को पछताती है कविता को लय–स्वरपूर्वक सुनाएँ और बच्चों से अनुकरण वाचन कराएँ। एक–एक विद्यार्थी से एक–एक छन्द वाचन कराएँ। बाद में कविता का अर्थ स्पष्ट करें।*

उस पर हरदम चिड़ीमार का
डर रहता है मन में।
हिंसक जीव–जंतुओं का
भीषण खतरा है वन में।।''

तोता बोला, ''अगर सोचती
हो सुख है पिंजरे में,
मुझे निकालो, आओ अंदर
मैं जाता हूँ वन में।।

तुम ले लो पिंजरे का सुख
मैं लूँ जंगल की पीड़ा।
बड़े मजे से रहना इसमें,
करना निशि–दिन क्रीड़ा।।''

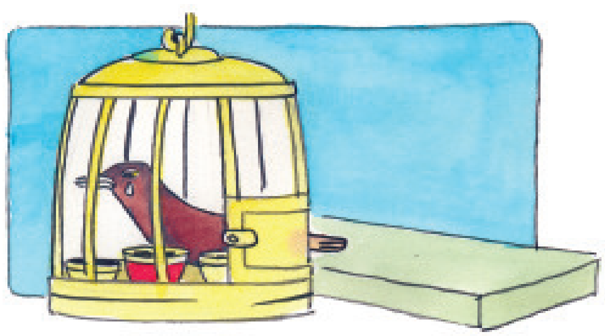

मैना ने खोला दरवाजा
जैसे ही पल–छिन में।
मैना को अंदर कर तोता
खुद उड़ गया गगन में।।

चार दिनों में ही वह मैना
अंदर तड़प रही थी।
उड़ने को अकाश में ऊँचे
तबीयत फड़क रही थी।।

भाँति–भाँति के भाते थे
उसको ना कोई व्यंजन।
ना आराम सुहाता उसको
ना पिंजरे का जीवन।।

शब्दार्थ

भाँति–भाँति	– तरह–तरह	भीषण	–	भयंकर
व्यंजन	– खाने की अच्छी वस्तुएँ	क्रीड़ा	–	खेल
हिंसक	– मारनेवाला	सुहाना	–	मनोहर, अच्छा लगना
छिन	– क्षण	पल–छिन	–	थोड़ी देर में।
चिड़ीमार	– पक्षियों को पकड़ने तथा मारनेवाला।			

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 इस कविता में किस–किस पक्षी के बीच बातचीत बताई गई है ?

प्रश्न 2 पक्षी के लिए पिंजरे का जीवन दुखदाई क्यों होता है ?

प्रश्न 3 अगर तुम्हें खाने–पीने, आराम करने का सारा सामान रखकर किसी कमरे में बंद कर दिया जाए, तो तुम्हें कैसा लगेगा ? अपने शब्दो में लिखो।

प्रश्न 4 पिंजरे के बाहर रहनेवाली मैना ने पिंजरे में बंद तोते से यह क्यों कहा, 'बड़े मजे में तुम रहते हो।'

प्रश्न 5 पिंजरे में बंद हो जाने पर मैना दुखी क्यों रहने लगी ?

प्रश्न 6 "हिंसक जीव–जन्तुओं का भीषण खतरा है वन में", वन में पक्षियों के हिंसक जीव–जन्तु कौन–कौन–से होते हैं ?

भाषातत्व और व्याकरण

- पाठ में से कविता की चार पंक्तियाँ शिक्षक बोलें और बच्चों को लिखने को कहें। परस्पर कॉपियाँ अदल–बदलकर उन्हें जाँचने को बच्चों से कहें। अंत में शिक्षक इन पंक्तियों को श्यामपट पर लिखें और बच्चों को पुनः जाँच करने को कहें।

पढ़ो और समझो

- 'गैंडा' और 'मच्छर' दोनों पुल्लिंग शब्द हैं। इनके स्त्रीलिंग रूप नहीं होते। इसी प्रकार चील और मैना स्त्रीलिंग शब्द हैं। इनके पुंल्लिंग रूप नहीं होते।

प्रश्न 1 ऊपर उदाहरण में बताए शब्दों के अतिरिक्त पुल्लिंग और स्त्रीलिंग शब्द लिखो जिनके लिंग नहीं बदलते।

- दो शब्द हैं– अगर और मगर। दोनों शब्दों में कोई मात्रा नहीं लगी है।

प्रश्न 2 ऐसे ही पाँच बिना मात्रा वाले शब्द लिखों जिसके अंत में 'र' वर्ण आता हो।

- कभी–कभी दो विलोम शब्दों का प्रयोग एक साथ होता है, जैसे

करते निशि–दिन क्रीड़ा

हम दिन–रात भटकते।

यहाँ निशि–दिन का अर्थ है, रात–दिन, जो कि एक दूसरे के विलोम शब्द हैं।

प्रश्न 3 ऐसे दो वाक्य लिखो जिनमें इसी प्रकार के दो विलोम शब्दों का प्रयोग हुआ हो।

प्रश्न 4 'हर' में 'दम' लगाकर 'हरदम' शब्द बना है। 'हर 'लगाकर दो शब्द और बनाओ और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

प्रश्न 5 नीचे लिखे शब्दों की समान ध्वनिवाले दो–दो शब्द लिखो

जैसे – तोता, होता, सोता।

जंगल, मंगल, दंगल।

प्रश्न 6 व, म, न, र, क वर्णों में से दो–दो वर्णों के जितने शब्द बना सकते हो, बनाकर लिखो, जैसे – मन, कम।

समझो– कुछ शब्दों के लिए दो या अधिक शब्दों का भी प्रयोग होता है जैसे गंगा के लिए सुरसरि, भागीरथी भी कहते है। इन्हें गंगा का पर्यायवाची शब्द कहते हैं;

प्रश्न 7 दिए गए शब्दों में से शब्द और उनके पर्यायवाची शब्द अलग–अलग करके लिखो।

जंगल, आकाश, दिन, जल, गंगा, दिवस, नीर, नभ, कानन, दिवा, स्वप्निल, वन

रचना

- इस कविता को कहानी के रुप में लिखो।

गतिविधि

- गत्ते, कागज, रुई आदि की सहायता से पक्षियों के नमूने बनाओ, उनमें रंग भरो।

योग्यता–विस्तार

- नीचे लिखी कविता पढ़ो और कविता में ही पूछे गए प्रश्न का उत्तर कक्षा में बताओ।

कौन तुम्हें अच्छा लगता है ?
बंदी तोता, उड़ता तोता ?

नभ में उड़नेवाला तोता
टें–टें करनेवाला तोता ।
पेड़ों पर जो सो जाता है
जो चाहे सो फल खाता है।

वन में उड़े बाग में आए
कुतर–कुतर कच्चे फल खाए।
पिए नदी का ठंडा पानी
करे जंगलों में मनमानी।

दूध–भात जो नित खाता है,
पिंजरे में जो सो जाता है।
राम–राम कहता है दिन भर
पिंजरे में रहता जीवन भर।

जो न कभी उड़ पाया वन में
जो न उड़ेगा अब आँगन में।
जिसे न अब कुछ भी करना है
पिंजरे में जीना–मरना है।

कौन तुम्हें अच्छा लगता है ?
बंदी तोता, उड़ता तोता ?

4H713V

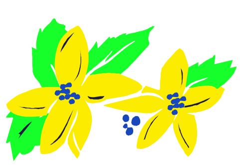

पाठ 19

हाय मेरी चारपाई

4WFW5I

होली का त्योहार बुराई पर अच्छाई की विजय का त्योहार है। लेकिन इसमें बहुत–सी बुराइयाँ आ गई हैं। हँसी–खुशी के वातावरण में त्योहार मनाने की जगह इस त्योहार पर लोगों का परस्पर एक दूसरे पर कीचड़ डालना, गालियाँ देना, चोरी के सामान से होली का झाड़ भरना आदि कार्यों से इस त्योहार का महत्व कम होता जा रहा है। इसी तरह की एक घटना इस कहानी में पढ़िए।

बात उन दिनों की है, जिन दिनों मैं निकर पहनता था; यानी छोटा भी था और शरारती भी। मौज–मस्ती के दिन थे; चिंता–फिक्र कोई थी नहीं।

इस वर्ष की तरह उस वर्ष भी होली आई थी। मुहल्ले में होली जलाने के लिए लकड़ी जमा करने की समस्या थी सो आसपास से जितने लकड़ी–फट्ठे इकट्ठे किए जा सकते थे, वे पर्याप्त नहीं थे। इसलिए तय हुआ कि मुहल्ले के पीछे की पहाड़ी से कुछ सूखी झाड़ियाँ काट लाई जाएँ।

आखिर होली का दिन आ गया, लेकिन होली का झाड़ अभी पहाड़ नहीं हो पाया था। दोस्तों की चिंता को देखते हुए मैंने मंडली को सुझाव दिया, ''क्यों न कुछ लोगों के यहाँ से चारपाई, लकड़ी के फाटक, कुर्सी–मेज और ऐसा कोई भी सामान, जो बाहर रखा हो, उठा लिया जाए। इस काम में मुहल्ले के खूसट और गुस्सैल लोगों का विशेष ध्यान रखा जाए, जिन्होंने हमें वर्ष भर सताया है।'' सुझाव मान लिया गया।

अब क्या था ? सारी मंडली चार–पाँच टुकड़ों में बँट गई। हर टुकड़े में तीन–चार लड़के थे। सबने अपने–अपने घरों से दूर के इलाके चुने और हमारा अभियान शुरू हो गया। फिर तो तरह–तरह का लकड़ी का सामान आता रहा और टूट–टाटकर होली के झाड़ में पड़ता रहा। कुछ ही घंटों में झाड़ का पहाड़ बन गया।

मैं अपनी टुकड़ी का नेतृत्व कर रहा था; मेरे साथ तीन लड़के और थे। हम लोगों ने मास्टर रतिलाल और पंडित गंगाप्रसाद की चारपाई, मन्ने साव का फाटक, हरीचंद चूनेवाले की सीढ़ी और न जाने क्या–क्या होली की भेंट चढ़ा दिया।

शिक्षण–संकेत : *कक्षा में होली के हुड़दंग पर चर्चा करें। बच्चों से पूछें कि वे उस दिन क्या–क्या करतब करते हैं। इनसे कुछ लोगों को प्रसन्नता होती होगी तो कुछ दुखी भी होते होंगे। उनसे पूछिए कि लोगों को दुख पहुँचाकर खुश होना अच्छी बात है क्या ? हम किसी की वस्तु को लाकर होली में जला देते हैं और खुश होते हैं लेकिन जब अपनी वस्तु इस तरह चोरी की जाने के बाद राख हो जाती है तो हमें दुख होता है। ऐसे कामों का परिणाम सोचकर ही काम किए जाएँ।*

आखिर होली जलने का समय भी आ गया। होली–दहन आरंभ हुआ और देखते–ही–देखते झाड़ का पहाड़ धू–धूकर जलने लगा। टूटे टीन के कनस्तर का ढोल बजा, मंडली के बदन में थिरकन हुई और फिर जो हुड़दंग शुरू हुआ, तो रात के बारह बजे जाकर रुका।

घर पहुँचकर मैंने देखा कि सब लोग परेशान बैठे हैं। माँ और पिता जी के चेहरों पर गुस्से और परेशानी के भाव हैं। मैंने सोचा, आज तो मेरी खैर नहीं। डरते–डरते जैसे ही घर में कदम रखा कि पिता जी की सख्त आवाज सुनाई दी,''क्यों रे! तेरी चारपाई कहाँ है ?''

''मेरी चारपाई ?'' मैंने चौंककर कहा। ''हाँ, हमने सारा घर देख लिया। कहीं नहीं मिली। कहाँ रखी थी निकालकर ?'' माँ ने पूछा।

मुझे काटो तो खून नहीं। अब से कुछ देर पहले की सारी मस्ती उतर गई। हुड़दंग का रंग फीका पड़ गया। टूटे हुए कनस्तर की ठक्–ठक् कानों में गूँजने लगी।

मैंने कोई जवाब नहीं दिया, मगर तभी मुझे ध्यान आया कि हमारी मंडली के जो छोकरे इस तरफ आए थे, उनमें बिल्लू भी था और उन दिनों मेरी बिल्लू से कुछ खटक भी रही थी। बात साफ हो चुकी थी कि हो–न–हो यह जरूर बिल्लू का ही काम है।

खैर, जैसे–तैसे मन को समझाया कि अब जो होना था, सो हो गया। मगर उस रात तो मुझे फर्श पर दरी बिछाकर ही सोना पड़ा। अब भी जब–जब होली आती है, मैं अपनी चारपाई को जरूर याद कर लेता हूँ।

शब्दार्थ

शरारती	–	शरारत करनेवाला
हुड़दंग	–	उपद्रव
अभियान	–	किसी विशेष कार्य के लिए योजना बनाकर उस पर कार्य करना।
कनस्तर	–	खाली पीपा
होली दहन	–	होली जलना/होली जलाना
खटकना	–	बुरा लगना, अनबन होना
थिरकन	–	ठुमक–ठुमककर चलना, नाचते हुए चलना।

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 होली के झाड़ को पहाड़ जैसा ऊँचा बनाने के लिए बच्चों को क्या करना पड़ा ?

प्रश्न 2 होली के लिए कहाँ–कहाँ से सामान लाया गया ?

प्रश्न 3 होली के लिए सामान उठाने में किन लोगों का विशेष ध्यान रखा गया ?

प्रश्न 4 कहानी के नायक को होली–दहन की रात फर्श पर ही दरी बिछाकर क्यों सोना पड़ा?

प्रश्न 5 माँ और पिता जी के चेहरे पर गुस्से और परेशानी के भाव क्यों थे ?

प्रश्न 6 बच्चों की टोली ने लोगों के घरों से होली जलाने के लिए जो सामान उठाया, क्या तुम्हारी दृष्टि में यह काम उचित था ? क्यों?

प्रश्न 7 होली पर लोग हुड़दंग मचाते हैं, दूसरों को परेशान भी करते हैं। तुमने किस तरह से होली मनाई ? क्या तुम हुड़दंग मचाना उचित समझते हो ?

भाषातत्व और व्याकरण

- शिक्षक पाठ में से किसी एक अनुच्छेद का श्रुतिलेख बच्चों को लिखाएँ। पुस्तक में से शब्द देखकर तथा अनुच्छेद देखकर बच्चों को इसकी जाँच करने को कहें।

प्रश्न 1 दुख और शोक की अवस्था में लोगों के मुँह से 'हाय' शब्द निकलता है। इसी प्रकार निम्नलिखित अवसरों पर हमारे मुँह से कौन से शब्द निकलते हैं –

प्रसन्नता में / आश्चर्य में /उत्साह में /चिन्ता में ।

प्रश्न 2 नीचे दिए गए मुहावरों के अर्थ लिखो और वाक्यों में प्रयोग करो।

क. काटो तो खून नहीं ख. रंग फीका पड़ जाना

ग. झाड़ का पहाड़ बन जाना घ. भेंट चढ़ा देना।

प्रश्न 3 नीचे दिए गए शब्दों/शब्द–समूहों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

मौज–मस्ती, आसपास, डरते–डरते, देखते–ही–देखते, मंडली, परेशान, शरारत, चौंककर, नेतृत्व।

प्रश्न 4 नीचे लिखे वाक्यों को सही करके पुनः लिखो।

क. रिमझिम–रिमझिम पानी की बूंद बरस रहा है।

ख. हर टुकड़ा में तीन–चार लड़के था।

ग. हर वर्ष का तरह होली आया।

घ उन दिनों मेरा बिल्लू से खटक रहा था।

ङ. लड़कियाँ हंस रहे हैं।

- नीचे लिखे वाक्य को पढ़ो।

  ''राम ने रावण को मारा''।

  इस वाक्य में 'ने' शब्द राम व रावण को जोड़ने का काम कर रहा है। 'को' शब्द रावण व मारा को जोड़ने का काम कर रहा है।

प्रश्न 5 'ने' और 'को' का प्रयोग करते हुए दो वाक्य बनाकर लिखो।

- शब्दों का वाक्य में प्रयोग करके शब्दों के लिंग के बारे में पता किया जा सकता है, जैसे भैंस काली होती है। कौआ काला होता है। काला, काली; होता है, होती है शब्दों से पुल्लिंग और स्त्रीलिंग की जानकारी हो सकती है।

प्रश्न 6 निम्नलिखित शब्दों में जो स्त्रीलिंग हैं उन्हें स्त्रीलिंग के वर्ग में और जो पुल्लिंग हैं उन्हें पुल्लिंग वर्ग में लिखो :

घुँघरू, भैंस, बोतल, पोशाक, हिरन, वेदना, घटना, पीपल, घी, सुपारी, चपाती, दाँत, अरहर, चारपाई, होली, रंग, कनस्तर, पहाड़, झाड़, मंडली, पहाड़ी।

रचना

- होली शांति और सद्भावना के साथ मनाया जानेवाला एक पवित्र त्योहार है। इस दिन लोगों को कीचड़ लगाना, गाली–गलौज करना, देर रात तक नगाड़े बजाकर बुजुर्गों और बच्चों को परेशान करना क्या ठीक है ? अब की बार तुम अपने मुहल्ले में होली का त्योहार किस तरह शालीनता से मनाओगे, आठ वाक्यों में लिखो।

गतिविधि

- गत्ते/कागज से होली में पहननेवाली झालरदार टोपी और मुखैटा बनाओ।

योग्यता–विस्तार

- पता करो हम होली का त्योहार क्यों मनाते हैं?

- निम्न बिन्दुओं के आधार पर होली त्योहार का वर्णन करो–

  1. कब मनाया जाता है।
  2. क्यों मनाया जाता है।
  3. कैसे मनाया जाता है।
  4. होली त्योहार का क्या महत्व है।
  5. होली त्योहार मनाते समय क्या–क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

4HPS76

पाठ 20

अमीर खुसरो की पहेलियाँ

4HYN8T

पहेलियाँ बूझने–बुझाने का खेल बच्चे खेलते ही रहते हैं। गाँव और शहर दोनों में ये पहेलियाँ खूब प्रचलित हैं। लेकिन यह कहना कठिन है कि इनमें से कौन–सी पहेली किसने रची है। हाँ, पहेलियाँ रचने के संबंध में एक नाम बहुत प्रसिद्ध है। वह है– अमीर खुसरो। अमीर खुसरो और उनकी पहेलियों के संबंध में इस पाठ में पढ़ेंगे।

आज से लगभग 700 वर्ष पहले भारत में गुलाम वंश का एक बादशाह था– बलबन। उसके समय में ही दिल्ली में हज़रत निजामुद्दीन औलिया नाम के एक संत थे। उनका एक आठ वर्ष का प्यारा शिष्य था– अमीर खुसरो। खुसरो बड़ा होकर अपनी बुद्धिमत्ता के बल पर बलबन का राज–दरबारी बना।

खुसरो अरबी, फारसी, तुर्की और हिंदी के विद्वान् थे। उन्हें संस्कृत भाषा का भी थोड़ा ज्ञान था। उन्होंने फारसी में तो बहुत श्रेष्ठ रचनाएँ कीं; हिंदी में भी अनेक पुस्तकें लिखीं। खुसरो एक अच्छे संगीतज्ञ भी थे। कहा जाता है कि सितार का आविष्कार खुसरो ने ही किया था।

खुसरो इसलिए भी प्रसिद्ध हैं कि हिन्दी की खड़ी बोली में कविता लिखनेवाले वे सर्वप्रथम कवि माने जाते हैं। यहाँ उनकी कुछ चुनी हुई पहेलियाँ दी जा रही हैं। इन्हें पढ़ो और बूझो–

(1) धूपों से वह पैदा होवे,
छाँव देख मुरझाए।
एरी सखी मैं तुझसे पूछूँ ,
हवा लगे मर जाए।।

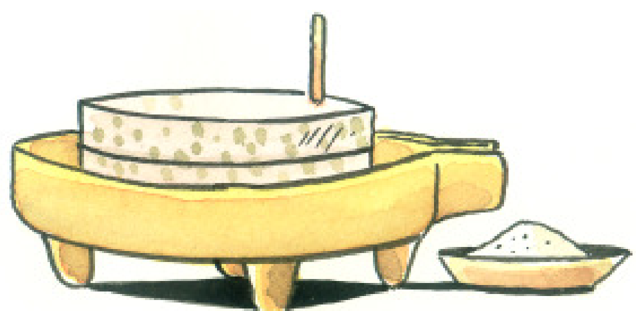

(2) एक नारि के हैं दो बालक,
दोनों एकहि रंग।
एक फिरै एक ठाढ़ा रहे,
फिर भी दोनों संग।।

शिक्षण–संकेत : *पहेलियों के संबंध में कक्षा में चर्चा करें। स्थानीय बोली की कुछ पहेलियाँ बच्चों से बूझे। उन्हें बताएँ कि यह खेल दिमाग का है। पत्र–पत्रिकाओं में पहेलियाँ प्रकाशित होती रहती हैं, उन्हें पढ़ने और बूझने के लिए प्रेरित करें। बच्चों को अपनी–अपनी बोली (भाषा) की पहेलियों का संग्रह कर बूझने के लिए प्रेरित करें।*

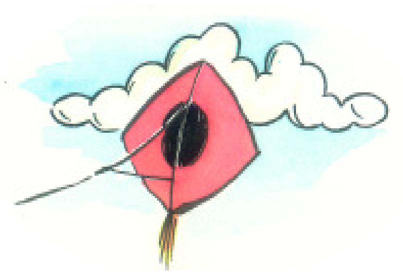

(3) आदि कटे तो सबको पाले,
मध्य कटे तो सबको मारे।
अंत कटे से सबको मीठा,
खुसरो वाको आँखों दीठा।।

(4) एक कहानी मैं कहूँ,
तू सुन ले मेरे पूत।
बिना परों वह उड़ गया,
बाँध गले में सूत।।

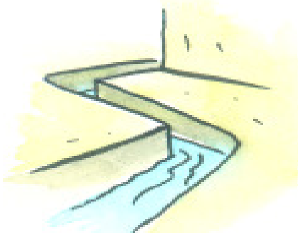

(5) सावन–भादों बहुत चलत है,
माघ–पूस में थोरी।
अमीर खुसरो यों कहे,
तू बूझ पहेली मोरी ।।

(6) बीसों का सिर काट लिया।
ना मारा ना खून किया।।

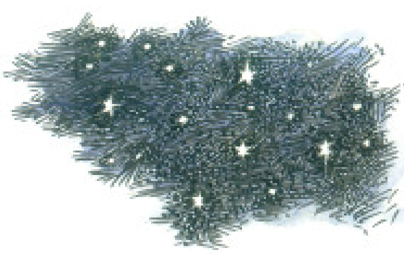

(7) जल–जल चलती बसती गाँव,
बस्ती में ना वाका ठाँव।
खुसरो ने दिया वाका नाँव,
बूझ अरथ नहिं छोड़ो गाँव।।

(8) घूम–घुमेला लहँगा पहिने,
एक पाँव से रहे खड़ी।
आठ हाथ हैं उस नारी के,
सूरत उसकी लगे परी।।

(9) एक थाल मोती से भरा,
सबके सिर पर औंधा धरा।
चारों ओर वह थाली फिरे,
मोती उसका एक न गिरे।

शब्दार्थ

दीठा	–	देखना	वाका	–	उसका
नारि	–	स्त्री	नाँव	–	नाम, नाव
सूत	–	धागा	थोरी	–	थोड़ी, कम
पूत	–	पुत्र	सूरत	–	शक्ल
मध्य	–	बीच			

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 वह कौन–सी चीज है जो धूप में पैदा होती है, लेकिन हवा लगते ही मर जाती है?

प्रश्न 2 चक्की के कितने पाट होते हैं ?

प्रश्न 3 मोरी (नाली) पूस–माघ के महीनों में धीमी और कम क्यों चलती है ?

प्रश्न 4 छतरी के कितने पाँव और कितने हाथ होते हैं ?

प्रश्न 5 वह कौन–सा थाल है, जो मोतियों से भरा होता है ?

प्रश्न 6 'सूरत उसकी लगे परी' इस पहेली में परी के समान सूरत की बात कही गई है। सोचकर लिखो कि परी की सूरत में क्या खास बात रहती है ?

प्रश्न 7 छत्तीसगढ़ी में पहेली को क्या कहते हैं ? छत्तीसगढ़ी बोली की दो पहेलियाँ लिखो।

भाषातत्त्व और व्याकरण

- पाठ के शब्दों के अर्थ भी पूर्ववत् पूछे जाएँ और उनका प्रयोग कराएँ।

प्रश्न 1 इस पाठ में निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग हुआ है–

नार, छाँव, ठाढ़ा, पूत, परों, लहँगा, औंधा।

इन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करके लिखो।

4X8JAG

गतिविधि

- अपने बड़े–बुजुर्गों से पहेलियाँ एकत्रित करो और कक्षा में सुनाओ।

योग्यता–विस्तार

- पंखा, किताब, शिक्षक, पानी, मोर, बादल, आदि पर पहेलियाँ बनाओ।

पाठ 21 बगरे हे चंदा अँजोर

अँजोरी रात लइका मन ल जादा निक लगथे। लइका मन चंदा ल ममा घलो कहिथें। चंदा के अँजोर म लइका मन मगन होके नाचथें–गाथें अऊ खेलथें। चंदा के अँजोर घर–दुवार, खेत खार, नँदिया–तरिया जम्मो डहर बगरे हे। चंदा के उजरई ह जिनगी के सुघरई ये। इही कविता के सार ये।

घर–दुवार, खार–खार
रूख–राई, डार–डार,
बगरे हे चंदा अँजोर।

तरिया के पार–पार ,
लइका पारे गोहार।
चंदैनी सुरतावत हे
पानी म पाँव बोर।।
बगरे हे चंदा अँजोर।

गीत गावत लहरा म,
बरछा बारी बहरा म।
लइकुसहा अंतस ले
लामे हे मया के डोर।।
बगरे हे चंदा अँजोर।

हाँस–हाँस खेलत हे ,
पुरवाही ह पेलत हे।
दुधमुँहा के दाँत कस
तरिया के हिलोर।।
बगरे हे चंदा अँजोर।

शिक्षण संकेतः कविता ल राग म गावँय। पहिली कविता के घोर अउ ओकर जम्मो पद के अनुकरण वाचन करावँय। फेर कविता के चारों पद ल लइका मन के चार दल बना के एक–एक पद उपर चर्चा करे बर लइका मन ल कहँय। हरेक दल ले ओ पद के अर्थ अउ भाव बताय बर कहँय। आखिर म गुरुजी कविता के अर्थ ल खुद समझावँय।

केंवट के मलगी म ,
खोखमा के फुलगी म।
पुरइन–पान थारी म
खीर कस छछले कोर।।
बगरे हे चंदा अँजोर।

बोइर झरी झाऊ म ,
परछी, जाँता पाऊ म।
मड़ियावत हे मुच–मुच
रेंगत संगी अगोर।।
बगरे हे चंदा अँजोर।

छत्तीसगढ़ी शब्द के अर्थ

दुवार	–	फइरका/कपाट, दरवाजा, द्वार/मकान का प्रवेश स्थान
रूख–राई	–	पेड़–पौधा
बगरे	–	फैले(चारों ओर फैला)
पार	–	बंधान
सुरताना	–	आराम करना
बोरना	–	डुबोना
बरछा	–	कुसियार के खेत/गन्ने का खेत
बहरा	–	खेत, जिसमें हमेशा पानी का बहाव बना रहता है
लामे हे	–	लमे हे (लंबाई के फैला है)
डोर	–	मोठ डोरी, रस्सा/मोटी रस्सी
पुरवाही	–	उत्ती डाहर के हवा/पूर्व दिशा की हवा
तरिया	–	तरइया, तलाव/तालाब
मलगी	–	डोंगा, नाव (मछली पकड़ने की छोटी नाव)
फुलगी	–	ऊपर छोर, तिलिंग/शिखा, चोटी
पान	–	पाना, पत्ता
खीर	–	तस्मई
कोर	–	तीर, किनारा, छोर
पेलत हे	–	ढकेल रहा है
झाऊ	–	झाड़ी

जाँता	–	चकिया, चक्की
मड़ियाना	–	माड़ी के भार चलना/घुटनों पर चलना
रेंगत	–	चलत/चलता
खार	–	खेतों का समूह
डार	–	डारा, डंगाली
अंजोर	–	उजियार, उजास/उजाला
गोहार	–	पुकार
पाँव	–	गोड़, पैर
लहरा	–	हिलोर, लहर
बारी	–	बखरी/बाड़ी (सब्जी उगाने का स्थान)
लइकुसहा	–	लइकइ/बचपना
मया	–	प्रेम
हाँस	–	हँसी
दुधमुँहा	–	दुध पियत लइका
हिलोर	–	लहरा, लहर
खोखमा	–	कुमुदनी
पुरइन पान	–	कमल फूल के पाना (कमल का पत्ता)
थारी	–	चंदाही, थाली
छछले	–	बगरे, फैले
बोंइरझरी	–	बोइर के झुंझकुर (बेर की झुरमुट/घनीझड़ी)
परछी	–	बरबट, बरामदा, रेंगान
पाऊ	–	जाँता के मुठिया (हाथ चक्की का हेंडल)
मुच–मुच	–	दबे हुए हाँसी (मुस्कराना)
अगोरना	–	संग रेंगे बर रद्दा जोहना (इंतजार करना)

प्रश्न अउ अभ्यास

• गुरुजी लइका मन ल दू दल म बाँट के लइका मन ले आपस म मुँहअँखरा प्रश्न–उत्तर करावँय। लइका मन के प्रश्न–उत्तर के पाछू गुरुजी दूनो दल ले खुद कुछ मुँहअँखरा प्रश्न पूछयँ। कुछु प्रश्न मन अइसन ढँग ले हो सकत हे–

क. ये कविता कोन भाषा म लिखे गे हे ?

ख. ये कविता म काकर सुघरई के बरनन हे ?

ग. मलगी काला कहिथें ?

प्रश्न 1 खाल्हे लिखाय प्रश्न के उत्तर लिखव–

क. चंदा के अँजोर कोन–कोन ठउर म बगरे हे ?

ख. तरिया के पार म कोन गोहार पारत हे ?

ग. मया के डोर कहाँ ले लामे हे ?

घ. दुधमुँहा के दाँत कस का ह लागत हे ?

ङ. खोखमा कहाँ फूलथे ?

च. पुरइन–पान ह का असन लागत हे ?

छ. चंदा के अंजोर ह परछी म काकर ऊपर बगरे हे ?

प्रश्न 2 खाल्हे लिखे कविता के अर्थ लिखव –

क.

तरिया के पार–पार,
लइका पारे गोहार।
चंदैनी सुरतावत हे
पानी म पाँव बोर।।
बगरे हे चंदा अँजोर।

ख.

बोइरझरी झाऊ म,
परछी, जाँता पाऊ म।
मड़ियावत हे मुच–मुच
रेंगत संगी अगोर।।
बगरे हे चंदा अँजोर।

प्रश्न 3– कविता ल पूरा करव–

क. गीत गावत लहरा म,

....

ख. ....

पुरवाही ह पेलत हे।

ग. केंवट के मलगी म,

....

घ. ....

परछी जाँता पाऊ म।

भाषा–तत्व अउ व्याकरण

- **इहाँ हम सिखबो–** छत्तीसगढ़ी भाषा के शब्द मन के हिन्दी म मायने, मुहावरा के वाक्य म प्रयोग, उल्टा अर्थ वाले शब्द बनाना।

गुरुजी पाठ के कठिन शब्द ल बोलँय। अउ मायने लिखे के पाछू लइका मन आपस म अपन कापी ल बदल के जाँच करँय। तेकर पाछू शिक्षक ह खुद ये शब्द अउ ओकर हिन्दी मायने ल करिया तख्ता म लिख के अशुद्धि ल सुधरवाँय।

प्रश्न 1 'तीर' एक शब्द हे, तेकर अलग–अलग अर्थ हे। एला समझव –

क. स्कूल मोर घरे तीर हे।

ख. अर्जुन के तीर अचूक रहिस।

ग. नंदिया के तीर आमा रूख हे।

अइसने अउ दू शब्द खोज के ओकर अर्थ लिख के वाक्य बनावव।

प्रश्न 2 जोड़ी बनावव–

क.	केंवट –	पाऊ
ख.	खोखमा–	खीर
ग.	जाँता –	मलगी
घ.	चंदा –	पानी
ङ.	थारी –	अँजोर

खाल्हे लिखाय वाक्य मन ल पढ़व–

- मोहन बड़ जिद्दी लइका हे, ओकर ददा कतको समझाइस फेर नइ मानिस।
- मोहन बड़ जिद्दी लइका हे, ओकर ददा कतको समझाइस फेर टस–ले–मस नइ होइस।

ये दू वाक्य दू तरह ले लिखे गे हे। दूनो के भाव एके हे। फेर दूनो के प्रभाव म अंतर हे। दूसर वाक्य म मुहावरा के प्रयोग होय ले ओकर प्रभाव जादा हे।

जोम देना, पल्ला भागना, मुँह जोरी करना, आँखी देखाना, ये मन छत्तीसगढ़ी मुहावरा आँय।

प्रश्न 3 अइसने अउ मुहावरा खोज के वाक्य बनावव।

जइसे– गाय मन जोम देके लड़त रहिन।

– नानकुन लइका मुँहजोरी करत हे।

समझव

छत्तीसगढ़ी भाषा म

– तीर के मनखे बर कहिथें – येकर

– दुरिहा के मनखे बर कहिथें – ओकर

प्रश्न 4 नीचे लिखाय शब्द के विरोधी (उल्टा अर्थ वाले) छत्तीसगढ़ शब्द लिखव।

जइसे – मया – रिस

अँजोर, पाँव, पानी, धरती, अमरित।

रचना

गुरुजी लइका मन ल तुकबंदी जोरे बर सिखोवँय। अउ एकर पाछू लइका मन ये विषय उपर कविता लिखँय–

'सुग्धर मोर गाँव'

4XRBDR

4Y17FE

पाठ 22

किताबें

किताबें हमारी सबसे गहरी मित्र हैं। किताबों से ही ज्ञान का प्रसार होता है। किताबें बिना किसी भेदभाव के सभी तक ज्ञान पहुँचाती हैं। किताबों से ही हमें पुरानी बातों की जानकारी मलती है। किसी देश के उत्थान–पतन की जानकारी भी किताबों से ही मिलती है। किताबों ने बहुत–से लोगों का जीवन बदल डाला है। हमें ऐसी किताबें पढ़नी चाहिए जो हमें प्रगति–पथ पर बढ़ने में प्रोत्साहित करें। प्रस्तुत कविता में किताबों के इन्हीं गुणों का उल्लेख किया गया है।

किताबें करती हैं बातें
बीते जमानों की,
दुनिया की, इंसानों की,
आज की, कल की,
एक–एक पल की,
खुशियों की, गमों की,
फूलों की, बमों की
प्यार की, भार की
जीत की, हार की
क्या तुम नहीं सुनोगे
इन किताबों की बातें ?

किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं
किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं
किताबों में परियों के किस्से सुनाते हैं

किताबों में रॉकेट का राज़ है
किताबों में साइंस की आवाज़ है
किताबों का कितना बड़ा संसार है
किताबों में ज्ञान का भंडार है

क्या तुम इस संसार में
नहीं जाना चाहोगे ?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं।

शब्दार्थ

इंसान – मनुष्य साइंस – विज्ञान

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 किताबें पढ़ने से क्या लाभ है ?

प्रश्न 2 तुम्हारी लायब्रेरी में कौन–कौन सी किताबें हैं सूची बनाओ ?

प्रश्न 3 'किताबें तुम्हारे पास रहना चाहती हैं' कवि ने ऐसा क्यों कहा है ?

प्रश्न 4 किताबें प्रकृति के किन रहस्यों को खोलती हैं ?

प्रश्न 5 कवि ने किताबों के संसार को बड़ा क्यों बताया है ?

प्रश्न 6 तुम किताबों के संसार में जाना चाहोगे या नहीं? कारण बताते हुए इस प्रश्न का उत्तर लिखो।

प्रश्न 7 नीचे लिखी पंक्तियों को पूरा करो–

क. किताबों में चिड़ियाँ ....।

ख. किताबों में ज्ञान की ....।

ग. किताबें कुछ ....।

घ. किताबों में साइंस ....।

प्रश्न 8 तुमने कुछ किताबें अवश्य पढ़ी होंगी। उनमें से तुम्हें सबसे अच्छी किताब कौन–सी लगी ? उस किताब की कुछ अच्छी बातें लिखो।

प्रश्न 9 तुम्हें अपनी कक्षा की कौन–सी किताब सबसे कठिन लगती है और क्यों ?

प्रश्न 10 तुम अपनी किताबों में कैसी बातें पढ़ना पसंद करोगे ? क्या वे बातें तुम्हारी किताबों में हैं ? उदाहरण देकर लिखो।

भाषातत्व और व्याकरण

प्रश्न 1 इन शब्दों की जोड़ियाँ बनाओ–

चिड़ियाँ	लहलहाते हैं
खेत	सुनाते हैं
झरने	चहचहाती हैं
किस्से	गुनगुनाते हैं

प्रश्न 2 रिक्त स्थानों में सही शब्द सोचकर लिखो।

जैसे किताबों के पन्ने. फूलों की ....

पेड़ों के .... सागर की ....

आकाश के .... हिमालय की ....

वर्षा की .... चिड़ियों की ....

प्रश्न 3 निम्नलिखित विदेशी शब्दों की हिन्दी शब्दों के साथ सही जोड़ियाँ मिलाओ–

किताबें	रहस्य
ज़माना	प्रसन्नता
राज़	दुख
खुशी	पुस्तकें
ग़म	कथा
किस्सा	युग

प्रश्न 4 निम्नलिखित समान उच्चारणवाले शब्दों को पढ़ो और वैसे ही दो–दो शब्द लिखो–

मार, हार, ..., ... जीत, मीत, ..., ...

कल, पल, ..., ... झरना, भरना, ..., ...

प्रश्न 5 'हार' शब्द के अक्षरों को अगर हम उलटकर रखें तो 'रहा' शब्द बनता है, जो सार्थक शब्द है। ऐसे चार शब्द (दो–दो अक्षरवाले) सोचकर लिखो जिनके अक्षर अगर उलटकर रखे जाएँ तो वे सार्थक शब्द बनेंगे।

रचना

- अपनी पसंद की पुस्तक के बारे में आठ वाक्य लिखो।

योग्यता–विस्तार

- पुस्तकालय से कहानी, कविता की पुस्तकें लेकर पढ़ो।
- कोई एक कहानी पढ़कर कक्षा में सुनाओ।
- किसी समाचार पत्र या पत्रिका में छपी कहानी को पढ़कर कक्षा में सुनाओ।

4YA3H2

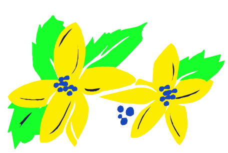

पाठ 23

डॉ. जगदीश चन्द्र बोस

4YIYIP

भारतीय वैज्ञानिकों ने अपने अलौकिक आविष्कारों और अनुसंधानों से संसार को चमत्कृत किया है। डॉ. रमन, डॉ. श्रीनिवास रामानुजन की खोजों की ही तरह डॉ. जगदीश चन्द्र बोस की वनस्पतियों के संबंध में की गई खोज से संसार चमत्कृत हुआ। वृक्षों में भी जीवन होता है, यह तथ्य डॉ. बोस ने दुनिया को बताया। इस पाठ में हम डॉ. बोस का संक्षिप्त जीवन–परिचय और उनकी खोजों के संबंध में पढ़ेंगे।

सूर्य अस्त हो रहा था। चिड़ियाँ चहकती हुईं अपने–अपने घोंसलों में लौट रही थीं। ठंडक बढ़ती जा रही थी। गरम स्वेटर, मोजे, हॉफ पैण्ट पहने, हाथ में एक बेंत लिए विक्की अपने घर के बगीचे में टहल रहा था। वह कभी किसी पेड़ पर अपना बेंत जमा देता, कभी किसी फूलदार पौधे को झकझोर देता। उसके दादा जी बरामदे में बैठे चाय का घूँट ले रहे थे । उनकी दृष्टि विक्की की ओर ही थी। उसे पेड़–पौधों में उलझा देखकर वे बोले, ''विक्की, अब इधर आ जाओ। पौधों को मत छेड़ो। यह उनके आराम करने का समय है । ''

विक्की ने कहा, '' वाह दादा जी! आपने खूब कहा। मानो पेड़–पौधे भी सचमुच आराम करते हैं, सोते हैं।''

''हाँ, वे सचमुच आराम करते हैं, रात को सोते भी हैं और प्रातः जाग जाते हैं'', दादा जी ने विक्की को समझाया।

''दादा जी, यह आपने नई बात बताई। भला पेड़–पौधे भी कहीं सोते हैं! आपने कैसे जाना कि पेड़–पौधे सोते हैं ? वे तो रात को भी हिलते–डुलते रहते हैं। सोनेवाला आदमी तो हिलता–डुलता नहीं।''

''अच्छा, यहाँ आओ। मैं तुम्हें इसकी कहानी सुनाता हूँ''– दादा जी ने विक्की से कहा।

विक्की को कहानी सुनने का बड़ा शौक था। वह तुरंत आकर दादा जी की गोद में बैठ गया।

''अब सुनाइए कहानी–'' वह दादा जी से बोला ।

शिक्षण–संकेत : *पेड़–पौधों के संबंध में चर्चा कीजिए। पेड़–पौधे मानव की तरह पैदा होते हैं, बढ़ते हैं, मरते हैं। उन पर भी सर्दी, गर्मी का प्रभाव पड़ता है। तोड़ने या काटने पर उन्हें भी पीड़ा होती है। कभी ऐसी बातें कल्पना की उड़ान मानी जाती थीं, बाद में भारतीय वैज्ञानिक डॉ. जगदीश चंद्र बोस ने अपने अनुसंधान से इन बातों को सत्य कर दिखाया। कक्षा में इन बातों की चर्चा करें।*

दादा जी ने चाय का प्याला रख दिया। वे एक हाथ से उसकी पीठ सहलाते हुए कहानी कहने लगे। ''उस समय अपना देश बहुत बड़ा था। तब बांग्लादेश भी भारत का भाग हुआ करता था। बांग्लादेश की राजधानी ढाका है। ढाका के पास एक गाँव है, राढ़ीरवाल। वहाँ एक डिप्टी कलेक्टर के घर एक बालक का जन्म हुआ। उसका नाम रखा गया जगदीश चंद्र। जगदीश की पाठशाला में किसानों के बच्चे खेती–बाड़ी और पेड़–पौधों के बारे में अकसर बातें करते रहते थे। इस कारण बचपन में ही जगदीश चंद्र की रुचि पेड़–पौधों में हो गई। ''

''बचपन में जगदीश ने देखा कि छुईमुई नाम के पौधे की पत्तियाँ हाथ लगाते ही सिकुड़ जाती हैं और थोड़ी देर के बाद वे पुनः खिल जाती हैं। सूरजमुखी नाम के पौधे के फूल का मुँह सदैव सूरज के सामने होता है। इस बालक ने बड़े होकर पेड़–पौधों पर बहुत–से प्रयोग करके यह सिद्ध कर दिया था कि पेड़–पौधे भी हम सबकी तरह सोते, जागते हैं। उन्हें भी भोजन और पानी चाहिए। वे भी सुखी और दुखी होते हैं। वे भी रोते हैं।''

''दादा जी, आप तो जगदीश चंद्र बोस के बारे में पूरी बातें बताइए।'' विक्की ने मचलते हुए कहा।

''अच्छा, तो सुनो। जगदीश चंद्र जब छोटे थे तो रोते बहुत थे– तुम्हारी तरह।'', दादा जी ने हँसते हुए कहा।

''मैं कहाँ रोता हूँ।''– विक्की बोला।

''तुम्हें क्या पता ? तुम तो तब बहुत छोटे थे। खैर! उसके माता–पिता ने उसके लिए एक तरकीब सोची। रात में जैसे ही वे रोना शुरू करते, वैसे ही ग्रामोफोन पर कोई गाना बजा दिया जाता था। गाना सुनते ही बालक जगदीश का रोना बंद हो जाता था और वह सो जाता था। जगदीश चंद्र की प्रारंभिक शिक्षा गाँव में ही हुई। पाठशाला के आसपास खूब पेड़–पौधे थे। बालक जगदीश का उनसे खूब लगाव हो गया था। गाँव की पढ़ाई पूरी होने पर जगदीश को आगे की शिक्षा के लिए कोलकाता भेज दिया गया। वे पढ़ने में बहुत होशियार थे, जैसे तुम हो।'' विक्की यह सुनकर बहुत खुश हो गया। ''फिर क्या हुआ?''– उसने पूछा ।

''जब कोलकाता में उसने पढ़ाई पूरी कर ली, उसे आगे की पढ़ाई के लिए इंग्लैंड भेजा गया। वहाँ पढ़ते हुए उसका सम्पर्क बड़े–बड़े वैज्ञानिकों से हुआ।''

''फिर क्या वे वहीं रहने लगे?'' विक्की ने पूछा।

''नहीं, वहाँ की पढ़ाई पूरी करके वे वापस कोलकाता आ गए और वहाँ के प्रेसीडेंसी कॉलेज में प्रोफेसर बन गए। बड़ी कक्षाओं को जो टीचर पढ़ाते हैं, उन्हें प्रोफेसर कहते हैं। जगदीश चंद्र अपने सिद्धांत के बड़े पक्के थे। वे गलत काम करते भी नहीं थे और गलत बात मानते भी नहीं थे। उस समय अपने देश पर अँग्रेजों का राज था। अँग्रेज भारतीयों पर तरह–तरह से अत्याचार करते थे। यह कॉलेज उन्हीं का था। उन्होंने यहाँ प्रोफेसरों के लिए दो नियम बना रखे थे।

अँग्रेज प्रोफेसरों को तो वेतन अधिक दिया जाता था, लेकिन भारतीय प्रोफेसरों को कम वेतन मिलता था। जगदीश चंद्र को यह दोहरा व्यवहार पसंद नहीं आया। उन्होंने इसका विरोध किया। कई वर्षों तक उन्होंने वेतन नहीं लिया, लेकिन पूरी ईमानदारी से अपना काम किया। अंत में कॉलेजवालों को झुकना पड़ा।''

''दादा जी, आपने यह तो बताया ही नहीं कि उन्होंने पेड़–पौधों पर क्या प्रयोग किए?''– विक्की ने पूछा।

''हाँ, वही तो बता रहा हूँ। उन्होंने अपना पूरा ध्यान पेड़–पौधों के जीवन के अध्ययन पर लगा दिया। उन्होंने इसके लिए कई यंत्र बनाए। इन यंत्रों की सहायता से उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि पेड़–पौधों में भी जीवन होता है। उन्हें भी हमारी तरह खाना चाहिए, वायु और सूर्य का प्रकाश चाहिए। उन पर भी गर्मी और सर्दी का प्रभाव पड़ता है। उन्हें भी सुख और दुःख होता है। आदमी और पशु–पक्षियों की तरह वे भी मरते हैं।''

जगदीश चंद्र बोस द्वारा की गई खोजें संसार भर की प्रसिद्ध पत्रिकाओं में छपीं। लोगों को जब इसकी जानकारी मिली तो दुनिया भर में हड़कंप मच गया। कुछ वैज्ञानिकों को उनकी खोज पर विश्वास नहीं हुआ। उन्हें फ्रांस बुलाया गया और वहाँ अपने प्रयोग सिद्ध करने के लिए कहा गया। उन्होंने कहा, ''जहर खाने से आदमी मर जाता है। यदि किसी पौधे पर जहर डाला जाए तो वह भी मुरझा जाएगा।''

तुरंत वहाँ जहर मँगाया गया। वह जहर एक पौधे पर डाला गया तो उस पौधे पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ा। डॉ. जगदीश चंद्र बोस को तो अपने प्रयोग पर पूरा विश्वास था। उन्होंने कहा, ''यदि यह जहर पौधे पर कोई प्रभाव नहीं डाल सका तो मेरे ऊपर भी नहीं डाल सकेगा।'' यह कहकर उन्होंने बचा जहर स्वयं पी लिया। सचमुच उन पर कोई प्रभाव नहीं हुआ क्योंकि वह जहर था ही नहीं। यूरोप के कुछ वैज्ञानिकों ने उन्हें नीचा दिखाने के लिए यह षड्यंत्र रचा था। वे सब बहुत लज्जित हुए।

''डॉ. जगदीश चंद्र बोस सही अर्थों में एक वैज्ञानिक थे। विज्ञान के प्रचार–प्रसार के लिए उन्होंने 'बसु विज्ञान मंदिर' नामक एक संस्था की स्थापना की। उन्होंने अपने प्रयोगों से अपने देश का नाम रोशन किया। अब तो तुम्हें विश्वास हो गया कि पेड़–पौधों में भी जीवन होता है।''

''हाँ, दादा जी, अब मैं जान गया। अब मैं किसी पेड़–पौधे को नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा।''

शब्दार्थ

जमा देना	–	व्यवस्थित करना	सदैव	–	हमेशा
प्रारंभिक	–	शुरू का, सबसे पहला	वायु	–	हवा
संपर्क	–	मेल–मिलाप	टीचर	–	शिक्षक
वेतन	–	तनख्वाह			

नीचा दिखाना	–	लज्जित करना
नाम रोशन करना	–	प्रसिद्ध करना
स्थापना	–	खड़ा करना, जमाना, नया कार्य प्रारंभ करना
प्रोफेसर	–	कॉलेज में पढ़ानेवाला अनुभवी शिक्षक
वैज्ञानिक	–	विज्ञान का ज्ञान रखनेवाला

टिप्पणी

बांग्लादेश– 15 अगस्त 1947 को भारत के दो टुकड़े हुए, भारत और पाकिस्तान। पाकिस्तान पूर्व में बंगाल का क्षेत्र और उत्तर में पंजाब का क्षेत्र काटकर बना। जब वहाँ अगले चुनाव हुए तो पूर्वी बंगाल के श्री मुजीबुर्रहमान बहुमत से जीते। इसलिए उन्हें प्रधानमंत्री बनाना चाहिए था, लेकिन नहीं बनाया गया। इस पर वहाँ जबर्दस्त विद्रोह हुआ। भारत ने भी उन्हें सहायता दी। पूर्वी बंगाल पाकिस्तान से अलग हो गया। उसका नाम बांग्लादेश पड़ा। अब वह अलग स्वतंत्र राष्ट्र है।

छुईमुई– एक झाड़ीनुमा पौधा। इस पौधे की विशेषता यह है कि इसकी पत्तियाँ हाथ लगाते ही सिकुड़ जाती हैं और थोड़ी देर बाद पूर्व की भाँति खिल जाती हैं।

ग्रामोफोन–एक वाद्य–यंत्र जिससे रिकार्ड बजाया जाता है।

पेरिस– यूरोप में फ्रांस नाम का एक प्रसिद्ध देश है। पेरिस उसकी राजधानी है।

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 सूरजमुखी की क्या विशेषता है ?

प्रश्न 2 बालक जगदीश को रोने से चुप करने के लिए उनके माता–पिता ने क्या तरकीब निकाली ?

प्रश्न 3 जगदीश चंद्र बोस ने अपनी उच्च शिक्षा कहाँ प्राप्त की ?

प्रश्न 4 "जगदीश चंद्र बोस बड़े स्वाभिमानी थे" इस कथन को तुम उनके जीवन के किस प्रसंग से सिद्ध करोगे ?

प्रश्न 5 नीचे लिखे कथनों में से सही कथन के लिए सत्य और गलत कथन के लिए असत्य लिखो।

क. जगदीश चंद्र बोस की प्रारंभिक शिक्षा हैदराबाद में हुई।

ख. जगदीश चंद्र बोस का जन्म कोलकाता के पास एक गाँव में हुआ था।

ग. बचपन से ही जीव–जंतुओं में जगदीश चंद्र बोस की रुचि थी।

घ. जगदीश चंद्र बोस एक स्वाभिमानी वैज्ञानिक थे।

ङ. फ्रांस के वैज्ञानिकों ने जगदीश चंद्र बोस को नीचा दिखाने के लिए एक षड्यंत्र रचा।

प्रश्न 6 डॉ. जगदीश चंद्र बोस के जीवन की निम्नलिखित घटनाओं को क्रमवार लिखो।

क. डॉ. जगदीश चंद्र बोस ने 'बसु विज्ञान मंदिर' की स्थापना की।

ख. डॉ. जगदीश चंद्र बोस को पेरिस में वहाँ के वैज्ञानिकों ने नीचा दिखाने का प्रयास किया।

ग. जगदीश चंद्र बोस प्रेसीडेंसी कॉलेज में प्रोफेसर बने।

घ. जगदीश चंद्र बोस की प्राथमिक शाला के आस–पास बहुत से पेड़–पौधे थे।

प्रश्न 7 किसी पौधे को यदि पानी न दें तो उस पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

प्रश्न 8 किसी पौधे को उखाड़ देने पर वह क्यों मुरझा जाता है?

भाषातत्व और व्याकरण

- कक्षा को दो समूहों में बाँटिए। एक समूह का कोई बच्चा पाठ में से श्रुतलेख के लिए एक अनुच्छेद बोले और शेष बच्चे लिखें। बाद में अपनी अभ्यास–पुस्तिकाएँ अदल–बदलकर लिखे हुए की जाँच पुस्तक में देखकर एक–दूसरे से करवाएँ।

समझो

- इन वाक्यों को पढ़ो और समझो।

  यह आपने नई बात बताई।

  पाठशाला के आसपास खूब पेड़–पौधे थे।

  'नई बात' और 'खूब पेड़–पौधे' में 'नई' और 'खूब' क्रमशः 'बात' और 'पेड़–पौधे' की विशेषता बता रहे हैं। **जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं वे विशेषण और जिनकी विशेषता बताई जाती है, वे विशेष्य कहलाते हैं।**

प्रश्न 1 नीचे लिखी चीजों की विशेषता बताने वाले शब्द सोचकर लिखो –

.... हलवा	.... पेड़	.... नमक	.... चींटी
.... पत्थर	.... कुरता	.... चश्मा	.... झंडा

पढ़ो और समझो

- पढ़ना–पढ़ाई, खोजना–खोज, झुकना–झुकाव।

  पढ़ना, खोजना, झुकना क्रियाएँ हैं। इनसे भाववाचक संज्ञाएँ बनी हैं पढ़ाई, खोज और झुकाव।

प्रश्न 2 निम्नलिखित क्रियाओं से भाववाचक संज्ञाएँ बनाओ :

हँसना, बोलना, चलना, कूदना, लिखना।

प्रश्न 3 नीचे लिखे शब्दों को शुद्ध करके लिखो–

विग्यान, विज्ञानिक, देहाँत, प्रारंभीक, परणाम, सुरजमूखी।

समझो

- तुम पढ़ चुके हो कि 'बुद्ध' को हम 'बुद्ध' भी लिख सकते हैं। 'विद्या' को हम 'विद्‌या' भी लिख सकते हैं।

प्रश्न 4 अब इन शब्दों को दूसरे प्रकार से लिखो।

विरुद्ध, विद्यालय, सिद्धान्त, विद्वान, चिह्न।

प्रश्न 5 'धोखा' शब्द में 'बाज' जोड़कर 'धोखेबाज' शब्द बना है। नीचे इसी प्रकार के कुछ शब्दों में दिए गए शब्दांश जोड़कर नए शब्द बनाओ और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

लकड़ी + हारा, भारत + ईय, प्रारंभ + इक, ईमान + दार, घूमना + अक्कड़ ।

रचना

- डॉ. जगदीश चंद्र बोस के अलावा भारत में और भी अनेक वैज्ञानिक हुए हैं। किन्हीं दो के संबंध में पाँच–पाँच वाक्य लिखो।

गतिविधि

- अपने विद्यालय के बगीचे में या अन्यत्र सूरजमुखी का पौधा देखो। क्या इसके फूल का मुँह सदा सूर्य की ओर रहता है ?
- जैसे हमारे जीवन के लिए सूर्य की रोशनी और वायु आवश्यक है, उसी प्रकार पेड़–पौधों के लिए भी सूर्य की रोशनी और वायु आवश्यक है। दो अलग–अलग पौधे लो। एक को काँच के बर्तन में बंद करके रखो और दूसरे को खुले में रखो। क्या अंतर आता है ? देखो।
- जल के बिना हम अधिक समय तक जीवित नहीं रह सकते। पौधे भी जल के बिना जीवित नहीं रह सकते। दो पौधे लो। एक को रोज पानी से सींचो, दूसरे में पानी मत डालो। दोनों में क्या अंतर आता है ? देखो।

4YSUKC

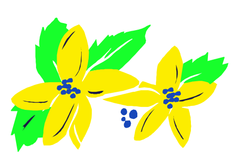

पाठ 24

इंसाफ

57IQCU

तुम लोगों ने वह तस्वीर देखी होगी जिसमें न्यायाधीश को आँखों पर पट्टी बाँधकर तराजू लिए हुए चित्रित किया गया है। तराजू के दोनों पलड़े सम पर रहते हैं। इसका अर्थ यह है कि न्यायाधीश की दृष्टि में सब बराबर रहते हैं; इसीलिए उसका न्याय निष्पक्ष रहता है। इस एकांकी में ऐसे ही न्याय का वर्णन किया गया है।

पात्र

अली – बगदाद का एक नाई

हसन – बगदाद का एक लकड़हारा

खलीफा – बगदाद का सम्राट

नौकर

पहला दृश्य

(स्थान– बगदाद की एक सड़क पर अली नाई की दुकान। समय–दोपहर। अली नाई अपनी दुकान पर बैठा अपना उस्तरा पैना कर रहा है। अपने गधे पर लकड़ी लादे लकड़हारे हसन का प्रवेश।)

हसन – लकड़ी ले लो, लकड़ी। अच्छी सूखी लकड़ी ले लो।

अली – ओ लकड़हारे ! अरे भाई लकड़हारे, इधर आना।

हसन – (अपने गधे को रोककर अली के पास आता है।) भाई साहब, क्या आपने ही मुझे आवाज लगाई थी ? क्या आपको लकड़ी चाहिए ?

अली – हाँ भाई, बुलाया तो इसीलिए है। लकड़ियाँ सूखी हैं ? गीली तो नहीं हैं ?

हसन – अजी साहब, आप खुद देख लीजिए। ऐसी सूखी और ऐसी अच्छी लकड़ी किसी के पास नहीं मिलेगी।

शिक्षण–संकेत : *न्याय की दृष्टि में सब बराबर होते हैं– कोई छोटा, कोई बड़ा नहीं। अपराध करने पर न्याय न तो अधिकारी को क्षमा करता है और न कर्मचारी को। न्यायाधीश की दृष्टि समान रहती है। वह छोटे–बड़े का भेद नहीं करता। इस पाठ में यही दर्शाया गया है। बालसभा में इस एकांकी का मंचन कराएँ।*

अली – ठीक है, मैं तुम्हारी बात का भरोसा किए लेता हूँ। इस गधे पर लदी सारी लकड़ियों का कितना दाम चाहिए ?

हसन – सारी लकड़ियों का दाम पाँच शकाल है।

अली – पाँच शकाल! हैं तो ज्यादा, पर चलो मुझे मंजूर है। गधे पर की सारी लकड़ियों का दाम पाँच शकाल तुम्हें मिलेगा। उतारो लकड़ी।

हसन – ठीक है। मैं अभी लकड़ियाँ उतारता हूँ।

(हसन गधे पर से लकड़ियाँ उतारकर दुकान के पास ढेर लगा देता है।)

हसन – लीजिए, मैंने सारी लकड़ियाँ उतारकर रख दीं। अब आप दाम चुका दीजिए।

अली – तुमने गधे पर रखी सारी लकड़ियाँ उतारकर रख दीं न ?

हसन – जी हाँ, सब लकड़ियाँ उतार दीं। हाथ कंगन को आरसी क्या ? आप खुद देख लीजिए।

अली – ठीक है, मैं भी देख लूँ।

(दुकान से उतरकर गधे के पास जाता है। गधे की पीठ पर लकड़ी की बनी काठी को देखकर)

अरे, यह क्यों नहीं उतारी ? यह भी तो लकड़ी ही है।

हसन – हुजूर, यह लकड़ी की तो है, लेकिन यह गधे की काठी है, जीन है। यह जलाने के लिए थोड़े ही होती है।

अली – मियाँ लकड़हारे, जो बात तय हुई थी, उसे जरा याद कीजिए। मैंने कहा था कि गधे पर की सारी लकड़ियों का दाम पाँच शकाल होगा। यह भी तो लकड़ी की ही है। इसे भी उतारिए।

हसन – अजी साहब! क्यों गरीब आदमी के साथ ठिठोली करते हो ? मेरा और अपना समय आप क्यों बर्बाद कर रहे हैं ? मुझे दाम दीजिए जिससे मैं अपने घर जाऊँ।

अली – देखो दोस्त! यह ठिठोली और मज़ाक की बात नहीं है। जो सौदा हुआ है, उसे आप भी निबाहिए, मैं भी निबाहूँगा। जब तक यह काठी उतारकर यहाँ नहीं रखते, तब तक मैं एक शकाल भी नहीं दूँगा।

हसन – (क्रोध में भरकर) यह आप क्या कह रहे हैं ? आप तो पक्के धोखेबाज लगते हैं। क्या आज तक किसी ने काठी भी लकड़ियों के साथ बेची है ?

अली – (हाथ में एक लकड़ी उठाकर) अबे बदतमीज! तुझे बोलने का भी ढंग नहीं मालूम। मुझे गालियाँ बक रहा है। यह ले, यह ले तेरा दाम।

(अली, हसन को लकड़ी से मारता है। हसन बचता हुआ भागता है। अली गधे की पीठ से काठी उतार लेता है और अपनी दुकान पर जाकर बैठ जाता है। हसन थोड़ी देर में अपने गधे को ले जाता है।)

दूसरा दृश्य

(स्थान– खलीफा का दरबार। खलीफा एक ऊँचे सिंहासन पर बैठे हैं। आसपास सिपाही, मुंसिफ आदि बैठे हैं। दरबान आता है।)

दरबान – हुजूर! द्वार पर एक फरियादी आया है। कहता है, मेरे साथ अन्याय हुआ है।

खलीफा – उसे अंदर आने दो।

(हसन अंदर आता है।)

हसन – जहाँपनाह! इंसाफ कीजिए।

खलीफा – बोलो, क्या बात है ? किसने तुम्हारे साथ बेइंसाफी की है ?

हसन – हुजूर! मैं लकड़ी बेचने के लिए देहात से आया था। बाजार में जब मैं अली नाई की दुकान के पास से गुजरा तो उसने लकड़ी का सौदा किया । मैंने सारी लकड़ी पाँच शकाल में देना मंजूर कर लिया। पाँच शकाल में लकड़ियों के साथ उसने काठी भी उतार ली। मुझे मारा और दाम भी नहीं दिया।

खलीफा – उसने काठी क्यों उतार ली ?

हसन – हुजूर, वह कहने लगा कि काठी लकड़ी की बनी है, इसलिए मेरे सौदे में आती है।

खलीफा – तो काठी लकड़ी की बनी थी ?

हसन – जी हाँ, जहाँपनाह!

खलीफा – भाई, उसने तुम्हारे साथ धोखा तो किया लेकिन उसका कहना भी ठीक है। कानून के तहत उसके खिलाफ कुछ नहीं किया जा सकता। लेकिन तुम्हारे साथ बेइंसाफी तो हुई है। अच्छा, इधर आकर मेरी बात सुनो।

(हसन खलीफा के पास जाता है। खलीफा उसके कान में कुछ कहते हैं। हसन बाहर चला जाता है।)

तीसरा दृश्य

(अली अपनी दुकान में बैठा अपना उस्तरा तेज़ कर रहा है। हसन का दुकान में प्रवेश।)

अली – (पहचानकर) क्यों भाईजान, कैसे आए? पुरानी बात भूल जाइए। क्या आपको हजामत बनवानी है?

हसन – दोस्त अली! उस दिन तो गलती मेरी ही थी। मुझे उसका नतीजा मिल गया। मैं तो आज हजामत बनवाने आया हूँ। मेरा एक साथी और है। उसकी भी हजामत बनानी है।

अली – अरे भाई, आओ, आओ। हजामत बनाना तो मेरा पेशा ही है।

हसन – दोनों की हजामत बनाने की मजदूरी क्या होगी?

अली – दोनों की हजामत के लिए एक शकाल दे दीजिए।

हसन – ठीक है। पहले मेरी हजामत बना दीजिए।

(अली हसन के बाल काटता है। बाल काटकर)

अली – लीजिए, आपकी हजामत बन गई। अपने साथी को भी बुला लीजिए।

हसन – मैं अभी उसे लेकर आता हूँ।

(बाहर जाता है और गधे की रस्सी पकड़े हुए उसे अंदर ले आता है।)

हसन – लो भाईजान! मेरा साथी भी आ गया। इसकी हजामत भी बना दीजिए।

अली – अरे, क्या गधे के बाल कटवाएगा?

हसन – जी हाँ, यही तो मेरा साथी है। इसी के तो बाल कटवाने हैं।

अली – या अल्लाह! यह क्या कहता है? अरे बेवकूफ, क्या कभी गधे के भी बाल काटे जाते हैं? तूने फिर बेवकूफी की बात की। पहले मेरे हाथों मार खा चुका है। भाग यहाँ से नहीं तो हड्डी–पसली तोड़कर रख दूँगा।

हसन – भाईजान! इसमें मारने–पीटने की क्या बात है? सौदा तो सौदा ही होता है।

अली – अबे! कानून मत बघार। यहाँ से सीधे भाग जा, जल्दी कर।

हसन – अच्छा जाता तो हूँ, पर गरीब को सताना ठीक नहीं है।

(हसन गधे को लेकर चला जाता है।)

चौथा दृश्य

(स्थान– खलीफा का दरबार। खलीफा अपने सिंहासन पर बैठे हैं। हसन उनके सामने हाजिर होता है।)

खलीफा – क्यों भाई! क्या तुमने मेरे कहे मुताबिक काम किया?

हसन – जी हाँ, जहाँपनाह! आज अली नाई ने मेरे और मेरे साथी के बाल एक शकाल में काटना मंजूर किया था। उसने मेरे बाल तो काट दिए पर मेरे साथी के बाल नहीं काटे और मुझे और मेरे साथी को अपनी दुकान से बाहर निकाल दिया।

खलीफा – ठीक है। अब तुम्हारे साथ इंसाफ होगा। (एक सिपाही से) अली नाई को फौरन दरबार में हाजिर किया जाए। उससे अपने सारे औजार भी साथ लाने को कहा जाए।

(सिपाही जाता है। थोड़ी देर में वह अली नाई को अपने साथ लेकर आता है।)

अली – जहाँपनाह, मेरे लिए क्या हुक्म है ?

खलीफा – क्या तुम्हारा ही नाम अली नाई है ?

अली – जी हाँ, जहाँपनाह।

खलीफा – तुम्हारे खिलाफ यह आदमी आरोप लगा रहा है कि तुमने आज सुबह इसके तथा इसके साथी के बाल काटने का सौदा किया था, परन्तु बाद में तुम मुकर गए। क्या यह सच है ?

अली – सरकार, मैंने इसके बाल काट दिए, लेकिन यह अपने साथी के रूप में एक गधे को ले आया। आप ही सोचिए हुजूर, क्या कभी गधे की भी हजामत होती है ?

खलीफा – तुम ठीक कहते हो, गधे की हजामत कभी नहीं होती। पर क्या तुमने कभी यह भी सुना है कि गधे पर रखी काठी भी लकड़ियों में गिनी जाती है ? अगर यह ठीक है तो गधा भी आदमी का साथी हो सकता है और उसके भी बाल बनवाए जा सकते हैं। (अली चुप रहता है।)

खलीफा – अब अच्छा यही है कि इस गधे के सारे बाल इसी समय साफ कर डालो।

(अली मुँह लटकाए बाहर जाता है और गधे पर पहले साबुन मलता है और फिर उसके बाल काटता है। गधे की हजामत बनाने के बाद वह अंदर आता है।)

अली – हुजूर, मैंने आपके हुक्म का पालन कर दिया।

खलीफा – देखो अली, भला आदमी कभी गरीब को नहीं सताता। आइंदा के लिए मेरी बात गाँठ बाँध लेना। (अली नाई खलीफा को सलाम करके जाता है।)

खलीफा – (हसन से) हसन भाई, इधर आइए। अली ने आपके साथ जो बदसलूक किया, उसका नतीजा उसे मिल गया। तुम्हारी काठी का दाम तुम्हें मिल जाएगा। (खजांची से) खजांची, हसन को दस मोहरें दे दी जायँ। (हसन बहुत प्रसन्न होता है। वह मोहरें लेकर खलीफा को दुआ देता हुआ चला जाता है।)

शब्दार्थ

उस्तरा	–	नाई का छुरा	आरोप लगाना	–	दोष लगाना
इंसाफ	–	न्याय	मुंसिफ	–	न्यायाधीश
जहाँपनाह	–	बादशाह, सम्राट	बेइंसाफी	–	अन्याय
शकाल	–	एक सिक्का, जो बगदाद में चलता है, जैसे हमारे यहाँ रुपया चलता है।			

ठिठोली करना	–	मज़ाक करना, हँसी करना
राह लेना	–	अपने रास्ते चले जाना
मखौल उड़ाना	–	मजा़क उड़ाना
आइंदा	–	भविष्य में, आगे कभी
बदसलूक	–	बुरा बर्ताव
हड्डी–पसली तोड़ना	–	बहुत पीटना
काठी	–	घोड़े या गधे पर रखी जाने वाली जीन
जहाँपनाह	–	संसार को आश्रय देने वाला (बादशाह के लिए संबोधन है)
दुआ देना	–	प्रार्थना करना, आशीर्वाद देना
दरबान	–	दरबार का सेवक
मुकर जाना	–	कही हुई बात से हट जाना

टिप्पणी :

जहाँपनाह – मुसलमान बादशाहों के लिए सम्बोधन, जिसका अर्थ होता है जगत् का आश्रयदाता।

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 अली और हसन में झगड़ा किस बात पर उठा ?

प्रश्न 2 लकड़ी की काठी की बात पर खलीफा ने न्याय करने के बाद क्या कहा ?

प्रश्न 3 अली को अंत में गधे की हजामत क्यों बनानी पड़ी ?

प्रश्न 4 अली ने लकड़ियों के साथ ही काठी भी ले ली। तुम्हारी राय में अली का काम उचित था या अनुचित ? क्यों ?

प्रश्न 5 नीचे लिखे प्रश्नों के तीन–तीन उत्तर दिए गए हैं। सही उत्तर चुनकर लिखो।

क. अली के द्वारा लकड़ियों के साथ लकड़ी की काठी माँगना नियमानुसार–

(क) सही था (ख) गलत था (ग) पता नहीं

ख. अंत में अली को हसन के गधे की हज़ामत बनानी पड़ी?

(क) स्वयं की मर्जी से

(ख) हसन के कहने पर

(ग) खलीफा के कहने पर

भाषातत्व और व्याकरण

- शिक्षक नीचे दिए शब्द बोलें और बच्चों से श्रुतिलेख लिखवाएँ।

  जहाँपनाह, खलीफा, लकड़हारा, धोखेबाज, दुकान, बाज़ार, अल्लाह, खजांची।

- बच्चे ऊपर दिए शब्दों पर एक–एक वाक्य बनाकर बोलें।

प्रश्न 1 आदरसूचक शब्दों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित वाक्यों को फिर से लिखो।

जैसे– क्या तुमने ही मुझे आवाज़ लगाई?

क्या आपने ही मुझे आवाज़ लगाई?

क. जो सौदा हुआ है, उसे तुम भी निभाओ।

ख. तुम खुद देख लो।

ग. अरे, क्या गधे के बाल कटवाएगा ?

घ. यह क्या कहता है ?

प्रश्न 2 'तुमने गधे पर रखी सारी लकड़ियाँ उतारकर रख दीं न?' इस वाक्य को समझो और इसका अर्थ लिखो।

प्रश्न 3 इन शब्दों के हिन्दी में समान अर्थवाले शब्द लिखो :

मंजूर, हाजिर, खुद, गरीब, हुजूर, खिलाफ।

प्रश्न 4 क. 'हाथ कंगन को आरसी क्या' यह एक कहावत है। इसका अर्थ है, जो चीज हमारे सामने है उसे बताने के लिए प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं। यह कहावत इस पाठ में प्रयोग की गई है। इसका उचित प्रसंग में अपने वाक्य में प्रयोग करो।

ख. अपनी बोली की कोई एक कहावत अर्थ सहित लिखो और उसे उचित प्रसंग में अपने वाक्य में प्रयोग करो।

प्रश्न 5 इन वाक्यों को उनके सम्मुख दर्शाए वाक्यों में बदलो।

क. उतारो लकड़ी। (आदरसूचक वाक्य में)

ख. अब तुम दाम चुकाओ। (आदरसूचक वाक्य में)

ग. अली दुकान से उतरकर गधे के पास जाता है। (भूतकाल में)

घ. तुमने गधे पर रखी सारी लकड़ियाँ उतारकर रख दीं । (प्रश्नवाचक में)

प्रश्न 6 इन शब्दों में से सही शब्द चुनकर लिखो :

लकडियाँ/लकड़ियाँ, विद्याथीयों/विद्यार्थियों, दृश्य/द्रश्य, ढेर/ढ़ेर, व्दार/द्वार, थोडी/थोड़ी, पाँच/पांच;

रचना

- तुम्हारे आसपास के लोग अपने झगड़े सुलझाने कहाँ जाते है? उसके बारे में लिखो।

गतिविधि

- अपने शिक्षक के मार्गदर्शन में इस एकांकी का मंचन करो।
- इस एकांकी का शीर्षक है 'इंसाफ'। क्या इसका कोई और भी शीर्षक हो सकता है ? सोचो और लिखो।

57SLEH

पुनरावृत्ति के प्रश्न

नीचे दी गई कहानी को पढ़ो –

एक आदमी किसी गाँव में पहली बार आया था। गाँव में तीन रास्ते थे। उसने एक लड़के से पूछा, "क्यों भाई, वकील साहब के घर को कौन–सा रास्ता जाता है?"

लड़के को मजाक सूझा उसने कहा, "इन तीनों में से कोई भी रास्ता नहीं जाता।"

"तो कौन–सा रास्ता जाता है?"

"कोई नहीं।"

"क्या कहते हो बेटे? वकील साहब इसी गाँव में रहते हैं न?"

"हाँ, रहते तो इसी गाँव में हैं।"

"तो कोई रास्ता तो उनके घर तक जाता होगा?"

आदमी ने हैरान होकर पूछा।

32KJ5H

लड़के ने उत्तर दिया, "यह सड़क और रास्ते यहीं रहते हैं। ये कहीं नहीं जाते। ये बेचारे तो बोल ही नहीं सकते, लेकिन मैं आपको वह रास्ता बता सकता हूँ, जिस पर चलकर आप वकील साहब के घर तक पहुँच जाएँगे।

लड़के की बात सुनकर आदमी भी हँस दिया और बोला, "तुमने सही कहा बेटा, अगली बार मैं सोच–समझकर सवाल पूछूँगा।"

प्रश्न 1. नीचे दिए गए प्रश्नों के सही उत्तरों पर घेरा बनाओ –

1. आदमी को कहाँ जाना था?

क. लड़के के घर में

ख. वकील के घर में

ग. गाँव में

घ. रास्ते में

2. लड़के की बात सुनकर आदमी क्यों हँस दिया?

क. वह उलझ गया था।

ख. उसे अपने सवाल की कमी समझ में आ गई थी।

ग. उसे सही रास्ते का पता चल गया था।

घ. उसे लगा लड़का चुटकुला सुना रहा है।

3. दिए गए अनुच्छेद में प्रयुक्त इनमें से कौन–सा शब्द संज्ञा नहीं है?

क. वकील

ख. आदमी

ग. गाँव

घ. वह

4. आदमी ने हैरान होकर क्या पूछा?

क. वकील साहब के घर को कौन–सा रास्ता जाता है?

ख. वकील साहब इसी गाँव में रहते हैं न?

ग. कोई रास्ता तो उनके घर तक जाता होगा?

घ. तो कौन–सा रास्ता जाता है?

5. इस कहानी को पढ़कर पता चलता है कि –

क. वह आदमी मजाकिया था

ख. वह आदमी उस गाँव से अपरिचित था

ग. वह आदमी मूर्ख था

घ. वह आदमी लड़के को मूर्ख समझ रहा था

प्रश्न 2. चित्र को देखकर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर पर घेरा लगाओ –

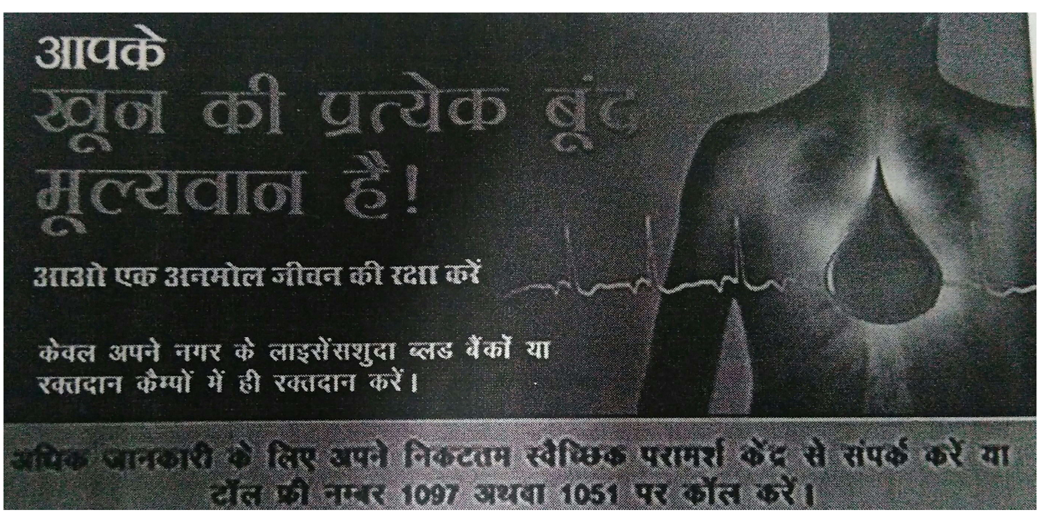

1. इस पंक्ति को पूरा कीजिए: आओ एक अनमोनल जीवन का ....।

2. इस विज्ञापन का उद्देश्य क्या है?

क. खून का महत्व बताना

ख. रक्तदान के लिए प्रेरित करना

ग. जीवन की रक्षा करना

घ. बैंकों का प्रचार करना

3. "आपके खून की प्रत्येक बूँद मूल्यवाद है" इस वाक्य में 'मूल्यवान' की जगह कौन–सा शब्द आ सकता है?

क. खून का महत्व बताना

ख. रक्तदान के लिए प्रेरित करना

ग. जीवन की रक्षा करना

घ. बैंकों का प्रचार करना

4. टॉल फ्री नंबर 1097 अथवा 1051 पर कॉल करने के लिए क्यों कहा जाता है?

क. रक्तदान के बारे में जानकारी ले सकेंगे

ख. फ्री में फोन कर सकेंगे।

ग. रक्तदान कर सकेंगे

घ. मुसीबत से अपने जीवन की रक्षा कर सकेंगे

5. रक्तदान का अर्थ क्या है?

क. खून माँगना

ख. खून देना

ग. रूपय का माँगना

घ. रूपयों का देना

प्रश्न 3. तुम कभी पिकनिक पर जरूर गए होगे। उसके बारे में लिखो।

प्रश्न 4. दीपावली की रात्रि में लागे दिये जलाकर अपने घरों में उजाला करते हैं। दियों के अलावा लोग और किन–किन चीजों से अपने घरों में रोशनी करते हैं?

प्रश्न 5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

क. किसी पक्षी के लिए पिंजरे का जीवन दुखदाई क्यों होता है ?

ख. वह कौन–सा थाल है जो मोतियों से भरा है?

ग. कवि ने किताबों के संसार को बड़ा क्यों बताया है?

घ. टेलीफोन के संबंध में अँग्रेजों ने जगदीश चंद्र बोस के प्रति क्या छल किया?

ङ. अली और हसन में झगड़ा किस बात पर उठा?

प्रश्न 6. नीचे लिखी पंक्तियों के अर्थ लिखो–

क. चार दिनों में ही वह मैना
अंदर तड़प रही थी।
उड़ने को अकाश में ऊँचे
तबीयत फड़क रही थी।

ख. किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं
किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं।

प्रश्न 7. कविता की उन पंक्तियों को लिखो–

क. जिनमें मैना ने अपनी जान के लिए खतरे बताए हैं।

ख. जिनमें किताबों के संसार को बड़ा और किताबों को ज्ञान का भंडार बताया गया है।

प्रश्न 8. तीन पुल्लिंग और तीन स्त्रीलिंग शब्द लिखो जिनके लिंग नहीं बदलते।

प्रश्न 9. नीचे लिखे शब्दों को खड़ी बोली हिन्दी रूप में लिखो।

पूत, ठाँव, थोरी, बसती।

प्रश्न 10. सही जोड़ियाँ मिलाओ–

किताबें	–	दुख
कोन्हों	–	ठौर
जमाना	–	कथा
ओखरे	–	क्षण
गम	–	पुस्तकें
ठउर	–	कोई
किस्सा	–	युग
छिन	–	उसका

प्रश्न 11. निम्नलिखित क्रियाओं से भाववाचक संज्ञाएँ बनाओ–

हँसना, बोलना, चलना, कूदना, लिखना।

प्रश्न 12. नीचे दिए गए मुहावरों के अर्थ लिखो और वाक्यों में प्रयोग करो–

क. बाज आना।

ख. हैरान कर देना।

ग. सुन्न पड़ जाना।

घ. भनक लग जाना।

प्रश्न 13. नीचे लिखे वाक्यों को उनके सम्मुख दर्शाए वाक्यों में बदलो–

क. उतारो लकड़ी। (आदरसूचक वाक्य में)

ख. दुकान से उतरकर गधे के पास जाता है। (भूतकाल में)

ग. उसने काठी उतार ली। (प्रश्नवाचक वाक्य में)

घ. अली, हसन को लकड़ी से मारता है। (भविष्यत् काल में)

प्रश्न 14. अपने घर को साफ–सुथरा रखने के लिए तुम क्या–क्या करते/करती हो? दस वाक्यों में लिखो।

वासराः

रविवासरः — रविवार

32UF75

सोमवासरः — सोमवार

मङ्गलवासरः (भौमवासरः) — मङ्गलवार

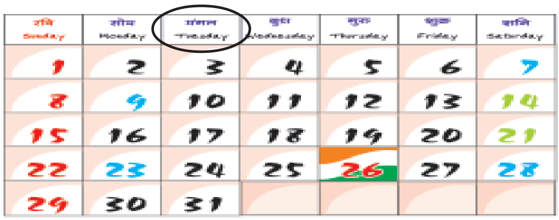

बुधवासरः — बुधवार

गुरुवासरः (बृहस्पतिवासरः) — गुरूवार

शुक्रवासरः (भार्गववारः) — शुक्रवार

शनिवासरः (शनैश्चरवारः) — शनिवार

'kjhjL; v³xkfu

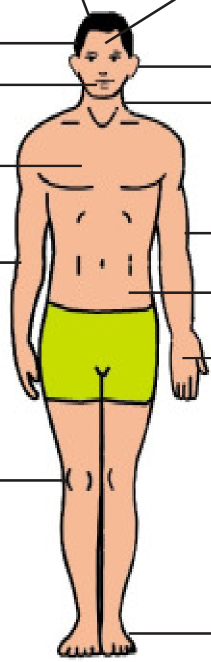

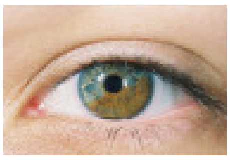

ukfldk & ukd

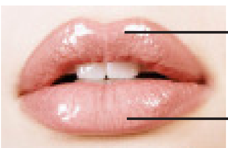

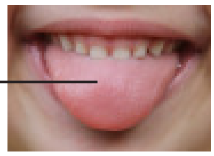

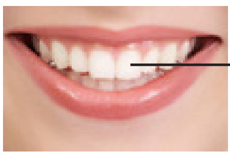

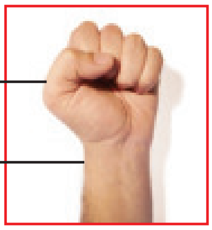

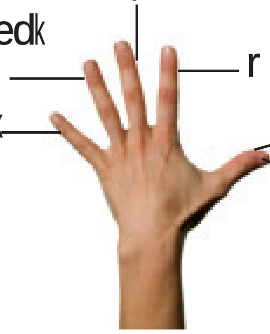

पशवः

संस्कृत		हिंदी	चित्र
धेनुः (गौः)	–	गाय	
गजः (हस्ती)	–	हाथी	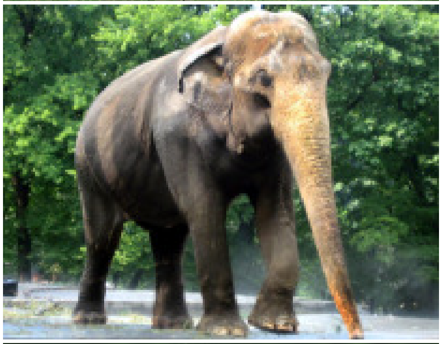
वानरः (कपिः)	–	बन्दर	
मार्जारः (बिडालः)	–	बिलाव	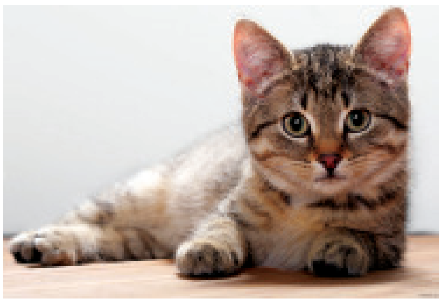
शुनकः (कुक्कुरः)	–	कुत्ता	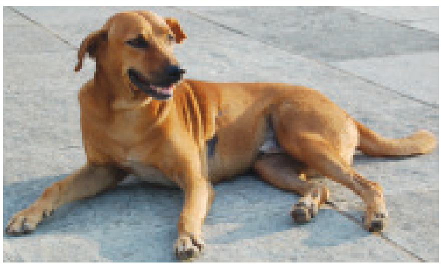

संस्कृत		हिंदी	चित्र
अश्वः (घोटकः)	–	घोड़ा	
अजा (बर्करी)	–	बकरी	
सिंहः	–	सिंह	
गर्दभः	–	गधा	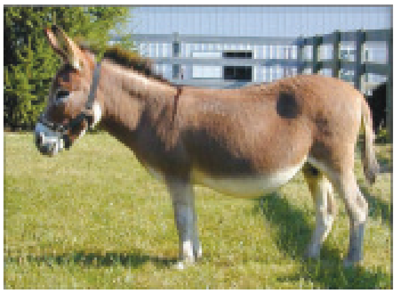
उष्ट्रः	–	ऊँट	

संस्कृत		हिंदी	चित्र
व्याघ्रः	–	बाघ	
मूषकः	–	चूहा	
भल्लूकः	–	भालू	
महिषः	–	भैंसा	
शृगालः (क्रोष्ठा)	–	सियार	

संस्कृत		हिंदी	चित्र
हरिणः	–	हिरण	
वृषभः	–	बैल	
शशः (शशकः)	–	खरगोश	
नकुलः	–	नेवला	
कूर्मः	–	कछुआ	

गृहवस्तूनां नामानि

संस्कृत		हिंदी	चित्र
गृहम्	–	घर	
द्वारम्	–	द्वार	
वातायनम् (गवाक्षः)	–	खिड़की	
व्यजनम्	–	पंखा	
आसन्दः	–	कुर्सी	

33H3C3

संस्कृत		हिंदी	चित्र
सुखासन्दः	–	सोफा	
कटः	–	चटाई	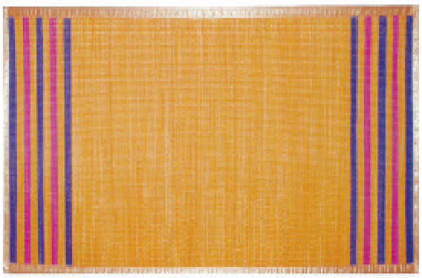
उत्पीठिका	–	टेबल	
साटिका	–	साड़ी	
करवस्त्रम्	–	रूमाल	

संस्कृत		हिंदी	चित्र
पादकोशः	–	मोजा	
पादत्राणम्	–	चप्पल	
धौतवस्त्रम्	–	धोती	
पर्यङ्कः	–	पलङ्ग	
कर्तरी	–	कैंची	

संस्कृत		हिंदी	चित्र
विद्युद्दीपः	–	बिजली का बल्ब	
स्यूतः	–	थैला	
घटीयन्त्रम्	–	घड़ी	
पुस्तकम्	–	पुस्तक	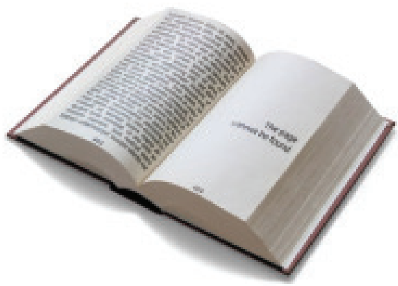
लेखनी (कलमः)	–	कलम	

समयाः

संस्कृत		हिंदी	चित्र
एकवादनम्	–	एक बजे	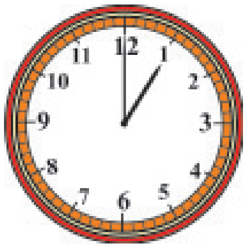
द्विवादनम्	–	दो बजे	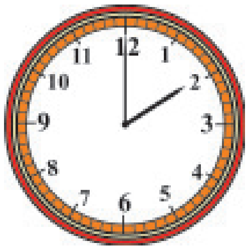
त्रिवादनम्	–	तीन बजे	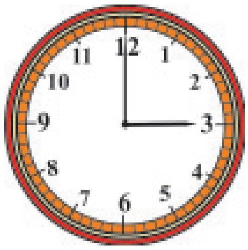
चतुर्वादनम्	–	चार बजे	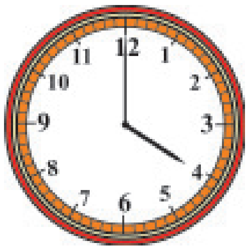
पञ्चवादनम्	–	पांच बजे	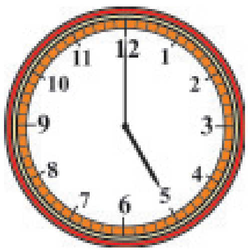
षड्वादनम्	–	छः बजे	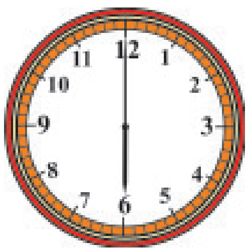

33VYDQ

संस्कृत		हिंदी	चित्र
सप्तवादनम्	–	सात बजे	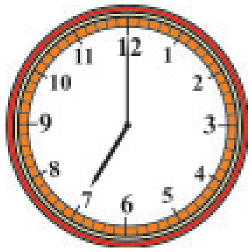
अष्टवादनम्	–	आठ बजे	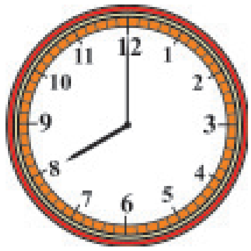
नववादनम्	–	नौ बजे	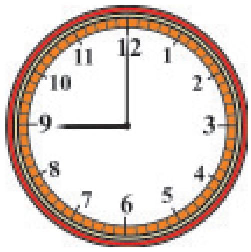
दशवादनम्	–	दस बजे	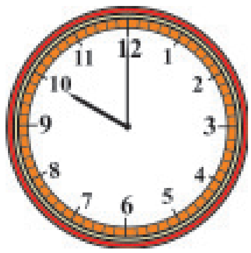
एकादशवादनम्	–	ग्यारह बजे	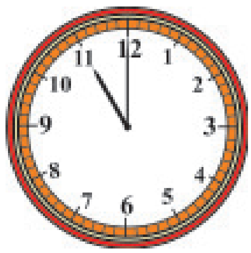

संस्कृत		हिंदी	चित्र
द्वादशवादनम्	–	बारह बजे	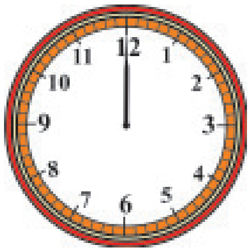
सार्धसप्तवादनम्	–	साढ़े सात बजे (7.30)	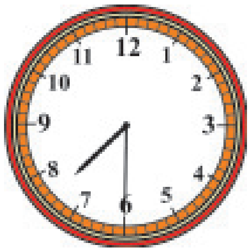
सपादपञ्चवादनम्	–	सवा पाँच बजे (5.15)	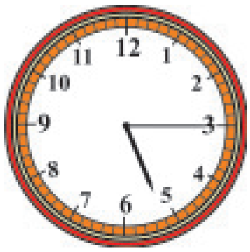
पादोननववादनम्	–	पौने नौ बजे (8.45)	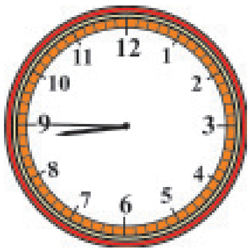

विशेषः–

1) पाद का अर्थ 1/4 भाग होता है
2) स = सहित और 'उन' का अर्थ होता है कम।
3) पांच बजे में सपाद अर्थात 1/4 भाग सहित/अधिक है।
4) नव बजे में उन अर्थात कम, पादोन में 1/4 भाग कम है।